वर्ष: 6 अंक: 3 मार्च, 2026 मूल्य: 60 रु. पृष्ठ : 44

राजस्थान टुडे

RNI No. RAJHIN/2020/11458

भारत की 'सुपरब्रेन' छलांग

6

'माई बॉडी माई चॉइस'

11

ठहाकों की ओवर डोज़

31

रंगों का वैश्विक स्पर्श

34

CELEBRATING 42 YEARS OF TRUST — THE LIQUID GOLD

ISO 22000 2018

स्वाद वो जो बना दे बात

मनभाती महक, लाजवाब स्वाद, भरपूर पौष्टिकता

सोना सिक्का®©

BEST CHOICE REFINED GROUNDNUT OIL

शुद्धता से समझौता नहीं

SONA SIKKA

महंगा है पर खरा है!

स्वाद और सेहत से भरा है

42 वर्षों से शुद्धता के हर मापदंड पर खरा उतरा है, इसलिए बेस्ट है सोना सिक्का

सोना सिक्का रखता है ख्याल आपकी सेहत का आपके परिवार की खुशियों का इसलिए सोना सिक्का तेल के निर्माण में गुणवत्ता शुद्धता और सेहत से कोई समझौता नहीं किया जाता है।

परिवार की सेहत के लिए सोना सिक्का में व्यंजन बनायें, खुद खायें, सबकों खिलायें....!

मिलते-जुलते नाम और अशुद्ध ब्रांड से सावधान. आपके स्वास्थ्य से बढ़कर कुछ नहीं

SHAKUN

Shyam and Shyam Oils Pvt. Ltd. Jodhpur

Plot No. B 5,6,7 (A), 1st Phase, Basni Industrial Area, Jodhpur, (Raj.)

डिस्ट्रीब्यूटर बनने एवं डीलरशिप हेतु टोल फ्री नं. पर सम्पर्क करें: 1800 313 3292

sonasikka.com | info@sonasikka.com | sonasikka

0291-2512333, 2512338

Available on : Jio | amazon | Flipkart

राजस्थान टुडे

आपकी पत्रिका, आपकी बात
www.rajasthantoday.online

RNI No. RAJHIN/2020/11458
वर्ष 6, अंक 3, मार्च 2026
(प्रत्येक माह 15 तारीख को प्रकाशित)

प्रधान सम्पादक - दिनेश रामावत
प्रबंध सम्पादक - राकेश गांधी
राजनीतिक सम्पादक - सुरेश व्यास
कार्यकारी सम्पादक - अजय अस्थाना
सह सम्पादक - बलवंत राज मेहता

विशेष प्रतिनिधि
नई दिल्ली - राधा रमण
जयपुर - मणिमाला शर्मा, विवेक श्रीवास्तव
अजमेर - रमेश शर्मा
उदयपुर - मधुलिका सिंह
कोटा - अरविन्द गुप्ता
पाली - चैनराज भाटी
सिरोही - गणपत सिंह
जालोर - तरुण गहलोत
बाड़मेर - धर्मसिंह भाटी

रेखाचित्र- राजेंद्र यादव

विज्ञापन प्रतिनिधि
जोधपुर - प्रवीण गिरी - 99280 26609
कोटा - यतीन्द्र जैन - 94140 76997

संपादकीय कार्यालय
बी-4, फोर्थ फ्लोर, एम.आर. हाईट्स महावीर कॉलोनी, भास्कर सर्किल, रातानाड़ा, जोधपुर - 342 011
व्हाट्सएप नंबर - 81078 00000
ई-मेल - rajasthantoday@gmail.com

सभी विवादों का निपटारा जोधपुर की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में किया जाएगा।

राजस्थान टुडे में प्रकाशित आलेख लेखकों की राय है। इसे राजस्थान टुडे की राय नहीं समझा जाए। राजस्थान टुडे के मुद्रक, प्रकाशक और प्रधान सम्पादक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। हमारी भावना किसी वर्ग या व्यक्ति को आहत करना नहीं है। विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का उत्तरदायित्व राजस्थान टुडे का नहीं होगा।

मारवाड़ मीडिया प्लस के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक पूनम अस्थाना द्वारा बी-4, फोर्थ फ्लोर, महावीर कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर-342 011 से प्रकाशित और डी.बी. कॉर्प लिमिटेड, 01 पार्श्वनाथ इंडस्ट्रीयल एरिया, रिलायंस वेयर हाउस के पास, मोगरा कलां, जोधपुर-342 802 में मुद्रित । संपादक : अजय अस्थाना* (*पी आर पी एक्ट के तहत उत्तरदायी)

अंदर विशेष

4 अपनी बात
बहस से आगे बढ़ता संघर्ष

6 भारत की 'सुपरब्रेन' छलांग

8 सत्ता परिवर्तन के बाद बांग्लादेश की चुनौतियां

10 'जो शब्द असहज होते हैं, वही याद रहते हैं'

11 'माई बॉडी माई चॉइस' का आधार नैतिक मूल्य हों

17 ओरण योद्धा सुमेरसिंह सांवता

18 जर्सी विदेशी, जड़ें 'देसी'

21 ना उम्मीद नजर आती, ना इंतजार छोड़ा जाता

नियमित कालम

14 अभिव्यक्ति
26 बात बेलगाम
27 बोल हरि बोल
42 ग्रहों की चाल

होली विशेष

22 होली आई रे भजनाई...रंग बरसे....!

24 'राजनीति, होली और हुड़दंग

29 ठहाकों की ओवर डोज़

31 जब भाषण लिखने वाले को पड़े कोड़े

32 रंगों का वैश्विक स्पर्श

34 राजसी होली का अनुशासित उल्लास

36 सात समंदर पार खिलता फागुन

38 परंपरा, पंखुड़ियां और पहचान

40 सिर्फ नाम का सवाल है बाबा!!

41 'आह! फागुन.. वाह! फागुन'

अपनी बात

बहस से आगे बढ़ता संघर्ष

दिनेश रामावत

प्रधान सम्पादक

हालिया संसदीय घटनाक्रम यह संकेत देता है कि भारतीय संसद में संघर्ष अब केवल नीतिगत मतभेद तक सीमित नहीं रहा। विपक्ष द्वारा अध्यक्ष की निष्पक्षता पर प्रश्न और सत्ता पक्ष द्वारा विपक्षी नेता की सदस्यता समाप्ति की मांग—दोनों मिलकर लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा को वैधता के टकराव में बदलते दिखते हैं, जिससे संसदीय संवाद की परंपरा पर दबाव बढ़ता है।

लोकसभा के हालिया बजट सत्र की घटनाएं भारतीय संसदीय लोकतंत्र की वर्तमान मनःस्थिति को समझने के लिए महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करती हैं। एक ही घटनाक्रम में बहस की प्रकृति, संसदीय आचरण, पीठासीन संस्था की निष्पक्षता और विपक्षी नेतृत्व की वैधता—चारों स्तर विवाद के केंद्र में आ गए। यह केवल क्षणिक राजनीतिक तनाव नहीं, बल्कि ध्रुवीकृत संसदीय संस्कृति की ओर बढ़ते प्रवाह का संकेत है।

विवाद का प्रारंभ उस समय हुआ जब विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने पूर्व थल सेना प्रमुख के अप्रकाशित संस्मरण का संदर्भ देते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े प्रश्न उठाने का प्रयास किया। रक्षा मंत्री ने तत्काल आपत्ति दर्ज कराते हुए यह कहा कि अप्रकाशित सामग्री का हवाला संसदीय रिकॉर्ड का हिस्सा नहीं बन सकता। संसदीय प्रक्रिया के दृष्टिकोण से यह आपत्ति असामान्य नहीं थी; स्रोत की प्रमाणिकता और वैधता पर प्रश्न उठना संसदीय परंपरा का हिस्सा रहा है।

किन्तु इसके बाद घटनाक्रम ने जिस दिशा में रूप लिया, वह अधिक गंभीर था। कांग्रेस सांसदों का प्रधानमंत्री की सीट तक जाना और सदन का वातावरण इतना तनावपूर्ण हो जाना कि प्रधानमंत्री लोकसभा में अपना उत्तर न दे सकें, संसदीय कार्यवाही की मूल संरचना पर प्रभाव डालने वाला प्रसंग था। लोकतांत्रिक व्यवस्था में विपक्ष द्वारा कड़े विरोध की परंपरा रही है, परन्तु कार्यपालिका के प्रमुख को उत्तर देने से रोकना संस्थागत संवाद की निरंतरता पर प्रश्न खड़ा करता है।

यहाँ से विवाद का तीसरा आयाम सामने आया—कांग्रेस द्वारा लोकसभा अध्यक्ष को हटाने का प्रस्ताव। अध्यक्ष की निष्पक्षता पर प्रश्न उठाना संसदीय राजनीति में अभूतपूर्व नहीं है; विभिन्न कालखंडों में पीठासीन पदाधिकारियों पर पक्षपात के आरोप लगते रहे हैं। तथापि हटाने का प्रस्ताव एक औपचारिक राजनीतिक वक्तव्य भी होता है—कि सदन की प्रक्रिया पर विश्वास क्षीण हुआ है। यह स्थिति किसी भी संसदीय लोकतंत्र के लिए चिंताजनक मानी जाती है, क्योंकि अध्यक्ष की संस्था ही कार्यवाही की वैधता का आधार होती है।

इसी समय, सत्ता पक्ष की ओर से एक समानांतर प्रतिक्रिया भी सामने आई। सांसद निशिकांत दुबे ने राहुल गांधी की सदस्यता समाप्त करने और उन्हें चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित करने की मांग उठाई। यह मांग विधिक या प्रक्रियात्मक तर्कों के आधार पर प्रस्तुत की गई हो सकती है, पर इसका राजनीतिक संकेत स्पष्ट है—विपक्षी नेतृत्व की वैधता पर प्रश्न।

इन दोनों प्रस्तावों—अध्यक्ष को हटाने की मांग और विपक्षी नेता की सदस्यता समाप्त करने की मांग—को साथ रखकर देखने पर संसदीय राजनीति के वर्तमान स्वरूप की एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का केंद्र अब केवल नीतिगत मतभेद नहीं रहा; वह संस्थागत और व्यक्तिगत वैधता के प्रश्न तक विस्तृत हो गया है।

भारतीय संसद के इतिहास में तीखे टकरावों की कमी नहीं रही है—चाहे वह बोफोर्स विवाद का दौर हो, 2G या कॉमनवेल्थ पर ठप कार्यवाही, या आंध्र

प्रदेश पुनर्गठन विधेयक के समय का अव्यवस्थित वातावरण। परंतु उन प्रसंगों में भी संघर्ष मुख्यतः नीति या राजनीतिक निर्णयों पर केंद्रित था। वर्तमान परिदृश्य में अंतर यह है कि बहस, आचरण, संस्था और व्यक्ति—चारों स्तर एक साथ विवादग्रस्त हो रहे हैं।

यह प्रवृत्ति लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा की प्रकृति में परिवर्तन का संकेत देती है। जब विपक्ष अध्यक्ष की निष्पक्षता पर औपचारिक प्रश्न उठाता है और सत्ता पक्ष विपक्षी नेता की संसदीय वैधता को चुनौती देता है, तब राजनीतिक अविश्वास संस्थागत संतुलन तक पहुँच जाता है। ऐसी स्थिति में संसदीय संवाद का आधार संकुचित होता है, क्योंकि वैधता के प्रश्न स्वभावतः अंतिम और कठोर होते हैं।

फिर भी यह ध्यान रखना आवश्यक है कि भारतीय लोकतंत्र की संस्थाएँ ऐतिहासिक रूप से ऐसे तनावों से गुजरती रही हैं और अंततः संतुलन पुनर्स्थापित करने में सक्षम रही हैं। अध्यक्षों पर आरोप लगे हैं, नेताओं की सदस्यता पर विवाद हुए हैं, कार्यवाही बाधित हुई है—पर संस्थागत ढांचा कायम रहा है। वर्तमान घटनाएं भी इसी व्यापक लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा मानी जा सकती हैं, बशर्ते संवाद की संभावना पूर्णतः समाप्त न हो।

इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि सभी विवादों का मंच अभी भी संसद ही है। आरोप, प्रत्यारोप, प्रस्ताव और प्रतिप्रस्ताव—सभी संसदीय ढांचे के भीतर ही व्यक्त हो रहे हैं। यह स्वयं लोकतांत्रिक संस्थागत निरंतरता का संकेत है।

फिर भी, बजट सत्र की घटनाएं यह स्पष्ट करती हैं कि संसदीय संस्कृति के समक्ष चुनौती केवल आचरण की नहीं, बल्कि विश्वास की है। यदि अध्यक्ष की संस्था और विपक्षी नेतृत्व दोनों एक साथ वैधता विवाद में घिरें, तो लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा कठोर रूप ग्रहण करती है।

भारतीय संसदीय लोकतंत्र की स्थिरता अंततः इसी सिद्धांत पर निर्भर रही है कि प्रतिद्वंद्वी को वैध माना जाए। मतभेद तीखे हो सकते हैं, पर संस्थागत भूमिकाओं की स्वीकृति साझा बनी रहती है। वर्तमान ध्रुवीकरण का वास्तविक परीक्षण यही है—क्या यह मूल सहमति बनी रहती है या क्षीण होती है।

बजट सत्र का घटनाक्रम इस प्रश्न को पुनः सामने लाता है: क्या संसदीय राजनीति वैचारिक बहस से आगे बढ़कर वैधता के संघर्ष में प्रवेश कर रही है, या यह भी लोकतांत्रिक उतार-चढ़ाव का एक चरण है?

इसका उत्तर अभी निर्णायक नहीं है। पर इतना स्पष्ट है कि संसदीय संवाद और संस्थागत विश्वास की पुनर्स्थापना ही इस ध्रुवीकरण का दीर्घकालिक समाधान हो सकता है।

विकसित राजस्थान की दिशा या अधूरी तस्वीर?

राजस्थान का 2026–27 बजट अवसंरचना, निवेश और राजकोषीय अनुशासन पर केंद्रित होकर राज्य को 'विकसित राजस्थान-2047' की दिशा में ले जाने का दावा करता है, किंतु बढ़ते ऋण, महंगाई, रोजगार और प्रमुख परियोजनाओं की अनदेखी जैसे प्रश्न इसकी विश्वसनीयता को चुनौती देते हैं।

राजस्थान की उपमुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री दिया कुमारी द्वारा प्रस्तुत 6.11 लाख करोड़ का बजट राज्य की अर्थव्यवस्था को 21.52 लाख करोड़ तक पहुंचाने और प्रति व्यक्ति आय को 2.02 लाख तक बढ़ाने का अनुमान पेश करता है। यह परिकल्पना राजस्थान को तेज आर्थिक विस्तार के पथ पर दिखाती है। सरकार ने संरचनात्मक सुधार, राजकोषीय सुदृढ़ीकरण और निवेश-उन्मुख नीतियों को इसका आधार बताया है।

राजकोषीय संकेतकों—3.69% का राजकोषीय घाटा और नियंत्रित राजस्व घाटा—को भी वित्तीय अनुशासन के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। रिजर्व बैंक के सिंकिंग फंड और गारंटी रिडेम्पशन फंड में निवेश से यह संदेश देने की कोशिश है कि सरकार दीर्घकालिक वित्तीय जोखिमों को समझते हुए प्रबंधन कर रही है।

अवसंरचना और निवेश पर स्पष्ट फोकसः बजट की प्रमुख दिशा अवसंरचना विस्तार, नवीकरणीय ऊर्जा, औद्योगिक विकास और निवेश प्रोत्साहन पर है। यह दृष्टिकोण राजस्थान की भौगोलिक-आर्थिक वास्तविकताओं के अनुरूप है—विशाल भूभाग, जल संकट और औद्योगिक पिछड़ापन। यदि सड़क, जल, ऊर्जा और लॉजिस्टिक्स पर निवेश प्रभावी ढंग से लागू होता है, तो यह निजी निवेश और रोजगार दोनों को गति दे सकता है।

डिजिटल शासन, सामाजिक सुरक्षा और युवा कल्याण के लिए प्रावधान भी प्रशासनिक आधुनिकीकरण का संकेत देते हैं। कर रियायतें, जैसे ऋण दस्तावेज शुल्क में कटौती या वाहन कर में छूट व्यापारिक गतिविधि और उपभोग को प्रोत्साहित करने के प्रयास के रूप में देखी जा सकती हैं। **समावेशी विकास का वादाः** सरकार ने गरीब, किसान और युवा को केंद्र में रखने की बात कही है। यह राजनीतिक और सामाजिक रूप से अनिवार्य भी है, क्योंकि राजस्थान की बड़ी आबादी ग्रामीण और कृषि-निर्भर है। यदि जल, कृषि और सामाजिक सुरक्षा योजनाएं वास्तविक लाभार्थियों तक पहुंचती हैं, तो बजट का समावेशी चरित्र मजबूत हो सकता है।

किन्तु समावेशन केवल घोषणाओं से नहीं, परिणामों से सिद्ध होता है, यही कसौटी आगामी वर्षों में इस बजट के प्रभाव को तय करेगी। **विपक्ष के सवाल और वास्तविक चुनौतियांः** कांग्रेस ने बजट में पचपदरा रिफाइनरी और पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना जैसे महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स का उल्लेख न होने को प्रमुख कमी बताया है। ये दोनों परियोजनाएं क्षेत्रीय विकास और जल-ऊर्जा सुरक्षा से जुड़ी हैं; इन पर स्पष्ट रोडमैप का अभाव चिंता पैदा करता है। साथ ही बढ़ता सार्वजनिक ऋण, महंगाई, बेरोजगारी और महिलाओं की सुरक्षा जैसे मुद्दों पर बजट की सीमित चर्चा यह संकेत देती है कि अनुशासन और निवेश-उन्मुख विकास के बीच सामाजिक-आर्थिक संकटों का संतुलन अभी अधूरा है। आर्थिक आकार बढ़ना और जीवन-स्तर सुधरना हमेशा समानांतर नहीं चलते, यह अंतर नीति की असली परीक्षा है।

'विकसित राजस्थान-2047' की राहः मुख्यमंत्री द्वारा इसे 'विकसित राजस्थान-2047' की आधारशिला बताया गया है। दीर्घकालिक दृष्टि के रूप में यह सकारात्मक है, परंतु 2047 का लक्ष्य तभी सार्थक होगा जब वर्तमान में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और जल प्रबंधन जैसे बुनियादी क्षेत्रों में ठोस सुधार दिखें।

अमेरिका-ईरान संघर्ष और वैश्विक स्थिरता की परीक्षा

जब कूटनीति का स्थान अहंकार ले लेता है और संवाद की खिड़कियां बंद हो जाती हैं, तो इतिहास केवल मूकदर्शक बना रहता है। अमेरिका और ईरान के बीच का वर्तमान तनाव केवल दो देशों की सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विश्व अर्थव्यवस्था की नब्ज और मानवता के भविष्य पर सीधा प्रहार है।

वर्तमान वैश्विक राजनीति एक ऐसे चौराहे पर खड़ी है जहां से शांति और विनाश के रास्ते अलग होते हैं। अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ती सैन्य तल्खी ने संपूर्ण विश्व के समक्ष एक गंभीर संकट पैदा कर दिया है। अमेरिका द्वारा ईरान पर बढ़ते दबाव के पीछे दशकों पुराना अविश्वास और वर्चस्व की जंग है। कई विश्लेषक इसे अमेरिका के 'आहत स्वाभिमान' के रूप में देखते हैं, जहां वह एक क्षेत्रीय शक्ति को अपने सामने झुकने पर मजबूर करना चाहता है। अमेरिका का तर्क है कि ईरान का परमाणु कार्यक्रम वैश्विक खतरा है, जबकि वास्तविकता क्षेत्रीय सहयोगियों के अस्तित्व और तेल संपदा पर पकड़ बनाए रखने की भी है। 'अधिकतम दबाव' की यह नीति अक्सर विद्रोह और अधिक आक्रामकता को ही जन्म देती है।

ईरान की जिद और रूस की बिसात... ईरान स्वयं को एक प्राचीन सभ्यता और क्षेत्र की स्वाभाविक महाशक्ति मानता है। उसकी नजर में रक्षा तकनीक विकसित करना उसका संप्रभु अधिकार है। पड़ोसी देशों में सक्रिय ईरान समर्थित समूहों को वह अपनी 'रक्षा की पहली पंक्ति' कहता है, जबकि दुनिया इसे ईरान की 'अति' मानती है। जब किसी राष्ट्र को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग-थलग किया जाता है, तो उसकी प्रतिक्रिया और भी तीखी हो जाती है। इस बिसात पर रूस की भूमिका 'दुश्मन का दुश्मन दोस्त' वाली है।

अर्थव्यवस्था की नब्ज और तेल संकट... यदि सैन्य टकराव होता है, तो सबसे बड़ा प्रहार वैश्विक अर्थव्यवस्था पर होगा। विश्व का एक-तिहाई कच्चा तेल जिन समुद्री रास्तों से गुजरता है, ईरान उन्हें अवरुद्ध करने की क्षमता रखता है। ऐसा होने पर तेल की कीमतें रातों-रात आसमान छूने लगेंगी। इसकी मार केवल ईंधन तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि परिवहन लागत बढ़ने से आम आदमी की थाली तक महंगाई पहुंच जाएगी। भारत जैसे विकासशील देशों के लिए यह स्थिति किसी आपदा से कम नहीं होगी।

साइबर युद्ध और भारत की निष्पक्षता... आज के युग में युद्ध केवल सीमाओं पर नहीं, बल्कि डिजिटल पटल पर भी लड़ा जाता है। ईरान जवाबी कार्रवाई में साइबर हमलों के जरिए बैंकिंग और संचार व्यवस्था को ठप कर सकता है। इस जटिल संकट में भारत का स्थान अत्यंत सम्मानजनक रहा है। भारत की विदेश नीति हमेशा से विस्तारवाद और अनुचित हस्तक्षेप के विरुद्ध रही है। भारत की निष्पक्षता उसकी नैतिक शक्ति है, जो शांति और न्यायपूर्ण समाधान की पक्षधर है। भारत का मानना है कि शक्ति का प्रदर्शन नहीं, बल्कि संवाद ही सही मार्ग है।

संवाद या सर्वनाश?... अब अमेरिका और ईरान का यह द्वंद्व मानवता के लिए बड़ी परीक्षा है। क्या हम 21वीं सदी में भी समस्याओं को सुलझाने के लिए आदिम युद्धों का सहारा लेंगे? अहंकार की लड़ाई में हमेशा विवेक की हार होती है। अमेरिका को अपनी महाशक्ति होने का उत्तरदायित्व समझना होगा और ईरान को भी यह स्वीकार करना होगा कि हठ उसे विनाश की ओर ले जाएगा। अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को अब मूकदर्शक बने रहने के बजाय प्रभावी भूमिका निभानी होगी। यह समय सैन्य ताकत दिखाने का नहीं, बल्कि कूटनीतिक सूझबूझ का है। यदि आज हम शांति के पक्ष में खड़े नहीं हुए, तो इतिहास हमें कभी माफ नहीं करेगा।

एआई इंडिया समिटः 25 प्रतिशत विकास दर का लक्ष्य और 'पैक्स सिलिका' का नया अध्याय

भारत की 'सुपरब्रेन' छलांग

राकेश गांधी, वरिष्ठ पत्रकार

दिल्ली में संपन्न एआई समिट ने भारत को वैश्विक सेमीकंडक्टर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आपूर्ति श्रृंखला के केंद्र में स्थापित करने की दिशा में एक निर्णायक संकेत दिया है। सुलभ एआई के औद्योगिक संकल्प से लेकर विशाल निवेश योजनाओं तक, यह परिदृश्य भारत की तकनीकी संप्रभुता, आर्थिक पुनर्संरचना और उससे जुड़ी जटिल चुनौतियों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

दिल्ली के प्रगति मैदान में 16 से 21 फरवरी तक आयोजित 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट' केवल तकनीकी प्रदर्शनी नहीं था बल्कि 21वीं सदी की बदलती वैश्विक शक्ति संरचना में भारत की दावेदारी का औपचारिक उद्घोष सिद्ध हुआ। यह आयोजन उस ऐतिहासिक संक्रमण का संकेत देता है जिसमें डिजिटल अर्थव्यवस्था, सेमीकंडक्टर क्षमता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता मिलकर राष्ट्रीय शक्ति के नए मानदंड निर्धारित कर रहे हैं। सम्मेलन का वातावरण केवल नवाचार का प्रदर्शन नहीं बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा की स्पष्ट स्वीकृति का प्रतीक था। समिट का सबसे चर्चित कूटनीतिक परिणाम भारत का 'पैक्स सिलिका' सहयोग ढांचे से जुड़ना माना गया। यह अवधारणा तकनीकी आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुरक्षित और विविधीकृत बनाने की उस वैश्विक प्रवृत्ति का हिस्सा है जो भू-राजनीतिक अस्थिरताओं के बाद उभरी है। सेमीकंडक्टर उत्पादन, डेटा अवसंरचना और उच्च क्षमता संगणना में भागीदारी भारत को केवल बाजार नहीं बल्कि निर्माता राष्ट्र के रूप में स्थापित कर सकती है। उद्घाटन सत्र में नरेंद्र मोदी के साथ फ्रांस, सर्बिया और ब्राजील के शीर्ष नेतृत्व की उपस्थिति ने यह संकेत दिया कि तकनीकी सहयोग अब पारंपरिक कूटनीति का केंद्रीय आयाम बन चुका है।

आर्थिक परिप्रेक्ष्य में सम्मेलन का प्रमुख विमर्श उत्पादकता वृद्धि और विकास संरचना के पुनर्गठन पर केंद्रित रहा। विशेषज्ञों का मत रहा कि एआई केवल दक्षता बढ़ाने वाला उपकरण नहीं, बल्कि संपूर्ण उत्पादन प्रणाली को पुनर्परिभाषित करने वाली शक्ति है। इसी संदर्भ में एथ्रोपिक के सीईओ डारियो अमोदेई ने साझा किया कि जहां विकसित देश एआई से 10% विकास देख सकते हैं, वहीं भारत में यह आंकड़ा 25% तक पहुंच सकता है। माइक्रोसॉफ्ट द्वारा भारत में क्लाउड और डेटा केंद्र अवसंरचना विस्तार के लिए 4.5 लाख करोड़ रुपए की दीर्घकालिक प्रस्तावित निवेश योजना को डिजिटल आधारभूत संरचना निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण संकेत माना गया। औद्योगिक सहयोग के स्तर पर ओपनएआई और भारतीय उद्योग समूहों के बीच उच्च क्षमता संगणना संसाधनों के विकास पर चर्चा ने अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र को नई दिशा देने की संभावना जगाई। सम्मेलन में यह भी स्पष्ट रूप से उभरा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब केवल सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र का विषय नहीं बल्कि ऊर्जा नीति, श्रम संरचना, शिक्षा व्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा बहुआयामी प्रश्न बन चुका है।

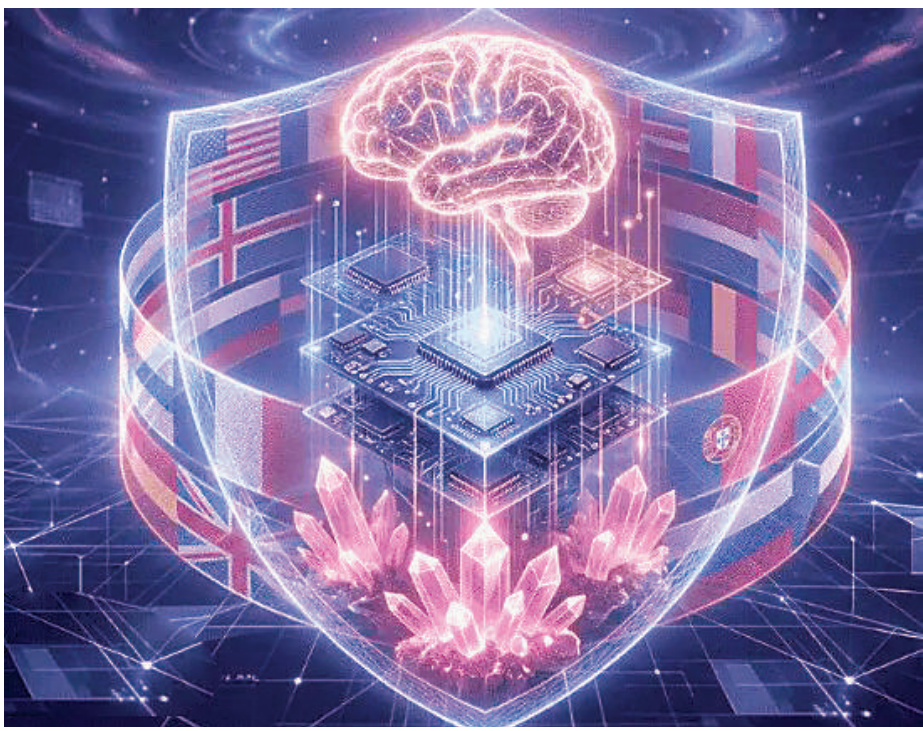

एआई को सस्ता व सुलभ बनाने का वादा

▪ रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमेन मुकेश अंबानी ने समिट में कहा कि डिजिटल कनेक्टिविटी की तरह एआई का भी व्यापक लोकतंत्रीकरण आवश्यक है। उनका तर्क था कि यदि तकनीक केवल चुनिंदा संस्थाओं तक सीमित रही तो नवाचार की सामाजिक क्षमता बाधित हो जाएगी। उन्होंने एआई को 'सुपरब्रेन' की संज्ञा दी जो मानवीय सीमाओं का विस्तार करेगी। गुगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने भारत की बहुभाषी संरचना और विशाल उपयोगकर्ता आधार को एआई अनुप्रयोगों के लिए अद्वितीय अवसर बताया। उनके अनुसार भारत का डिजिटल विस्तार केवल उपभोग का संकेत नहीं बल्कि नवाचार के लिए डेटा पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण का आधार है।

▪ टीसीएस के एन. चंद्रशेखरन ने औद्योगिक श्रृंखला के समग्र विकास पर जोर देते हुए कहा कि चिप निर्माण से लेकर डेटा प्रसंस्करण तक आत्मनिर्भर ढांचा ही तकनीकी संप्रभुता की वास्तविक नींव बनेगा। तकनीक के सामाजिक प्रभाव पर भारती एयरटेल के सुनील मित्तल ने चेताया कि तकनीकी केंद्रीकरण आर्थिक असमानता को गहरा कर सकता है यदि नीति ढांचा समावेशी न हो। अडोबी के शांतनु नारायण ने शिक्षा, सृजन और ज्ञान सुलभता के क्षेत्र में एआई की परिवर्तनकारी भूमिका को स्पष्ट करते हुए सामग्री प्रामाणिकता और भरोसेमंद डिजिटल पारिस्थितिकी की आवश्यकता बताई। उत्पादकता विस्तार के संदर्भ में वियानाई सिस्टम्स के विशाल सिक्का ने कहा कि एआई जटिल तकनीकी प्रक्रियाओं की समयावधि को नाटकीय रूप से घटा सकता है, जैसे 9 महीने का काम सिर्फ 14 दिनों में संभव हो गया है।

और महत्वपूर्ण होगी मानवीय समझ

तकनीकी प्रगति के बीच मानवीय विवेक की भूमिका और अधिक केंद्रीय होती दिखाई देती है। विप्रो के रिशद प्रेमजी ने कहा कि संगठनों को अपने पारंपरिक ढांचों में संरचनात्मक परिवर्तन करना होगा परंतु भरोसेमंद एआई के लिए मानवीय समझ और नैतिक निर्णय क्षमता अनिवार्य रहेगी। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि तकनीक और नैतिकता का संतुलन ही दीर्घकालिक विश्वास का आधार बनेगा। नीति स्तर पर भी बहुस्तरीय शासन संरचना की आवश्यकता पर बल दिया गया। डिजिटल भुगतान व्यवस्था के अंतरराष्ट्रीय विस्तार और राज्यों द्वारा वैश्विक नवाचार साझेदारी समझौते इस तथ्य को पुष्ट करते हैं कि तकनीकी प्रतिस्पर्धा अब केवल राष्ट्रीय नहीं बल्कि बहुस्तरीय शासन का विषय बन चुकी है। कर्नाटक सरकार द्वारा फ्रांस और पोलैंड के साथ किए गए समझौते इसका प्रमाण हैं।

एआई निर्मित सामग्री पर लेबल जरूरी

अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने डीपफेक और भ्रामक सूचना के बढ़ते खतरे पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए एआई निर्मित सामग्री की अनिवार्य पहचान व्यवस्था का सुझाव दिया। उन्होंने वॉटरमार्किंग और लेबलिंग पर जोर दिया, ताकि असली और नकली का भेद बना रहे। यह दृष्टिकोण तकनीकी प्रगति और सामाजिक विश्वास के बीच आवश्यक संतुलन की मांग को रेखांकित करता है। विशेषज्ञों का मत है कि पारदर्शिता के बिना डिजिटल अर्थव्यवस्था में विश्वास टिकाऊ नहीं हो सकता। इसके साथ ही मेटा के शोधकर्ताओं ने 1,600 से अधिक भाषाओं में अनुवाद की तकनीक पेश कर भाषाई बाधाओं को कम करने की दिशा में कदम बढ़ाया है।

एआई को मुट्ठीभर लोगों के हाथ न छोड़ें

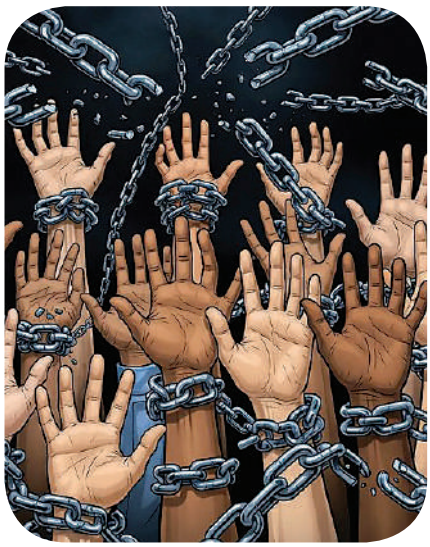

▪ सम्मेलन की उपलब्धियों के साथ गंभीर आशंकाएं भी सामने आईं। विशेषज्ञों ने चेताया कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता की शक्ति यदि सीमित संस्थाओं तक केंद्रित रही तो वैश्विक असमानता और बढ़ सकती है। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने एआई शासन के लोकतांत्रिक ढांचे की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि तकनीकी भविष्य मानवता की साझा संपत्ति होना चाहिए, इसे केवल अरबपतियों के हाथ में नहीं छोड़ा जा सकता। माइक्रोसॉफ्ट के ब्रैड स्मिथ ने इसे 'दोधारी तलवार' बताते हुए आर्थिक खाई बढ़ने की चेतावनी दी।

▪ डेटा गोपनीयता, श्रम संरचना में परिवर्तन, विदेशी तकनीकी निर्भरता और नियामकीय ढांचे की अपर्याप्तता जैसे प्रश्न अभी भी नीति विमर्श के केंद्र में हैं। स्वचालन से उत्पादकता बढ़ेगी परंतु रोजगार संरचना में संक्रमण की चुनौती भी उतनी ही वास्तविक है। तकनीकी प्रगति की गति जितनी तीव्र है, कानूनी और नैतिक ढांचे को भी उतनी ही गति से विकसित होना होगा। समग्र रूप से यह स्पष्ट है कि भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता युग में निर्णायक उपस्थिति दर्ज कराने की दिशा में अग्रसर है। परंतु तकनीकी शक्ति तभी स्थायी राष्ट्रीय प्रगति का आधार बनेगी जब नवाचार के साथ समावेशन, उत्तरदायित्व और नैतिक संतुलन भी सुनिश्चित किया जाए। यदि भारत इस संतुलन को साध लेता है तो 'सुपरब्रेन' का यह दौर वास्तव में देश के विकास इतिहास का नया अध्याय सिद्ध हो सकता है।

प्रदर्शन बना आलोचना का शिकार... सम्मेलन के समानांतर राजनीतिक प्रतिक्रियाएं भी चर्चा में रहीं। सम्मेलन के बाहर युवा कांग्रेस के कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए प्रदर्शन ने ध्यान खींचा, जिसकी आलोचना स्वयं उनके इंडी गठबंधन के सहयोगी दलों ने की। कई विश्लेषकों ने यह संकेत दिया कि तकनीकी क्षमता निर्माण जैसे प्रश्नों को दीर्घकालिक राष्ट्रीय हित के परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस दौर में तकनीकी नीति को अल्पकालिक राजनीतिक विमर्श से ऊपर उठाने की आवश्यकता बार-बार रेखांकित की गई। गठबंधन के साथियों का मानना था कि तकनीकी विकास के ऐसे वैश्विक मंच का विरोध करना तर्कसंगत नहीं है।

अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना प्रमुख परीक्षा

सत्ता परिवर्तन के बाद बांग्लादेश की चुनौतियां

बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन के साथ नई उम्मीदें जगी हैं पर चुनौतियां यथावत हैं। पूर्व सत्ता काल से जुड़े विवाद अंतरिम व्यवस्था की विरासत और क्षेत्रीय संबंधों की जटिलता के बीच स्थिर और समावेशी लोकतंत्र की दिशा ही इस परिवर्तन की वास्तविक कसौटी बनेगी।

राधा रमण वरिष्ठ पत्रकार

बांग्लादेश में जियाउर रहमान और खालिदा जिया के बेटे तारिक रहमान ने भले ही प्रधानमंत्री पद की शपथ लेकर सत्ता संभाल ली है, लेकिन देश की चुनौतियां बरकरार है। कभी अखंड भारत का हिस्सा रहा बांग्लादेश अपने अस्तित्व में आने के बाद से ही लगातार आतंरिक संघर्षों और तख्तापलट का शिकार होता रहा है। नतीजतन गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई, कर्ज और अस्थिरता बांग्लादेश की नियति बन गई है।

वर्ष 2024 के मध्य में बांग्लादेश में छात्रों ने सार्वजनिक नौकरियों में कथित भेदभावपूर्ण कोटा खत्म करने की मांग को लेकर व्यापक विरोध प्रदर्शन शुरू किए। इसके तहत ढाका और अन्य बड़े शहरों में विरोध प्रदर्शन उग्र होता गया। यहां तक की सरकारी संपत्तियों को भारी नुकसान पहुंचाया गया। प्रधानमंत्री और मंत्रियों के घरों में आगजनी की गई। जुलाई के अंत तक सुरक्षा बलों ने प्रधानमंत्री शेख हसीना के निर्देश पर हिंसक दमन अभियान शुरू कर दिया। संयुक्त राष्ट्र के जांचकर्ताओं का कहना है कि इस कार्रवाई में लगभग 1,400 नागरिक मारे गए। विद्रोह थमता नहीं देखकर तब की प्रधानमंत्री शेख हसीना को देश छोड़कर भागना पड़ा और 5 अगस्त 2024 को उन्हें भारत में शरण लेनी पड़ी। वह अब भी दिल्ली में ही सरकारी सुरक्षा में रह रही हैं। उधर, बांग्लादेश में नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस की अगुवाई में अंतरिम सरकार का गठन कर दिया गया। अंतरिम सरकार ने भारत सरकार से बार-बार हसीना के प्रत्यर्पण की मांग दोहराई, लेकिन भारत सरकार ने माकूल जवाब नहीं दिया।

इस बीच, पिछले साल बांग्लादेश की अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण-1 ने बांग्लादेश की हिंसा में मारे गए लोगों को लेकर शेख हसीना, उनके गृहमंत्री असदुज्जमां खान कमाल और पूर्व पुलिस महानिरीक्षक चौधरी अब्दुल्ला अल-मामून को मानवता के खिलाफ अपराध के लिए दोषी ठहराया। अदालत ने शेख हसीना और असदुज्जमां खान कमाल को फांसी की सजा सुनाई, जबकि सरकारी गवाह बन जाने के कारण चौधरी अब्दुल्ला अल-मामून को पांच वर्ष के कठोर कैद की सजा सुनाई गई। हालांकि शेख हसीना और असदुज्जमां खान दोनों फिलहाल बांग्लादेश से बाहर हैं।

35 साल बाद बना पुरुष प्रधानमंत्री

बांग्लादेश में अंतरिम सरकार की अगुवाई में इस साल 12 फरवरी को 13 वां संसदीय चुनाव कराया गया जिसमें बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) को कुल 300 सीटों में से 209 सीटों पर विजय मिली, जबकि उसके सहयोगी दल को तीन सीट मिली है। देश में जमात-ए-इस्लामी और उसके 10 सहयोगी दलों को 77, जबकि वर्ष 2024 में छात्र आंदोलन से निकली नेशनल सिटीजंस पार्टी (एनसीपी) को महज छह सीटों से संतोष करना पड़ा। प्रधानमंत्री तारिक रहमान दो सीटों से जीतने में कामयाब रहे। एक उम्मीदवार के चुनाव के दौरान निधन हो जाने के कारण वहां 299 सीटों पर मतदान हुआ था। तारिक रहमान ने बांग्लादेश के 11वें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली है। राष्ट्रपति मोहम्मद शहाबुद्दीन ने संसद भवन में तारिक को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई। तारिक रहमान पहली बार प्रधानमंत्री बने हैं। इसके साथ ही वहां पिछले डेढ़ साल से चल रही राजनीतिक अस्थिरता पर विराम लग गया है और अंतरिम सरकार का दौर खत्म हो गया है। बांग्लादेश में करीब 20 साल बाद बीएनपी की सरकार बनी। 2008 से 2024 तक वहां शेख हसीना की आवामी लीग सत्ता में थी। बांग्लादेश में 35 साल बाद कोई पुरुष प्रधानमंत्री बना है। 1988 में काजी जफर अहमद प्रधानमंत्री बने थे। इसके बाद 1991 से 2024 तक देश की राजनीति में शेख हसीना और खालिदा जिया का दबदबा रहा। ये दोनों ही प्रधानमंत्री बनती रहीं।

युवाओं की अपेक्षा पर खरा उतरना होगा... प्रधानमंत्री बनने के बाद अब तारिक रहमान के सामने देश को राजनीतिक स्थिरता देने, निवेशकों का भरोसा जीतने और युवाओं की अपेक्षा पर खरा उतरने की बड़ी चुनौती है। शपथ ग्रहण के बाद अपने पहले टेलीविजन संदेश में उन्होंने देश में कानून के शासन को मजबूत करने का संकल्प लिया और कहा कि उनकी सरकार देश को सभी धर्मों, मतों, दलों या जातियों के लोगों के लिए एक सुरक्षित स्थान के रूप में बदलने का प्रयास करेगी। अपने संबोधन में सरकार की प्राथमिकताओं को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य आत्मनिर्भर, सुरक्षित, मानवीय और लोकतांत्रिक बांग्लादेश बनाना है। एक बांग्लादेशी के रूप में हम सभी का इस देश पर बराबर अधिकार है। रहमान की यह टिप्पणी इसलिए अहम मानी जा रही है क्योंकि अगस्त 2024 में शेख हसीना के सत्ता से बेदखल होते ही बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों, खासकर हिन्दू समुदाय को लगातार निशाना बनाया गया। यह मोहम्मद यूनुस की अंतरिम सरकार में भी जारी रहा।

रहमान का क्या है 180 दिनों का मास्टर प्लान

रहमान के साथ 25 कैबिनेट मंत्रियों और 24 राज्य मंत्रियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई गई थी। मंत्रिमंडल के गठन और मंत्रियों के विभाग बांटने के बाद प्रधानमंत्री ने अपनी सरकार का 180 दिनों का मास्टर प्लान पेश किया है। तारिक रहमान ने हर मंत्रालय को निर्देश दिया है कि वह 180 दिनों के भीतर अपनी-अपनी कार्ययोजना तैयार करे और उसे लागू करे।

बांग्लादेश में हिन्दुओं पर लगातार अत्याचार

बांग्लादेश में अंतरिम सरकार के कार्यकाल के दौरान हिन्दुओं पर हमले के मामले लगातार बढ़ गए थे। बांग्लादेश हिन्दू बौद्ध ईसाई एकता परिषद ने 2025 से जनवरी 2026 तक अल्पसंख्यकों पर 522 हमले दर्ज किए। इनमें हत्या, बलात्कार और धार्मिक स्थलों पर तोड़फोड़ के मामले शामिल हैं। इस दौरान 116 लोगों की हत्या की गई, जिनमें अधिकांश हिन्दू थे। मानवाधिकार संगठन मानवाधिकार संघर्षकृति फाउंडेशन (एमएसएफ) ने जनवरी 26 में भीड़ द्वारा पीट-पीटकर हत्या की 21 और मारपीट की 28 घटनाएं होने का दावा किया है।

नई सरकार की विदेश नीति

बांग्लादेश की विदेश नीति क्या होगी, यह अभी तय किया जाना बाकी है। लेकिन, प्रधानमंत्री तारिक रहमान कहते हैं कि हमारी विदेश नीति में बांग्लादेश और बांग्लादेशियों का हित सबसे ऊपर है। अपने देश और देश के लोगों के हितों की रक्षा करके हम अपनी नीति तय करेंगे। जब उनसे पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को भारत से वापस लाने के बारे में पत्रकारों ने पूछा, तो रहमान ने कहा कि यह पूरी तरह कानूनी प्रक्रिया पर निर्भर करेगा। उन्होंने कहा कि सार्क संगठन की शुरुआत बांग्लादेश ने की थी, इसलिए वे इसे फिर से शुरू करना चाहते हैं।

भारत आने का न्योता, मोदी का संदेश

तारिक रहमान के शपथ समारोह में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने बांग्लादेशी प्रधानमंत्री से मिलकर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का बधाई संदेश और भारत आने का औपचारिक निमंत्रण पत्र देकर द्विपक्षीय संबंधों में निरंतरता का संदेश दिया। भारत में बांग्लादेश के उच्चायुक्त रियाज हामिदुल्लाह ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि दोनों नेताओं ने भरोसा जताया कि भारत और बांग्लादेश मिलकर आम लोगों के हित में काम करेंगे।

'जुलाई चार्टर' को लेकर टकराव

बांग्लादेश में चुनाव से पहले संविधान में बदलाव के लिए बने 'जुलाई चार्टर' को लेकर सियासी टकराव तेज हो गया है। चुनाव से पहले बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) ने इस प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किया था, लेकिन अब उसके नेता इसे मानने से इनकार कर रहे हैं। दरअसल, 'जुलाई चार्टर' में यह प्रावधान था कि नई संसद 180 दिनों के लिए संविधान सभा की तरह काम करेगी। 12 फरवरी को संसद चुनाव के साथ 'जुलाई चार्टर' पर जनमत संग्रह भी हुआ था। इसमें 62 प्रतिशत लोगों ने 'हां' में वोट दिया। सांसदों के शपथ ग्रहण के साथ-साथ 'जुलाई चार्टर' पर भी शपथ लेने की बात थी, लेकिन बीएनपी सांसदों ने ऐसा नहीं किया। 'जुलाई चार्टर' में यह भी प्रावधान था कि कोई व्यक्ति सिर्फ दो टर्म यानी कुल 10 साल तक ही बांग्लादेश का प्रधानमंत्री बन सकता है। उसमें राष्ट्रपति की शक्तियां बढ़ा दी गई थी, ताकि कोई प्रधानमंत्री तानाशाह नहीं बन सके। अब विपक्ष इसको बीएनपी की वादा खिलाफी बताकर मुद्दा बना रहा है।

उतार-चढ़ाव भरा रहा है तारिक का जीवन

तारिक रहमान बांग्लादेश के छठे राष्ट्रपति जियाउर रहमान और 9वीं प्रधानमंत्री खालिदा जिया की पहली संतान हैं। चुनावी हलफनामे के अनुसार तारिक का जन्म 20 नवंबर 1968 को ढाका में हुआ था। लगभग 20 वर्ष की उम्र में वह राजनीति में सक्रिय हो गए और बाद में बीएनपी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बनाए गए। 2004 में ढाका में अवामी लीग की रैली में बम विस्फोट के आरोप में तारिक समेत कई लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया गया। उस हमले में 24 लोगों की मौत और सौ से अधिक लोग घायल हुए थे। उस समय बांग्लादेश में तारिक की मां खालिदा जिया प्रधानमंत्री थीं। 2008 के चुनाव में अवामी लीग की वापसी के बाद तारिक इलाज कराने के बहाने लंदन चले गए। लंदन जाने से पहले उन्होंने अदालत में लिखकर दिया कि वह राजनीतिक मामलों से दूर रहेंगे। बाद में तारिक ने ब्रिटेन की नागरिकता ले ली। शेख हसीना के कार्यकाल के दौरान अदालतों ने उन पर ग्रेनेड हमला, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, मनी लांड्रिंग और अवैध तरीके से धन उपार्जन समेत कुल 84 मुकदमें दर्ज किए। कुछ मामलों में उन्हें दोषी भी ठहराया गया। उम्र कैद की सजा भी हुई। हालांकि 2024 में शेख हसीना के शासन का अंत होने के बाद तारिक सभी मामलों से बरी कर दिए गए। इस बीच 2016 में उन्होंने फिर से बांग्लादेश की नागरिकता ले ली। 2025 में अपनी मां खालिदा जिया की बीमारी के कारण तारिक 17 वर्षों बाद 25 दिसंबर को बांग्लादेश लौटे और 2026 के चुनाव में बहुमत की सरकार बनाई।

बहरहाल, 1971 में अपनी स्थापना के बाद से ही लगातार उथल-पुथल से जूझ रहे बांग्लादेश में एक बार फिर लोकतांत्रिक सरकार का गठन हुआ है। उम्मीद की जानी चाहिए कि तारिक रहमान की सरकार जनहित के कार्य करे, महंगाई, भ्रष्टाचार पर नियंत्रण रखे, बेरोजगारों को रोजगार दे, पड़ोसी देशों खासकर, भारत के अनुकूल हो और स्थिर हो।

पुलित्जर (Pulitzer) पुरस्कार विजेता स्टीफन ग्रीनब्लाट से विशेष बातचीत

'जो शब्द असहज होते हैं, वही याद रहते हैं'

द स्वर्व (The Swerve) के लिए पुलित्जर से सम्मानित चिंतक कहते हैं कि साहित्य सहूलियत नहीं देता। वह मनुष्य और सत्ता के संबंधों का कठोर आईना दिखाता है। विलियम शेक्सपियर और क्रिस्टोफर मार्लो के उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि जोखिम भरा लेखन ही समय की कसौटी पर टिकता है। इतिहास अंततः उन्हीं शब्दों को याद रखता है जो असहज करते हैं। प्रस्तुत है ग्रीनब्लाट से वरिष्ठ पत्रकार मणिमाला शर्मा की बातचीत-

आप कहते हैं कि आप 'मृतकों से संवाद' करना चाहते हैं। यदि आज शेक्सपियर या मार्लो हमारे समय को देखें, खासकर सोशल मीडिया और त्वरित प्रतिक्रियाओं के इस दौर को, तो उन्हें सबसे अधिक क्या चौंकाएगा?

स्टीफन ग्रीनब्लाटः अगर ऐसा होता तो शायद उन्हें हमारी अधीरता ही चौंकाती। क्योंकि भले ही उनके समय में भय और अस्थिरता थी, लेकिन शब्दों को समय मिलता था। आज का दौर इससे बिल्कुल उलट है। आजकल निर्णय पहले आता है, विचार बाद में। भाषा संवाद से अधिक हथियार बन गई है। यह बदलाव उन्हें बेचैन करता।

डार्क रेनैसांस (Dark Renaissance) में आपने मार्लो की निर्भीकता को सामने रखा है। आज के दौर में, जब सार्वजनिक विमर्श अधिक नियंत्रित और संवेदनशील होता जा रहा है, क्या ऐसे जोखिम भरे लेखकों के लिए जगह बची है?

स्टीफन ग्रीनब्लाटः अगर जोखिम लेने की जगह नहीं बची, तो साहित्य का अर्थ खत्म हो जाएगा। मार्लो ने सत्ता को ललकारा था। वे लोकप्रिय होने के लिए नहीं लिख रहे थे। आज भी असली लेखन वही है जो सुविधा और सत्ता से टकरा जाए। असहमति हमेशा असुविधाजनक होती है, पर वही इतिहास को आगे बढ़ाती है।

चार सौ साल बाद जब कोई इतिहासकार हमारे समय का अध्ययन करेगा, तो वह हमारे युग की सबसे बड़ी विडंबना क्या पाएगा?

स्टीफन ग्रीनब्लाटः वह देखेगा कि हमारे पास जानकारी का तो महासागर था, पर विवेक की कमी थी। हमने तकनीक को गति दी, पर नैतिक साहस को नहीं। यह असंतुलन उसे निश्चय ही चकित करेगा।

द स्वर्व (The Swerve) में आपने दिखाया कि एक पांडुलिपि ने दुनिया की बौद्धिक दिशा बदल दी। क्या आज के डिजिटल युग में किसी एक किताब या विचार में वह ताकत बची है?

स्टीफन ग्रीनब्लाटः संभव है, लेकिन अब वह बदलाव शोर से नहीं, चुपचाप आता है। आज हर विचार तुरंत भीड़ में घिर जाता है। फिर भी इतिहास में निर्णायक मोड़ अक्सर धीरे-धीरे तैयार होते हैं। एक विचार समय लेता है, पर वह अपना असर गहरा छोड़ता है।

भारत में शेक्सपियर को औपनिवेशिक विरासत (Colonial Legacy) के रूप में पढ़ाया गया, पर यहां के मंच और सिनेमा ने उन्हें अपना बना लिया। क्या वे अब किसी एक संस्कृति के लेखक नहीं रहे?

स्टीफन ग्रीनब्लाटः शेक्सपियर सीमाओं में नहीं रहते। जब उनकी कहानियां नई भाषाओं में ढलती हैं, तो वे फिर से जन्म लेती हैं। यह उनकी शक्ति है। वे अब केवल अंग्रेज़ी साहित्य का हिस्सा नहीं रह गए हैं बल्कि वे अब समग्र मानवीय अनुभव का हिस्सा बन चुके हैं।

दशकों के अध्ययन के बाद भी क्या शेक्सपियर का कोई अंधेरा कोना आपको विचलित करता है?

स्टीफन ग्रीनब्लाटः हां। सत्ता और हिंसा के प्रति उनकी निर्मम स्पष्टता मुझे विचलित करती है। वे दिखाते हैं कि मनुष्य के भीतर का अंधेरा स्थायी है। यही सच्चाई हमें असहज करती है, क्योंकि वह आज भी उतनी ही सच है।

क्या भारतीय या गैर-अंग्रेज़ी परंपराओं से हुए परस्पर संवादों ने आपकी समझ को बदला है?

स्टीफन ग्रीनब्लाटः बिलकुल बदला है। जब कोई संस्कृति शेक्सपियर को अपने संदर्भ में ढालती है, तो पाठ की नई परतें खुलती हैं। भारत में उनके रूपांतरणों ने मुझे यह सिखाया कि साहित्य स्थिर नहीं होता। वह हर समाज में एक नया अर्थ ग्रहण करता है, जिससे उसके मायने हर दौर देश काल परिस्तिथियों में बदल जाते हैं।

आज के युवा लेखक, जो दबाव और ध्रुवीकरण के बीच लिख रहे हैं, उन्हें आप क्या सलाह देंगे?

स्टीफन ग्रीनब्लाटः लेखन अगर भय से संचालित होगा, तो वह टिकेगा नहीं। इतिहास उन्हीं रचनाओं को याद रखता है जिन्होंने जोखिम उठाया है। लोकप्रियता क्षणिक होती है परंतु साहस हमेशा से स्थायी होता है।

ग्रीनब्लैट की बातों में एक स्पष्ट संकेत है। अतीत केवल संग्रहालय की वस्तु नहीं, वह वर्तमान का आईना है। शेक्सपियर और मार्लो को पढ़ना इतिहास को दोहराना नहीं, उसे पहचानना है। जब शब्द केवल ताली के लिए लिखे जाते हैं, वे समय के साथ खो जाते हैं। और जब वही शब्द सामने वाले व्यक्ति के लिए असुविधा पैदा कर देते हैं, बाद में केवल वे बच जाते हैं और आज के समय के साहित्य की यह अंतिम परीक्षा है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस विशेष

'माई बॉडी माई चॉइस' का आधार नैतिक मूल्य हों

शरीर पर अधिकार व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मूल है पर निर्णय सामाजिक उत्तरदायित्व से विमुख नहीं हो सकते। स्वायत्तता और नैतिकता के संतुलन से ही सम्मानजनक और स्वस्थ समाज संभव है।

पद्मजा शर्मा, वरिष्ठ साहित्यकार

'माई बॉडी माई चॉइस' जब हम कहते हैं तो इसका सीधा अर्थ होता है मेरा शरीर मेरी चॉइस। मेरे शरीर पर मेरा अधिकार है, कोई और तय नहीं कर सकता कि मैं क्या पहनूं, क्या खाऊं। और महत्वपूर्ण बात यह कि कोई मुझे नहीं बताए कि मुझे विवाह कब, किससे करना, कब बच्चा करना है, नहीं करना है, प्रजनन संबंधी अधिकार मेरा है। मैं तय करूंगी। यह निर्णय मेरा होगा कि मुझे बच्चा चाहिए कि नहीं।

आपके शरीर पर आपका अधिकार है। ग्लोरिया स्टाइनम कहती हैं किसी भी लोकतान्त्रिक व्यवस्था में अपने शरीर पर अधिकार लोकतंत्र की स्थापना का पहला कदम है। और इस आधार पर महिलाएं विशेष रूप से वे जो नस्ल, जाति, वर्ग के आधार पर अवमूल्यित हैं। अब भी अंतरंग तानाशाही के अधीन हैं।

'अगेंस्ट अवर विल' अपनी पुस्तक में ब्राउन मिलर कहती हैं कि आप महिलाओं की स्वायत्तता की उपेक्षा नहीं कर सकते। वे कानून और सार्वजनिक दृष्टिकोण दोनों को बदलने पर जोर देती हैं, तब ही महिलाओं की शारीरिक स्वायत्तता को सही रूप में आंका जा सकेगा। यह ठीक भी है कि महिला को हक है कि वह तय करे कि उसे बच्चा पैदा करना है या नहीं करना है। अक्सर महिलाओं को समाज, संस्कृति, पम्परा का भय दिखाकर दबाया गया। लोग क्या कहेंगे। यहां तक कि अगर वह मोटी है तो बॉडी शेमिंग किया गया। इस बॉडी शेमिंग से लड़कों को भी कहां बख्शा जाता है। इंडियन आइडल के एक प्रतिभागी को उनके मोटे होने पर लोग व्यंग करते थे। क्लास के लड़के कभी- कभी उन पर थूकते भी थे।

लड़की लड़के को, व्यक्ति को तय करने दीजिए, उसे मोटा रहना है या पतला। आप कौन हैं उसके शरीर को देखकर तय करने वाले कि वह मोटा रहे कि पतला। महिलाओं को मोटा-पतला, सुंदर- असुंदर, काली- गौरी, ठिगनी- लंबी, कहकर लोग उनमें हीन भाव भरने से बाज नहीं आते। यह कॉमन प्रेक्टिस है। यहां तक कि विवाह के मसले पर भी टांग अड़ाते हैं। मगर यह दखलंदाजी अब कम हुई है जब से लड़कियों ने अपने पांवों पर खड़े होना शुरू किया है। मगर अभी भी उनका रास्ता आसान नहीं है। राह कंटीली है। एक जान पर कितनी आफतें।

आखिर कहां जाएं..

संविधान ने महिलाओं को हक दिया है कि पिता की संपत्ति पर उनका भी बेटों की तरह अधिकार है मगर बेटियां अभी तक खाली हाथ हैं। अधिकतर संपत्ति पर बेटे कुंडली मारे बैठे हैं। लड़कर लोगे तो मिलेगी, वरना जाओ भाड़ में। बेटी का हक न पीहर में न ससुराल में। वह कहां जाए? छूछे हाथ रहे, और क्या। इसलिए लड़कियों को पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़े होने की जरूरत है, वह आत्मनिर्भर बने और अपने अधिकारों के प्रति सजग भी रहे। यूं ही सबकुछ होते हुए भी दर- दर की ठोकरें खाती न फिरे। मारी मारी न फिरे।

ताक पर रख दी गई योग्यता

मैंने कहीं पढ़ा है कि STEM एडयूकेशन में लड़कों से आगे निकल रही हैं लड़कियां। स्टेम यानी साइंस टेक्नोलोजी एंजिनियरिंग मैथ्स। ये विषय कोई वक्त में लड़कों के माने जाते थे, मगर अब लड़कियां खूब आ रही हैं। मास्टर्स डिग्री में लड़कियां लड़कों के बराबर हो गई हैं। मगर फिर भी बड़े ओहदों पदों पर लड़कियां आज भी बहुत कम हैं पुरुषों से। उनकी संख्या टिप्स पर गिनने लायक है। इसके लिए जरूरी है उन्हें आरक्षण का लाभ दिया जाए। सदियों से उन्हें दबाकर रखा गया। मौके उनकी आंखों के आगे से जाते रहे। वे इंसान थीं उसी तरह जैसे मर्द। पर उनकी योग्यता को आंका, जांचा ही नहीं गया। बस घर में टेबल कुर्सी पड़ी रहती हैं, उसी तरह वे भी पड़ी रहीं। उन्हें इंसानों में गिना ही नहीं गया। अब जब मौके मिले, अवसर मिले तो उन्होंने साबित किया खुद को। चाहे खेलों में, चाहे राजनीति में, चाहे साइंस में, चाहे अंतरिक्ष में, चाहे युद्ध के मैदान में, चाहे साहित्य के क्षेत्र में। सब जगह उन्होंने अपनी सफलता के परचम फहराए।

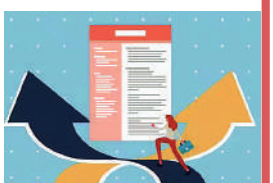

जिम्मेदारी से मुंह मोड़ना भी गलत

हमारे संविधान ने सबको हक दिया है स्वतंत्रता का, समानता का। उसका हनन करना कानूनन अपराध है। मगर इसका अर्थ यह कतई नहीं कि व्यक्तिगत निर्णय या व्यक्तिगत स्वतंत्रता और हक और अधिकार के नाम पर हम अपनी सामाजिक जिम्मेदारी से मुंह मोड़ लें। हम कोई ऐसा काम नहीं कर सकते, जिससे समाज में नैतिक मूल्यों का हनन हो, उनमें गिरावट आए। आपका स्वास्थ्य ठीक है, आपकी शादी को पांच साल हो गए। आपका जॉब लगा है, आपकी उम्र हो गई है 38 साल। आप प्रेग्नेंट हैं और कहती हैं बच्चा नहीं चाहिए, मगर आपके पार्टनर को तो चाहिए। इस पर विचार करने की जरूरत है कि आप मां बनने से क्यों कतरा रही हैं। 38-40 के बाद गर्भ धारण करना कई समस्याओं को जन्म दे सकता है।

आप कोई भी ऐसा काम न करें, कोई भी ऐसा निर्णय न लें, जिससे समाज की नींव चरमराए, परिवार बिखरे। नेगेटिविटी फैले। 'माई बॉडी माई चॉइस' को नाजायज हथियार बनाकर किसी की भावनाओं से न खेलें और सामाजिक ढांचे में ऐसी कोई तोड़फोड़ न हो, जिसके कारण हमारी सामाजिक व्यवस्था हिल जाए। समाज और व्यक्ति दोनों तरफ ही जिम्मेदारी का भाव होना चाहिए। व्यक्ति समाज से अलग नहीं है। समाज व्यक्तियों से ही बनता है। प्रेम से ही बनता है।

व्यक्ति अपने फैसले ले, मगर फैसले ऐसे हों कि उनका प्रतिकूल प्रभाव परिवार- समाज पर न पड़े। तभी 'माई बॉडी माई चॉइस' का नारा पहले से ज्यादा सार्थक होगा। हर व्यक्ति की प्रतिभा, योग्यता को नाम मिले। उसे उसका हक मिले, जिससे यह जीवन बेहतर तरीके से हंसी, खुशी, सम्मान और स्वतंत्रता के साथ जिया जा सके।

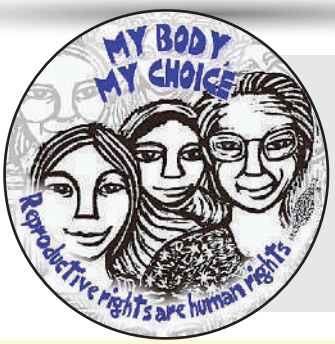

पब्लिक स्पीकर एंड कोच सौदामिनी जलौटा के कथन के साथ अपनी सहमति जताते हुए अपनी बात कहूंगी- 'माई बॉडी माई चॉइस' का आधार नैतिक मूल्य हों। अगर इसका ध्यान रखा जाए तो विकृति जन्म नहीं ले सकेगी। महिलाएं इस बात को समझें। वहीं समाज को भी यह समझने की जरूरत है कि किसी के निर्णय को समझने के बजाय उसे जज करना गलत है। सोच बदलने की जरूरत है ताकि हम एक ऐसा समाज बना सकें, जहां हर व्यक्ति अपनी जिंदगी के फैसले खुद ले सके।

ईद, होली, महावीर जयंती, चेटीचण्ट, रामनवमी की हार्दिक शुभकानाएं

DISCOUNT SALE

ऑनलाइन से भी सस्ती रेट

Electronic Home Appliances Sale

कहीं से भी खरीददारी करने से पहले एक बार ज़रूर विजिट करें

ऑनलाइन से भी सस्ती रेट

सस्ते से सस्ता... .सबसे सस्ता... इससे सस्ता और कहीं नहीं

FAIR DEAL

ECONOMIC REFRIGERATION & AIR CONDITIONING WORKS

CALL ON 9414 9447 86

Address : Behind Mahaveer Complex, Hakimbagh, Sardarpura, Jodhpur

'आयुष्मन्तं ध्रुवं देवं स्वस्थं आरोग्यवान् सदा'

षष्ठीपूर्ति-आयु नहीं अनुभूति का उत्सव

षष्ठीपूर्ति केवल आयु का पड़ाव नहीं, बल्कि आत्मावलोकन और जीवन परिष्कार का संस्कार है। यह परंपरा मनुष्य को अतीत की समीक्षा वर्तमान की समझ और भविष्य के संकल्प की दिशा देती है।

डॉ. राकेश तैलंग, शिक्षाविद्

यह हम सनातनी परम्परा के अनुवर्त्ती भारतीयों के लिए रोचक विमर्श का विषय होना चाहिए कि वे प्राचीन परम्पराएं जो हमें अपने समस्त ईश्वर प्रदत्त मानव जीवन के विभिन्न आयु क्रम में हमारा मार्गदर्शन करती हैं, श्रेष्ठ सामाजिक व्यवहार की दिशा में उत्कर्ष के लिए रास्ता बताती हैं और आत्मालोचन के अवसर देती हैं कि हम कौन थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी। इस दृष्टि से दक्षिण भारत से मूलतः उद्भूत और समस्त भारतवर्ष में एक सामाजिक महोत्सव के रूप में स्थापित षष्ठीपूर्त्ति परंपरा पर चर्चा प्रासंगिक बनती है। अंततः साठ वर्ष की वय में राज्य सेवा से निवृत्त होने वाले कार्मिक के जीवन का यह दिन इसी कारण महत्वपूर्ण है।

षष्ठीपूर्त्ति एक वैदिक अनुष्ठान है, जिसे साठ वर्ष की पूर्णता पर आयु चक्र के एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में आयोजित किया जाता है। यह सामान्यतः षष्ठीपूर्त्ति, षष्ठ्यपर्थपूर्त्ति, अरुबाधाम्कल्याणम्, सदाभिषेक के नाम से जाना जाता है। सनातन मान्यताओं के अनुसार मनुष्य की वय 120 वर्ष की मानी गई है। इसलिए षष्ठीपूर्त्ति अर्द्ध वार्षिकी की पूर्णता का वर्ष है। मूलतः इसका स्रोत दक्षिण भारत की द्राविड़ परम्परा है, जहां साठ वर्षीय विवाह की पूर्णता पर भी इसे उत्सव के रूप में परिवार के पुत्र- पुत्री, पौत्र- पौत्रियों व कुटुंबजन के साथ मनाया जाता है। व्यक्ति इस अवसर पर अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में विचार कर प्रसन्न होता है और अपने अनुभवों को परिजन के साथ साझा कर वर्तमान और भविष्य के लिए परिजन का मार्गदर्शन भी करता है। कतीत का स्मरण, वर्तमान की समीक्षा और भविष्य की योजना सुनिश्चित करने का यह पर्व है।

षष्ठीपूर्त्ति दिवस एक अन्य दृष्टि से आने वाले वानप्रस्थ आश्रम के लिए अब तक की गई गलतियों के स्वीकार के साथ शुद्धिकरण के संकल्प का दिवस भी है। यह व्यक्तित्व में परिष्कार की चेतना के स्फुरण और संकल्प का पर्व भी है। इसीलिए इसे 'प्रायश्चित कर्म दिवस' के नाम से भी जाना जाता है।

समग्रतः आत्म प्रेक्षण की इस अंतः प्रक्रिया में अत्यधिक सहनशील और स्वयं के तटस्थ अन्वेषण की जहां आवश्यकता है, वहीं अब आगे से शेष रही जीवन यात्रा में सभी सम्पर्क आने वाले व्यक्तियों व परिस्थितियों के बारे में अन्य की सर्वमान्य धारणा की स्थापना की परिस्थिति विकसित करने के प्रयास का संकल्प दिवस भी है।

'स्व' से 'सर्व' के चिंतन का मार्ग

षष्ठीपूर्ति का यह सोपान मात्र कालखंड की गणना नहीं, अपितु संचित अनुभवों की पोटली से लोक-कल्याण के मोती चुनने का अवसर है। साठ की आयु तक पहुंचते-पहुंचते मनुष्य वैयक्तिक महत्वाकांक्षाओं और 'स्व' के संकुचित घेरे से मुक्त होकर 'सर्व' के व्यापक चिंतन की ओर अग्रसर होता है। यह वह संधि-वेला है जहां व्यक्ति अपने व्यावसायिक कौशल और सामाजिक अनुभवों की विरासत अगली पीढ़ी को सौंपने की मानसिक तैयारी करता है। जिस प्रकार एक वृक्ष अपने पूर्ण विस्तार के बाद फल और छाया से अन्यों को तृप्त करता है, ठीक उसी प्रकार षष्ठीपूर्ति का साधक भी अपनी वैचारिक परिपक्वता से समाज को दिशा देने का उत्तरदायित्व स्वीकार करता है। यह उत्सव हमें बोध कराता है कि जीवन की सार्थकता केवल दीर्घायु होने में नहीं, बल्कि उस परिष्कृत दृष्टि में है जो शेष जीवन यात्रा को 'सेवा' और 'समर्पण' के यज्ञ में आहूत करने का पावन संकल्प देती है।

हमारे प्राचीन ग्रंथों में ऋषिवृंद ने षष्ठीपूर्त्ति दिवस पर कुछ इस तरह का आशीर्वाद अर्द्धवार्षिकी पूर्ण करने वाले व्यक्ति को दिया है-

आयुष्मन्तं ध्रुवं देवं स्वस्थं, आरोग्यवान् सदा।
सम्पन्नम् पुत्र पौत्रैश्च, दीर्घायुस्तु सर्वदा..

स्त्री को देवी या दासी नहीं, मनुष्य मानने का आग्रह

खूब लड़ी मर्दानी....

इतिहास और समाज के उदाहरणों के माध्यम से स्त्री की शक्ति, संवेदना और स्वाभिमान पर विचार। लेख प्रश्न उठाता है कि स्त्री को महिमामंडित करने के बजाय क्या उसे समान मनुष्य का दर्जा मिल पाया है।

दिनेश सिंदल ✍ कवि, लेखक

खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी- लक्ष्मी बाई की वीरता, उनका शौर्य, उनका पराक्रम, एक स्त्री का पराक्रम है। लेकिन हमने खूब लड़ी 'मर्दानी' कह कर उसे मर्द से जोड़ दिया। जब सभी मर्दानों ने अपनी पगड़ियां अंग्रेजों के कदमों में रख दी थी तब उस जनानी ने तलवार उठाई थी। वह भी एक मर्द जाती की रक्षा लिए।

हम अगर इतिहास पर नजर डालें तो हमें कई विदुषी महिलाएं, वीरांगनाएं, समाज चेता महिलाएं मिलेगी, जिन्होंने मनुष्य जाति की रक्षा के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। ऋषि वचवनु की पुत्रियां गार्गी, मैत्रेयी इतिहास की सबसे बुद्धिमान स्त्रियों में से हैं। याज्ञवल्क्य की दूसरी पत्नी मैत्रेयी विद्वानों की सभा में शास्त्रात किया करती थी। ऋषि अगस्त्य की पत्नी लोपामुद्रा श्रेष्ठ दार्शनिक थी। देवमाता अदिती, अरुंधति आदि नाम भी इस क्रम में लिए जा सकते हैं।

ज्यादा दूर नहीं जाए तो बेगम हजरत महल, जिन्होंने अवध पर शासन किया और मटिया बुर्ज में कैद वाजिद अली शाह को छुड़ाने के लिए लार्ड कैनिंग के सुरक्षा दस्ते में सेंध लगाई। दुर्गा भाभी, जिन्होंने भगत सिंह को अंग्रेजों से बचाकर लाहौर से निकालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्होंने गवर्नर हेली पर गोली चलाई और मुंबई पुलिस कमिश्नर को गोली मारी।

मैडम भीकाजी कामा, सरोजिनी नायडू, जिन्होंने आजादी की लड़ाई में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। अरुणा आसफ अली जो गांधीजी के साथ नमक सत्याग्रह में कम से कदम मिलाकर चली। ऐनी बेसेंट जो भारतीय होम रूल आंदोलन के लिए लड़ी। लक्ष्मी सहगल जो सुभाष चंद्र बोस के साथ आजाद हिंद फौज का हिस्सा रही। ऐसे कई उदाहरणों से हमारा इतिहास भरा पड़ा है जब महिलाओं ने मानवता की रक्षा के लिए, समाज हित के लिए और अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए आंदोलन किए।

लेकिन क्या कारण है कि हर बार किसी सीता को अग्नि परीक्षा देनी पड़ती है। अहिल्या को पत्थर बन जाना पड़ता है। किसी उर्मिला को विरह का दुख झेलना पड़ता है। अपने पति के जीवन के लिए सावित्री को यम से लड़ना पड़ता है। राधा जीवन भर वियोग सहती है। सती त्याग दी जाती है और द्रौपदी को पुरुषों की सभा में अपमान झेलना पड़ता है।

हम लक्ष्मी को चरण दबाते हुए, मीरा को जहर पीते हुए और पद्मिनी के जौहर की गाथा को गाते हुए इन्हें महिमा मंडित करते हैं। क्यों? क्योंकि हम औरत को सिर्फ दो रूपों में ही देखना चाहते हैं या तो देवी या दासी। इस पुरुष के बनाए समाज ने उसे मनुष्य का दर्जा कभी नहीं दिया। उसे पूजनीय बना कर मनुष्यता से वंचित किया या दासी बना कर उसका शोषण किया।

मनुष्य ऊर्जा के अलावा कुछ भी नहीं है। स्त्री व पुरुष दोनों के भीतर ऊर्जाएं छुपी है। पुरुष के भीतर स्त्री ऊर्जा भी है व स्त्री के भीतर पुरुष ऊर्जा भी है। इसीलिए हमारे यहां शिव को अर्धनारीश्वर कहा गया है।

बेटियां (स्त्री) कला चेतनाएं हैं। वे संस्कृति की संवाहक है। स्त्री के पास श्रद्धा है, प्रेम है, करुणा है, दया है और ये उसकी ताकत है। स्त्री पुरुष की तुलना में ज्यादा सहनशील होती है। ज्यादा मजबूत होती है। पुरुष अगर औसतन सत्तर वर्ष जीता है तो स्त्री पिछत्तर वर्ष जीती है, इसलिए विवाह चार पांच वर्ष कम उम्र की लड़की से करने का चलन है।

पुरुष ने पास अहंकार है, क्रोध है और यह समाज पुरुषों का बनाया हुआ है। इसलिए पिछले पांच हजार वर्षों में पंद्रह हजार युद्ध हुए। अगर स्त्री समाज निर्माता होती तो तस्वीर कुछ अलग होती। उसमें प्रेम व करुणा के लिए भी स्थान होता।

पुरुषों के बनाए समाज में धीरे धीरे नारी को चारदीवारी में समेट दिया गया। हमारे समाजों ने स्त्री को देह से ज्यादा कुछ नहीं समझा, उसे वंचित व पुरुष पर आश्रित बनाने की कोशिशें हुई। वे सब काम जिनसे आमदनी होती है, पुरुष ने अपने पास रखे। बाहर खाना बनाने के पैसे मिलते है तो पुरुष बनाएगा, घर में स्त्री बनाएगी। बाहर कपड़े धोने के पैसे मिलते है तो पुरुष धोएगा, घर में स्त्री धोएगी इत्यादि। काम को हमने स्त्री- पुरुष में बांट दिया। धीरे धीरे ये बातें हमारे व्यवहार में आ गई। और स्त्री के लिए घर के चारों और खिंची लक्ष्मण रेखा गहरी से और गहरी होती गई।

'मैं कोई लड़की हूं जो ये करूं।' 'क्या लड़कियों की तरह शर्माता है'- जैसे जुमले हमारी भाषा का हिस्सा बन गए।

कुछ लोग अपनी बेटियों को 'बेटा' कह कर संबोधित करते हैं और अपने आपको लैंगिक समानता का समर्थक समझते हैं। जबकि बेटी को बेटा कहना ही स्त्री की गरिमा को अस्वीकार करना है।

> आज कानून ने स्त्री को कुछ अधिकार दिए है। विज्ञान ने शरीर के रहस्यों को खोजा है। अच्छी बात है। मैं यहां समाज के नजरिए को सामने रखना चाहता हूं।

आज अगर किसी स्त्री के साथ बलात्कार हो जाए तो दोष स्त्री का। अपमान की पीड़ा स्त्री सहेगी। उस बलात्कारी के लिए समाज की नजरों में कोई घृणा नहीं। अगर किसी स्त्री के बच्चा नहीं हो रहा तो सारा दोष स्त्री का। कितनी विचित्र बात है कि हमने 'बांझ' शब्द का कोई पुलिंग ही नहीं गढ़ा।

आज नारी अपनी पूरी चेतना के साथ खड़ी होना चाहती है। सवाल ये है कि आप नारी में छुपी नारी को बाहर लाना चाहते हैं, उसे गरिमा देना चाहते हैं या उस में छुपे पुरुष तत्व को उसकी मर्दानी को हवा देना चाहते हैं।

लोकानुरंजन में राजस्थान की आत्मा

राजस्थान की धरती पर लोकानुरंजन केवल मनोरंजन नहीं, सामुदायिक स्मृति, परम्परा और सांस्कृतिक चेतना का सशक्त माध्यम है। बदलते समय में भी यही लोकधारा सांस्कृतिक पहचान को स्थायित्व प्रदान करती है।

डॉ. रंजन दवे, वरिष्ठ पत्रकार

राजस्थान की तपती धरती इस वसुंधरा की एक ओलखाण, एक पहचान यहां की वीरता, शक्ति भक्ति, प्यार और उसकी तपस्या, सतियों के तेज जौहर की ज्वाला, तलवार की धार, लोक देवी देवता, यहां के मेले और उत्सव, गांव ढाणी के नाच गान में रचा बसा यहां का लोकानुरंजन है। शब्दों में संस्कृति का अर्थ है- संस्करण, परिमार्जन, शोधन, परिष्करण। संस्कृति मनुष्यों के परिष्कृत संस्कारों की परिलब्धि या सार का नाम है। युगों से चली आई सभ्य, सामाजिक- लौकिक परम्पराएं संस्कृति के नाम से संबोधित की जाती है।

दृश्य श्रव्य कला के साथ समाज की राजनीति, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और दार्शनिक चेतना को चित्रित करने वाले विशाल कैनवास है। अतः समाज के सभी अंगों और प्रखंडों में लोकानुरंजन की महत्ती भूमिका है। राजस्थान के ठेठ ग्रामीण जीवन को समझना है तो उनकी भाषा के साथ उनके मनोरंजन के तरीकों की जानकारी प्राप्त करनी होगी।

भारत गांवो में बसता है। ऐसा हमने देखा है, सुना है। यहां के प्राकृतिक वातावरण के साथ-साथ सांस्कृतिक विरासत भी विविधता लिए हुए हैं। लोक कला की समस्त विधाओं में लोकनृत्यों, लोकनाट्यों, लोक वाद्यों, लोक गीत, लोककला संगीत इत्यादि का महत्वपूर्ण स्थान है। इन विधाओं में लोक जीवन, मनोरंजन और संस्कृति का अनुपम रूप निहारने को मिलता है। इन कलाओं के प्रणेता न ऋषि-मुनि थे और न ही इनके लिए कोई ग्रंथ रचे गए। मानव के क्रियाकलापों, सामुदायिक वातावरण और परम्परागत अभ्यास ने इन कलाओं को जन्म दिया तथा जीवित रखा। मौखिक स्मरण और लौकिक रूढ़ियों से ढली यह कलाएं आज भी जीवित हैं। युग-युगान्तर से पनपी यह कलाएं राजस्थान की संस्कृति की प्राण बनी हुई हैं। सामाजिक ताने बाने में गुंथे यहां के संस्कार, जातिगत रूढ़िवादिता, छुआछूत भेदभाव के बीच सांस्कृतिक विरासत को यहां की पीढ़ियां आज भी संजोये हुए हैं। समाजिक जीवन में लोकानुरंजन की नितांत आवश्यकतानुरूप राजस्थान प्रदेश के सामाजिक परिवेश को देखने पर यहां की छिपी लोक कलाओं में लोक नाट्यों और लोक नृत्यों, लोक गीतों, लोक वाद्यों में वो झलक परस्पर दिखाई पड़ती है।

> राजस्थान में लोकनृत्य की संस्कृति ने यहां के समाज के ताने-बाने को और अच्छा बुना है। संस्कृति किसी भी देश जाति या समाज की आत्मा होती है और राजस्थान के लोक नृत्य में महिलाएं ही नहीं पुरुषों की प्रधानता वाले लोक नृत्य इसके महत्व को और बढ़ा देते हैं। इसमें देश, जाति समाज और वर्ग के चिंतन, मनन आचार, विचार, रहन-सहन, बोली भाषा, वेशभूषा, कला कौशल आदि सभी बातों का समावेश होकर संस्कृति को पूर्णता प्रदान करता है।

'वीर भोग्या वसुंधरा' की धरा के पुरुषों में भी कला सृजन के लिए प्रवृत्त हुआ है। राजस्थानी भूमि शूरवीरों की खान रही है। युद्ध रण कौशल में तो जहां इन रणबांकुरों के केसरिया बाना के किस्से जगजाहिर हैं ही, वहीं आमोद प्रमोद और मनोरंजन के लिए आखेट के साथ-साथ नृत्य, गीत-संगीत, खेल, तमाशा प्रमुख रूप से देखें और पसंद किए जाते रहे हैं। यहां के लोक मानस को सामाजिक आधार और जातिगत संबंधों की बानगी ढोली, ढाढी, कामड़ भवाई, भील, गरासिया, मिरासी, लंगा, मांगणियार, कालबेलिया आदि जातियों के लोक कलाकारों के रूप में देखी जा सकती है। इन्हीं कलाकारों ने राजस्थान की लोक कलाओं को अंतरराष्ट्रीय पटल पर पहचान दिलाई है। इतना ही नहीं विवाह और मंगल आयोजनों पर सरगरा, ढोली और भील जातियों के द्वारा किया जाने वाला पुरुष प्रधान 'ढोल नृत्य' जालौर ही नहीं अब राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य में से एक है। राजस्थान की बावरी जाति के लोगों द्वारा किया जाने वाला 'कच्छी घोड़ी' नृत्य युद्ध की सजगता को दर्शाता है तो जांगल प्रदेश का 'अग्नि नृत्य' राजस्थान के शूर वीरों की बानगीभर है, जो कि 'फ़त्तेह-फ़त्तेह' भर के उच्चारण से देखने वालों में जोश का संचरण कर देते हैं। दहकते अंगारों पर 'नाचनियों' के नंगे पैर प्रवेश कर एक विशेष भयमिश्रित उत्सुकता और यहां की माटी में पाए जाने वाली वीरता के भाव को साकार कर उठते हैं। वही इस प्रदेश के कुछ लोकनृत्य ऐसे भी हैं जिनमें यहां के पुरुष महिलाओं के साथ सामंजस्य मिला अपनी खुशी और मनोरंजन का सूत्रपात करते है। पारंपरिक लोक वाद्यों में 'ढोल थाली' की जोड़ी के बिना मांगलिक आयोजन आज भी अधूरे ही माने जाते हैं। लोकोत्सव, पर्व, तीज-त्योहार, लोकानुष्ठान आदि के मोकों पर रंग-बिरंगी वेशभूषा और स्थान विशेष की परम्पराओं के अनुसार लोकनृत्य परम्परा शताब्दियों से चली आ रही है। मारवाड़ का डांडिया, मारवाड़ व मेवाड़ का गैर, शेखावाटी का गिंदड़, जसनाथी सिद्धों का अग्नि नृत्य, अलवर-भरतपुर का बम नृत्य, लगभग पूरे प्रदेश में प्रचलित घूमर, चंग एवं डांडिया राजस्थान के लोकप्रिय नृत्य हैं। राजस्थान की जनजातियों के लोक नृत्यों में भीलों के गवरी, गरासियों के वालर, गूजरों का चरी नृत्य, रामदेवजी के भोपों का तेरहताली नृत्य, पेशेवर लोकनर्तकों का भवाई नृत्य आदि रंग-बिरंगी छटा बिखरते हैं।

वर्तमान दौर परिवर्तनशील है, ऐसे में हमारी लोक संस्कृति और लोक कलाओं में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। ये केवल मनोरंजन का साधन न होकर हमारी जड़े हैं, जिनसे हमें मजबूती मिलती है। लोकानुरंजन के आधार पर ही हमें आने वाली पीढ़ियों में जागृति की नींव डालनी है, जिससे कि हम निरंतर इसे सहेज कर उन्नति के सोपान को अर्जित करें।

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ और 'ज्ञान मंदिर' का प्रेरक अभियान

ज्ञान की वैश्विक यात्रा

आज का समय सूचना-विस्फोट का युग है। ज्ञान की उपलब्धता पहले से अधिक है, परंतु उसकी विश्वसनीयता, सुव्यवस्था और जनहित से जुड़ाव उतना ही चुनौतीपूर्ण हो गया है। ऐसे दौर में यदि कोई व्यक्ति ज्ञान को न केवल संरक्षित करे, बल्कि उसे मुक्त, जीवंत और वैश्विक स्तर पर सुलभ बनाए, तो वह प्रयास अपने आप में एक सांस्कृतिक सेवा बन जाता है। प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ द्वारा स्थापित 'ज्ञान मंदिर' इसी दिशा का एक प्रेरक और सकारात्मक उदाहरण है—जहाँ ज्ञान, साधना और तकनीक का समन्वय दिखाई देता है।

डिजिटल युग का सृजनात्मक ज्ञान-वृक्ष

- राजस्थान की शैक्षणिक व आध्यात्मिक परंपरा से निकले प्रो. तातेड़ ने अपने लगभग ढाई दशकों के अनुभव को एक साझा मंच पर रूपांतरित किया। 'ज्ञान मंदिर' का विचार केवल सामग्री संग्रह का नहीं, ज्ञान को जीवनोपयोगी बनाना है। यह मंच "ऑल-डिजिटल, ऑल-फ्री, ऑल-लाइव" मॉडल पर आधारित है-अर्थात ज्ञान बिना शुल्क-सीमा व सतत उपलब्ध रहे।
- आज जब शिक्षा का बड़ा हिस्सा बाज़ार-निर्भर होता जा रहा है, तब 50,000 से अधिक दस्तावेज़ों की मुक्त डिजिटल लाइब्रेरी का निर्माण स्वयं में लोकहित का कार्य है। यह पहल उन विद्यार्थियों-शोधार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है, जिनके पास महंगे संसाधनों की पहुँच सीमित है।

शोध, शिक्षा और दर्शन का संगम

- प्रो. तातेड़ का कार्य केवल डिजिटल मंच तक सीमित नहीं है; उनका अकादमिक योगदान भी उल्लेखनीय है। योग, दर्शन और शिक्षा विषयों पर उनके शोधग्रंथ विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा स्वीकृत और उपयोग में लाए जा रहे हैं। इससे 'ज्ञान मंदिर' को केवल प्रेरक अभियान ही नहीं, बल्कि एक अकादमिक रूप से विश्वसनीय स्रोत का दर्जा मिलता है।
- ज्ञान का यह समन्वित स्वरूप भारतीय परंपरा की उस धारा को पुनर्जीवित करता है, जहाँ शिक्षा केवल सूचना नहीं, बल्कि आत्म-विकास और समाज-निर्माण का माध्यम होती है।

डिजिटल विस्तार : ज्ञान का लोकतंत्रीकरण

- 'ज्ञान मंदिर' का सबसे सकारात्मक पक्ष बहुआयामी डिजिटल विस्तार है। वेबसाइट, मोबाइल ऐप, यूट्यूब प्रवचन, ब्लॉग व सोशल मीडिया समुदाय द्वारा ज्ञान सामग्री निरंतर साझा हो रही है।
- यह व्यवस्था ज्ञान के लोकतंत्रीकरण का उदाहरण है-जहाँ भौगोलिक सीमाएँ अप्रासंगिक हो जाती हैं और एक ही मंच पर विविध देशों के लोग जुड़ते हैं। प्रतिदिन आयोजित लाइव कार्यक्रम ज्ञान को स्थिर पाठ्य सामग्री से आगे ले जाकर संवादात्मक अनुभव में बदल देते हैं।

वैश्विक पहुँच और सांस्कृतिक सेतु

- भारत से प्रारंभ हुई यह पहल आज अनेक देशों में देखी और सुनी जा रही है। इससे भारतीय ज्ञान-परंपरा की वैश्विक उपस्थिति भी सुदृढ़ होती है। डिजिटल माध्यमों के जरिए योग, दर्शन और नैतिक चिंतन का प्रसार एक प्रकार से सांस्कृतिक सेतु निर्माण का कार्य करता है।
- ऐसी पहलों का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि वे ज्ञान को किसी राष्ट्र या भाषा तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे सार्वभौमिक मानवीय विरासत के रूप में पेश करते हैं।

ज्ञान-आंदोलन का रूप

- 'ज्ञान मंदिर' अब केवल एक ऑनलाइन संग्रह नहीं, बल्कि एक जीवंत ज्ञान-आंदोलन का स्वरूप ले चुका है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के साथ-साथ इसे एक भौतिक दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित करने का विचार ज्ञान को अनुभवात्मक बनाने की दिशा में कदम है।
- किसी महान पहल की स्थायित्व-शक्ति उसके उद्देश्य में निहित होती है। यहाँ उद्देश्य स्पष्ट है-ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाना और आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखना। यही कारण है कि इसे एक दीर्घकालिक सांस्कृतिक विरासत के रूप में देखा जा रहा है।

प्रेरणा का स्रोत

- प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ का कार्य यह संकेत देता है कि व्यक्तिगत विद्वत्ता यदि सामाजिक दृष्टि से जुड़ जाए, तो वह संस्थागत रूप ले सकती है। 'ज्ञान मंदिर' इसी का उदाहरण है-एक व्यक्ति की साधना से जन्मा, परंतु समाज की साझा धरोहर बनता हुआ।
- आज आवश्यकता है कि ऐसे प्रयासों को पहचान, सहयोग और अनुकरण मिले। डिजिटल भारत की अवधारणा तभी सार्थक होगी जब ज्ञान के मुक्त और विश्वसनीय स्रोत विकसित होंगे।

- ज्ञान मंदिर का लोगो डॉक्टर तातेड़ की दूरदर्शी सोच और संकल्प का सशक्त प्रतीक है। उनका ध्येय है" ज्ञान मंदिर फॉर एवर सेंचुरीज़ टुगेदर", अर्थात् यहाँ संकलित प्रत्येक ज्ञान-संपदा शताब्दियों तक जनमानस के जीवन निर्माण, अवलोकन, अध्ययन और प्रेरणा का स्रोत बनी रहे।
- इसी उच्च उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने प्रोफेसर (डॉ) सोहन राज-लक्ष्मी देवी तातेड़ चौरिटेबल ट्रस्ट, जोधपुर की स्थापना की, ताकि उनके जीवनभर के कार्य, विचार और साधना केवल स्मृति बनकर न रह जाएँ, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्थायी धरोहर के रूप में जीवित रहें।
- यह पहल उनके कर्मपथ को चिरस्थायी बनाने और समाज को निरंतर ज्ञानप्रकाश से आलोकित करने का संकल्प है।
- ज्ञानमंदिर को सैकड़ों राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं, तथा ज्ञानमंदिर के कार्यक्रमों की सैकड़ों विश्व रिकॉर्ड्स में प्रविष्टि हो चुकी है।

'ज्ञान मंदिर' की यात्रा ज्ञान-साधना, तकनीकी नवाचार और लोकसेवा का सुंदर संगम है। यह पहल बताती है कि डिजिटल युग में भी ज्ञान का उद्देश्य केवल संग्रह नहीं, बल्कि प्रसार और उत्थान है। प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़ का यह अभियान निश्चय ही आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा—कि ज्ञान जब साझा होता है, तभी वह अमर बनता है।

जैसलमेर- अनसंग हीरो

ओरण योद्धा सुमेरसिंह सांवता

धर्मसिंह भाटी, वरिष्ठ पत्रकार

बहुचर्चित शिव विधायक रविन्द्रसिंह भाटी की एक तस्वीर अचानक ही सोशल मीडिया की सुर्खियां बन गई। बाड़मेर-जैसलमेर जिलों से बाहर हर कोई यह जानने को आतुर हो गया कि आखिरकार वह शख्स कौन है, जिसे अपने कंधों पर उठाकर शिव विधायक भाटी पैदल चल रहे हैं। सुमेरसिंह सांवता नाम का यह शख्स जैसलमेर में किसी परिचय का मोहताज नहीं है, लेकिन रेगिस्तानी जिलों से बाहर उनकी पहचान इस तस्वीर के बाद ही जमकर वायरल हुई। बीते करीब एक दशक से ओरण बचाने के लिए संघर्ष कर रहे सुमेरसिंह रातों-रात स्टार बन गए, लेकिन तेवटा, साफा व पगरखी पहनने वाले सुमेर को न तो स्टारडम से कोई मतलब है, न ही इस बात से कोई इत्तफाक है कि उन्हें कितने लोग जानते पहचानते है। उन्हें केवल अपने लक्ष्य से मोह है, उनका मोह पशु पक्षियों से है, बेजुबां जानवरों से है, पालतु पशुओं से है, रेगिस्तान की विविध प्रकार की वनस्पतियों से है। एक शब्द में कहें तो सुमेरसिंह भाटी को मोह ओरण से है। ओरण बचाने के लक्ष्य को लेकर इन दिनों वह तनोट माता मंदिर से जयपुर तक करीब 725 किलोमीटर पैदल यात्रा पर चल पड़े हैं। सुमेर की इस यात्रा ने शासन-प्रशासन की नींद उड़ा रखी है।

दर्ज नहीं हुई ओरण भूमि

रेगिस्तानी जिले जैसलमेर में कुल 38,13,208 लाख हैक्टेयर भूमि है, जिसमें से 18,22,591 लाख हैक्टेयर जमीन सरकारी है, जो सरकार के रेकर्ड में सिवाय चक के नाम से दर्ज है। इस सिवाय चक भूमि में से 2,85,990 लाख हैक्टेयर भूमि ओरण है। वर्ष 1956 में हुए भू-प्रबंधन के समय ओरण भूमि ओरण के रूप में दर्ज नहीं हो पाई, जिसका खामियाजा आज जैसलमेर की आम जनता भुगत रही है। जैसलमेर जिले में सौर व पवन उर्जा कम्पनियों के आने के साथ ही यह ओरण भूमि कम्पनियों के निशाने पर आ गई। राज्य सरकार ओरण भूमि का आवंटन करने पर तुल गई।

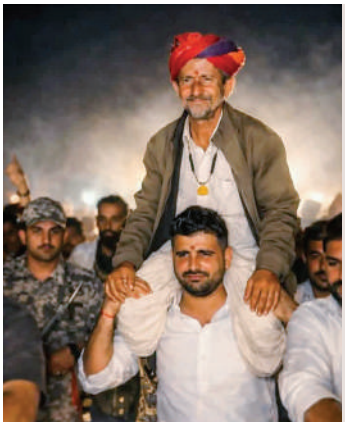

क्या है ओरण भूमि...

ओरण भूमि दरअसल देव वन है, जिसे सैकड़ों-हजारों वर्ष पूर्व देवताओं के नाम पर पर्यावरणीय उददेश्य व पशुपालन आधारित आजीविका के लिए संरक्षित किया गया। यह देवभूमि ग्रामीण आजीविका का आधार बन गई। पशुओं के चरागाह व पक्षियों के लिए आश्रयस्थल बन गई। इस भूमि से लकड़ी काटना भी अपराध माना गया। इस भूमि के प्रति आमजन की आस्था गहरी होती गई, जिससे यह भूमि सदैव बची रही। इस भूमि में दर्जनों की संख्या तालाब व पानी संचय का कैचमेंट एरिया भी है। देगराय की ही ओरण की बात करें तो यहां पर लगभग 48 तालाब है। लाखों की संख्या में पेड़ है। करीब पंद्रह हजार उंट व तीस हजार से अधिक गायें व लाखों भेड़ बकरियां यहां पर पलती है।

अभी भी अधर में 25 हजार बीघा जमीन

- पूर्ववर्ती कांग्रेसनीत राज्य सरकार के कार्यकाल में देगराय मंदिर की ओरण भूमि में कम्पनियों का दखल हुआ, जिसका पुरजोर विरोध हुआ। सांवता गांव निवासी सुमेरसिंह भाटी के नेतत्व में विरोध का बिगुल बजा। देगराय की करीब साठ हजार बीघा ओरण भूमि को बचाने के लिए ग्रामीणों ने मिलकर ओरण की परिक्रमा की। अंततः सरकार को झुकना पड़ा। हालांकि देगराय ओरण की करीब चौबीस हजार बीघा भूमि वर्ष 2004 में ओरण में दर्ज हो गई थी, लेकिन शेष छत्तीस हजार बीघा में से छह हजार बीघा जमीन कांग्रेसनीत सरकार के समय दर्ज हुई और चार हजार बीघा जमीन हाल ही में भाजपा सरकार ने भी ओरण में दर्ज की, लेकिन अभी भी यहां की करीब 25 हजार बीघा जमीन लटकी हुई है।
- कमोबेश यह स्थिति जैसलमेर जिले के प्रत्येक गांव में है। हर गांव में हजारों बीघा ओरण भूमि है, लेकिन जागरूकता के अभाव में ग्रामीण इस जमीन को ओरण के रूप में दर्ज नहीं करवा पाए। सोलर कम्पनियों के लिए यह जमीन सॉफ्ट टारगेट है। पशुपालक, पर्यावरण प्रेमी व आमजन इस जमीन को बचाने के लिए संघर्षरत है, लेकिन शासन प्रशासन आसानी से उनकी भावनाओं को समझने के लिए तैयार नहीं है।

21 जनवरी से शुरू हुई यात्रा...

जैसलमेर जिले के तनोट माता मंदिर से सुमेरसिंह भाटी व भोपालसिंह झलोड़ा के नेतत्व में ओरण बचाओ यात्रा की शुरूआत 21 जनवरी से हुई। यह यात्रा 15 मार्च के करीब जयपुर पहुंचेगी। यात्रा में पचास से अधिक सदस्य नियमित रूप से पैदल चल रहे हैं। यात्रा का जगह-जगह स्वागत हो रहा है। इस यात्रा ने करीब 300 किलोमीटर की दूरी तय कर ली है। जयपुर पहुंचने पर यह दूरी 725 किलोमीटर तक हो जाएगी। यात्रा में 70 से 80 वर्ष की उम्र के बुजुर्ग भी ओरण बचाने के लिए पैदल चल रहे हैं।

एक ही मांग, एक ही ध्येय... छठी कक्षा उत्तीर्ण 45 वर्षीय सुमेरसिंह ने अपने जीवन का एक ध्येय बना दिया है- ओरण बचाना। वे कहते हैं कि जब तक सांस है, तब तक वह ओरण बचाने के लिए संघर्ष करते रहेंगे। उनके प्रयासों से बीते एक दशक में जैसलमेर जिले की करीब 33 हजार बीघा जमीन ओरण के रूप में दर्ज हो चुकी है। उनकी एक ही मांग है कि सभी गांवों की देवभूमि ओरण के रूप में दर्ज की जाए। इस क्षेत्र में सुमेरसिंह की छवि ओरण योद्धा की बन चुकी है।

लक्ष्य प्राप्ति तक जारी रहेगा संघर्ष... बीते पांच वर्ष से सुमेरसिंह के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे भोपालसिंह झलोड़ा कहते हैं कि ओरण बचाओ यात्रा का उद्देश्य जनजागरण करना है, सोए हुए शासन प्रशासन को जगाना है। हम तब तक चुप नहीं बैठेंगे, जब तक जैसलमेर जिले की समस्त देव भूमि ओरण के रूप में दर्ज नहीं हो जाती। यदि सरकार ने समय रहते मांग नहीं मानी तो राज्य स्तर पर व्यापक आंदोलन किया जाएगा।

विश्व क्रिकेट के मानचित्र पर उभरता 'अदृश्य भारत'

जर्सी विदेशी, जड़ें 'देसी'

सॉफ्टवेयर इंजीनियर से स्टंप्स उखाड़ने वाले सौरभ नेत्रवलकर हों या न्यूजीलैंड की टीम में 'सचिन-राहुल' की विरासत समेटे रचिन रवींद्र, आज विश्व क्रिकेट के मानचित्र पर एक 'अदृश्य भारत' खेल रहा है। आखिर क्या वजह है कि विदेशी टीमों की जर्सियों के पीछे छिपे नाम अक्सर भारतीय मिट्टी की गवाही देते हैं? कहते हैं ना, जर्सी भले ही बदल जाए, पर खेल के संस्कार नहीं बदलते।

अजय अस्थाना वरिष्ठ पत्रकार

प्रतिभा जब सीमाओं की बेड़ियां तोड़कर ग्लोबल हो जाती है, तब पहचान का व्याकरण बदल जाता है। आज का क्रिकेट सिर्फ दो देशों के बीच की जंग नहीं, बल्कि उस 'ग्लोबल इंडियन टैलेंट' का उत्सव है जो दुनिया की हर दूसरी टीम की रीढ़ बन चुका है। जब हम आज आईसीसी के बड़े टूर्नामेंटों को देखते हैं, तो एक दृश्य बार-बार हमारी आंखों के सामने आता है। मैदान पर दो अलग देशों की टीमें भिड़ रही होती हैं, राष्ट्रगान अलग बजते हैं, जर्सियों के रंग जुदा होते हैं, लेकिन स्कोरबोर्ड पर दर्ज नाम किसी परिचित 'देसी' गली या मोहल्ले की याद दिला देते हैं। यह दृश्य क्षण भर के लिए दर्शक को ठिठकने पर मजबूर कर देता है। जर्सी भले ही नीली न हो, लेकिन खिलाड़ी के खेलने के अंदाज़, उसकी कलाई के जादू और दबाव में 'कूल' रहने की क्षमता में भारत की मिट्टी की महक साफ़ महसूस की जा सकती है। यह हमारे समय की सबसे बड़ी खेल-कहानी है, जो बताती है कि प्रतिभा का कोई भूगोल नहीं होता।

जब सपनों ने भरी उड़ान

यह प्रवृत्ति कोई रातों-रात पैदा हुई घटना नहीं है, बल्कि पिछले कई दशकों के सामाजिक और आर्थिक बदलाव का परिणाम है। 20वीं सदी के अंत और 21वीं सदी की शुरुआत में लाखों भारतीय परिवार बेहतर भविष्य की तलाश में अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे देशों में जा बसे। इन परिवारों ने नई धरती पर जड़ें तो जमा लीं, लेकिन वे अपने साथ क्रिकेट का वह 'जुनून' भी ले गए जो हर भारतीय के डीएनए में रचा-बसा है। वहां की दूसरी पीढ़ी ने जन्म विदेशी धरती पर लिया, लेकिन घर के आंगन में पिता के साथ प्लास्टिक की गेंद से क्रिकेट का ककहरा सीखा। जब इन बच्चों ने वहां के स्थानीय क्रिकेट क्लबों और अकादमियों में प्रवेश किया, तो उनके पास भारतीय क्रिकेट का पारंपरिक ज्ञान और विदेशी प्रणालियों का आधुनिक अनुशासन का एक घातक मिश्रण था। परिणाम हमारे सामने है कि आज सौरभ नेत्रवलकर (अमेरिका), रचिन रवींद्र (न्यूजीलैण्ड), और केशव महाराज (दक्षिण अफ्रीका) जैसे नाम विश्व क्रिकेट के नए पोस्टर बॉय बन चुके हैं।

सॉफ्टवेयर से स्टंप्स तक का सफर

अगर हम आज के दौर के सबसे प्रेरणादायक उदाहरण की बात करें, तो अमेरिका के सौरभ नेत्रवलकर का नाम सबसे ऊपर आता है। कभी मुंबई की गलियों में पृथ्वी शॉ के साथ क्रिकेट खेलने वाला यह लड़का उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका जाकर सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनता है, लेकिन उसका क्रिकेट प्रेम कम नहीं होता। जब वह टी-20 वर्ल्ड कप में रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे दिग्गजों को अपनी गेंदों से परेशान करता है, तो दुनिया को समझ आता है कि 'इंडियन टैलेंट' कितना लचीला है। इसी तरह, न्यूजीलैंड के रचिन रवींद्र की कहानी भी अद्भुत है। उनके नाम में 'रा' (राहुल द्रविड़) और 'चिन' (सचिन तेंदुलकर) का मेल है। जब वह बेंगलुरु के मैदान पर शतक लगाते हैं, तो पूरा स्टेडियम यह भूल जाता है कि वह एक विदेशी टीम के लिए खेल रहे हैं। दर्शकों को लगता है कि यह तो 'अपना ही लड़का' है जो कीवी जर्सी पहनकर कमाल कर रहा है।

स्पिन का जादू और कलाई की कला

क्रिकेट में स्पिन गेंदबाजी को हमेशा से 'भारतीय कला' माना गया है। आज दुनिया की कई टीमें इस विभाग में भारतीय मूल के खिलाड़ियों पर निर्भर हैं। दक्षिण अफ्रीका के केशव महाराज और तबरैज़ शम्सी ने जिस तरह से प्रोटियाज टीम की गेंदबाजी को नई दिशा दी है, वह काबिले तारीफ है। नीदरलैंड्स की टीम में आर्यन दत्त और विक्रमजीत सिंह जैसे नाम इस बात का प्रमाण हैं कि यूरोपीय देशों में भी क्रिकेट को जीवित रखने में भारतीय मूल के खिलाड़ियों का कितना बड़ा योगदान है। न्यूजीलैंड के ईश सोढ़ी हों या ऑस्ट्रेलिया के तनवीर संघा, इन सभी ने विदेशी पिचों पर वह 'देसी स्पिन' का तड़का लगाया है, जिसने पावर-हिटर बल्लेबाजों को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया है। यह केवल एक खेल कौशल नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक विरासत का हस्तांतरण है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ रहा है।

जब दिल और दिमाग टकराते हैं

एक भारतीय प्रशंसक के लिए यह स्थिति बड़ी जटिल और भावनात्मक होती है। जब कोई भारतीय मूल का खिलाड़ी किसी अन्य देश के लिए भारत के खिलाफ खेलता है, तो दर्शक के मन में विरोधाभासी भाव पैदा होते हैं। एक तरफ अपनी राष्ट्रीय टीम की जीत की चाहत होती है, तो दूसरी तरफ उस खिलाड़ी की व्यक्तिगत सफलता पर एक 'अदृश्य गर्व' भी होता है। यह स्थिति हमें सिखाती है कि आधुनिक पहचान अब एकरेखीय नहीं रही। व्यक्ति की जड़ें एक स्थान से जुड़ी हो सकती हैं, लेकिन उसका कर्तव्य और कर्मक्षेत्र किसी अन्य भूगोल से संबंधित हो सकता है। यह 'ग्लोबल सिटीजनशिप' का सबसे बेहतरीन उदाहरण है। खेल इस जटिलता को सहजता से स्वीकार करता है और बताता है कि पहचान केवल पासपोर्ट के रंग से तय नहीं होती, बल्कि उन संस्कारों से भी तय होती है जो व्यक्ति अपने साथ लेकर चलता है।

भारतीय वर्चस्व या खेल का वैश्वीकरण?

अक्सर यह सवाल उठाया जाता है कि क्या यह किसी प्रकार के 'वर्चस्व' का संकेत है? वास्तविकता में, इसे वर्चस्व के बजाय खेल का प्रभाव और विस्तार कहना अधिक उचित होगा। ये खिलाड़ी अपनी वर्तमान टीम के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। वे उस जर्सी और देश के प्रति वफादार हैं जिसने उन्हें अवसर दिए। लेकिन उनके खेलने के तरीके में जो भारतीयता झलकती है, वह विश्व क्रिकेट को और अधिक समृद्ध और विविधतापूर्ण बनाती है। जब छोटी टीमें (जैसे अमेरिका या नीदरलैंड्स) बड़ी टीमों को टक्कर देती हैं, तो उसके पीछे इन खिलाड़ियों का अनुभव और रणनीतिक सोच होती है। इसने क्रिकेट के मानचित्र को अधिक संतुलित और जीवंत बना दिया है। अब क्रिकेट केवल 5-6 पारंपरिक देशों का खेल नहीं रह गया, बल्कि यह वास्तव में एक वैश्विक खेल बनता जा रहा है।

भारतीय क्रिकेट प्रणाली के लिए संकेत और चुनौतियां

इस प्रतिभा प्रवास के पीछे भारत के लिए कुछ गहरे संदेश भी छिपे हैं। पहला यह कि हमारे देश में क्रिकेट का प्रशिक्षण इतना सुदृढ़ है कि यहां का औसत खिलाड़ी भी दुनिया की किसी भी टीम का स्टार बन सकता है। दूसरा, यह इस बात की ओर भी इशारा करता है कि यदि घरेलू ढांचा हर किसी को पर्याप्त अवसर नहीं दे पाता, तो प्रतिभा अपना रास्ता खुद तलाश लेती है। बीसीसीआई के लिए यह सोचने का विषय है कि कैसे एक 'इनक्लूसिव स्ट्रक्चर' बनाया जाए ताकि प्रतिभा को पहचानने और उसे सही दिशा देने में कोई कमी न रहे। हालांकि, ये खिलाड़ी दुनिया भर में भारत के सांस्कृतिक राजदूत की तरह काम करते हैं, जो खेल के माध्यम से साझा समझ और आपसी सम्मान का सेतु बनाते हैं।

देसी तड़का - ग्लोबल टीमें

विश्व क्रिकेट के मैदानों पर जब ये नाम गूंजते हैं, तो भारतीय प्रशंसकों का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है। ये वे खिलाड़ी हैं जिन्होंने विदेशी सरज़मीं पर अपनी धाक जमाई है-

अमेरिका : सौरभ नेत्रवलकर, मोनांक पटेल, नितिश कुमार, हरमीत सिंह, मिलिंद कुमार।

न्यूजीलैंड : रचिन रवींद्र, ईश सोढ़ी।

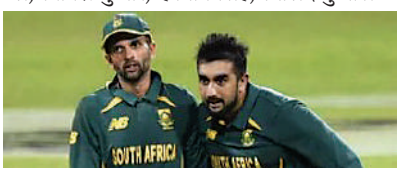

दक्षिण अफ्रीका : केशव महाराज, तबरैज़ शम्सी।

नीदरलैंड्स : विक्रमजीत सिंह, आर्यन दत्त, तेजा निदामनुरु।

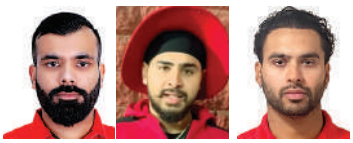

कनाडा : नवनीत धालीवाल, दिलप्रीत बाजवा, कंवरपाल ताथगुर।

ओमान और यूएई : जतिंदर सिंह, कश्यप प्रजापति, अयान खान, वृत्य अरविंद।

जर्सी का रंग, साझा अहसास... हमें ये मानना ही होगा कि आज का क्रिकेट एक साझा विरासत बन चुका है। जर्सियां अलग हो सकती हैं, झंडे अलग हो सकते हैं, लेकिन क्रिकेट की वह रूह जो कभी मुम्बई के शिवाजी पार्क या दिल्ली के कोटला में आकार लेती थी, अब पूरी दुनिया के स्टेडियमों में गूंज रही है। भारतीय मूल के खिलाड़ियों की यह बढ़ती उपस्थिति किसी एक देश की व्यक्तिगत जीत नहीं, बल्कि मानव प्रवास और सांस्कृतिक निरंतरता की एक शानदार महागाथा है। यह हमें सिखाती है कि प्रतिभा जहां भी जाती है, अपने साथ संस्कार, परंपरा और अनुशासन का एक पूरा संसार ले जाती है।

सतगुरु CLASSES™

Where Your Kind Matters

JOIN TEAM SATGURU
& Fulfill Your Dreams to Be Future Egineer & Doctor

■ IIT-JEE ■ NEET ■ XII Foundation ■ XI Foundation ■ X, IX Pre Foundation

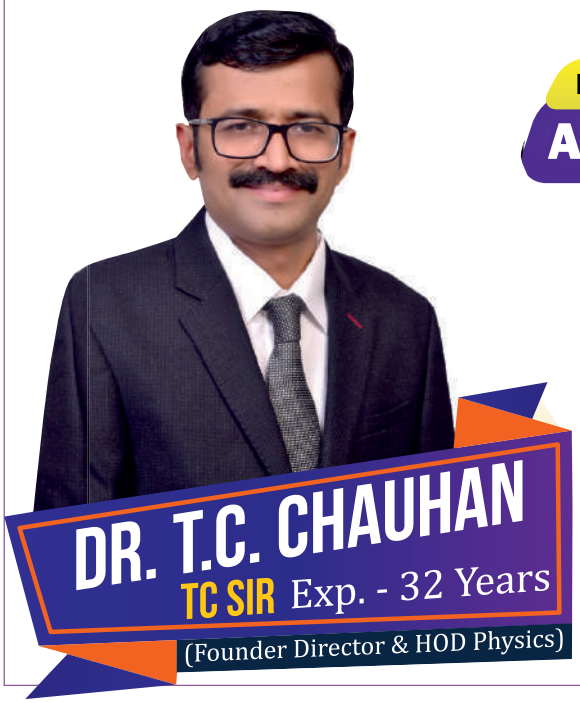

DR. T.C. CHAUHAN
TC SIR Exp. - 32 Years
(Founder Director & HOD Physics)

ENGLISH & HINDI MEDIUM
ADMISSION OPEN

30% discount for First 100 students

एक ही छत के नीचे कोचिंग, हॉस्टल, लाइब्रेरी और स्कूल की सुविधा

HEAD OFFICE
Mata Ka Than Branch
D-165, Kirti Nagar, Mata Ka Than Road, Jodhpur (Raj.)
BRANCH OFFICE
Paota Branch: 26-A, First Polo Paota, Jodhpur
9828072703, 6376947871, 0291-3581717

रंगों के पावन पर्व होली, पवित्र माह रमजान व ईद-उल-फितर की हार्दिक शुभकामनाएँ

जोधपुर नगर निगम उत्तर के वार्ड संख्या 44 के निवर्तमान पार्षद इरफान बेली की ओर से समस्त सूर्यनगरीवासियों को **रंगों के पावन पर्व होली तथा पवित्र माह रमजान और ईद-उल-फितर की हार्दिक शुभकामनाएँ एवं मुबारकबाद।**

यह पावन अवसर आप सभी के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि और आपसी भाईचारे की नई रोशनी लेकर आए। होली के रंग आपसी प्रेम और सौहार्द को और गहरा करें तथा रमजान और ईद का पवित्र संदेश त्याग, करुणा और इंसानियत की भावना को मजबूत बनाए।

आप सभी स्वस्थ, प्रसन्न और सुरक्षित रहें — इसी मंगलकामना के साथ।

श्री अशोक गहलोत
पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान

श्री राजेंद्र सिंह सोलंकी
पूर्व राज्यमंत्री, राजस्थान

कब पूरा होगा जालोर-फालना रेल लाइन का सपना

ना उम्मीद नजर आती, ना इंतजार छोड़ा जाता

तरुण गहलोत, लेखक

जालोर। 'तेरी आने की क्या उमीद मगर कैसे कह दूं कि इंतिजार नहीं', शायर फिराक गोरखपुरी का यह शेर जालोर से फालना रेलवे ट्रैक पर इतना सटीक बैठ रहा है कि ना तो कोई उम्मीद नजर आ रही है और ना ही इंतजार छोड़ा जा रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि इंतजार करते-करते 25 वर्ष बीत चुके हैं। वर्ष 2001 में जालोर फालना रेल लाइन सर्वे के तहत 9 स्टेशन बनने थे, लेकिन 25 वर्ष बाद भी जालोर से फालना तक रहने वाले लाखों लोगों की उम्मीदों को अभी तक पंख नहीं लगे हैं। सर्वे के नाम पर करोड़ों रुपए खर्च किए जा चुके हैं। धरातल पर अभी तक एक पत्थर भी नहीं रखा गया। चौंकाने वाली बात यह है कि अगर समय रहते यह सिंगल रेल पटरी का प्रोजेक्ट पूरा हो जाता तो आज यह लाइन विद्युतीकृत होकर जालोर के ग्रेनाइट उद्योग को दिशा देने में एक नया इतिहास लिखती। अगर इतिहास के पन्नों को पलटने और टटोलने की कोशिश करें तो सिर्फ एक बात याद आती है कि तीन-तीन सर्वे करने और एक राशि आंकने के बावजूद अभी तक लोगों के हाथ निराशा ही लगी है। इसे चाहे जालोर से फालना के अब तक रहे सांसद-विधायकों और अन्य प्रभावशाली रहे राजनेताओं की कमी माने या एक जन आंदोलन का अभाव। रेलवे कंस्ट्रक्शन डिपार्टमेंट ने एक बार तो जालोर-फालना रेल लाइन के लिए 459.26 करोड़ रुपए आंका था। बाद में फरवरी 2014 में रेलवे की इंजीनियरिंग टीम ने इस प्रोजेक्ट का रिवाइज सर्वे किया, जिसमें लैंड कोस्ट में अंतर आने से यह प्रोजेक्ट 459 करोड़ से कटकर 390 करोड़ रुपए आंका गया। रिवाइज प्रोजेक्ट भी रेलवे हेडक्वार्टर को भेजा गया जो आज तक वित्तीय स्वीकृति के लिए इंतजार में है।

नौ स्टेशनों का किया था सर्वे

वर्ष 2001 में जालोर-फालना रेल लाइन सर्वे के तहत कानीवाड़ा, भैंसवाड़ा, आहोर, गंगावा, उम्मेदपुर, बेदाना, तखतगढ़, धुलेना और सांडेराव स्टेशन बनने थे। इस सर्वे पर करीब 17 करोड़ रुपए खर्च किए जा चुके हैं। तत्कालीन रेल मंत्री ममता बनर्जी के विजन के तहत इस रेल लाइन के लिए सर्वे हुआ था और रेलवे कंस्ट्रक्शन डिपार्टमेंट ने इस रेल लाइन के लिए प्रोजेक्ट तैयार कर हेड क्वार्टर भिजवाया था। इस 72 किलोमीटर रेल खंड के बीच कई ओवरब्रिज और रेलवे अंडर ब्रिज भी प्रस्तावित थे।

रेट ऑफ़ रिटर्न आया था नेगेटिव

सर्वे रिपोर्ट के बाद रेलवे की ट्रैफिक ऑफिसर सेल (सीटीओ) टीम ने इस रूट का निरीक्षण कर रेट ऑफ रिटर्न भी निकाला था, जो नेगेटिव आया था। यह टीम ट्रैक की भौगोलिक स्थिति और अंर्निंग सोर्स का आकलन करती है। इस क्षेत्र के लिए क्वारी का कार्य भी पूरा हो चुका था, लेकिन न जाने कहां कमी रही जो 25 वर्ष बीतने के बावजूद भी जालोर फालना रेल लाइन का यहां के लोगों को इंतजार है।

इनके कंधों पर उम्मीदों का भार

जालोर विधायक और राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग और आहोर विधायक छगनसिंह राजपुरोहित के कंधों पर लोगों की उम्मीदों का भार है। गर्ग तो पिछले काफी समय से जालोर-फालना रेल लाइन के लिए पैरवी करने वाले मुख्य लोगों में से एक है। समय-समय पर उन्होंने इस रेल लाइन से होने वाले फायदों को उजागर किया है। वही इस रेल लाइन से जालोर जिले की पूरी आहोर विधानसभा जुड़ी हुई है। आहोर के लगभग सभी गावों को इस रेल लाइन से बहुत अधिक फायदा है। ऐसे में आहोर विधायक राजपुरोहित पर भी इस रेल लाइन की पैरवी करने की बहुत बड़ी जिम्मेदारी बनती है।

फालना से जुड़ने के बाद मिलेगी और यात्री गाड़ियां

फालना से जुड़ाव होने के बाद अधिक यात्री गाड़ियां मिलने की संभावना है। साथ ही जालोर समेत आसपास का पूरा क्षेत्र उत्तर भारत से जुड़ सकेगा। यह ट्रैक दिसावर में काम करने वाले लाखों लोगों के लिए भी काफी महत्वपूर्ण है। राजस्थान की राजधानी जयपुर और भारत की राजधानी दिल्ली के साथ-साथ पूरे उत्तरप्रदेश, बिहार, उत्तरांचल, उत्तराखंड, हरियाणा, मध्यप्रदेश से कनेक्टिविटी भी जुड़ सकती है।

आखिन देखी खादी में छिपे सियासी रंगों की

होली आई रे भजनाई...रंग बरसे....!

सुरेश व्यास, वरिष्ठ पत्रकार

हम लगातार ऑब्जर्व करते रहे कि हो क्या रहा है? किस नेता के कंधे पर कौन बड़ा नेता हाथ रख रहा है... कौन किससे दूर खड़ा है... किसकी कुर्सी आगे है... किसे योगी आदित्यनाथ की तरह दूसरी कुर्सी पर धकेल दिया गया है? कारण की असल में यही तो होली मिलन का रंग कोड जो है। ऐसा नहीं है कि समारोह में रंग-गुलाल नहीं उड़ रहे थे। हमने महसूस किया कि ये गुलाल तो सिर्फ कैमरे के लिए है... असली रंग तो राजनीतिक समीकरणों का है। चंग की थाप और होरियों की स्वर लहरियां तो वैसे भी नेताओं की महत्वाकांक्षाओं के शोर में दब ही चुकी थी।

होली को यूं ही मदनोत्सव थोड़े ही कहा जाता है। यह वाकई उमंग और उल्लास का त्योहार रहा है, जिसमें उड़ने वाले रंग-गुलाल कई बरसों पुराने गिले-शिकवे तक धो डालते हैं। हम तो बचपन से देखते सुनते आए हैं कि कोई पराया भी 'बुरा न मानो होली है...' कहते हुए पलीता लगा जाता है। और जब, बात राजनीति की हो तो कहने ही क्या...? जैसे जैसे राजनीति पर भी आधुनिकता का मुल्लमा चढ़ता जा रहा है, वैसे वैसे राजनेताओं की होली भी अजीब रंग में रंगने लगी है।

अलग अलग सामाजिक संगठनों की तर्ज पर राजनीतिक दल भी होली पर स्नेह मिलन समारोह आयोजित करते हैं। ये ऐसे आयोजन होते हैं, जिसमें किसी को भी कपड़े खराब होने का डर नहीं रहता, बावजूद इसके कि ऐसे कार्यक्रमों में भी रंग उड़ते हैं। कपड़ों पर लगते हैं, लेकिन भला हो बापू का कि उन्होंने अंग्रेजों को भगाने के बहाने ही सही, खादी को न सिर्फ बनाया, बल्कि बढ़ावा भी दिया। यही खादी आज आजादी के सत्तर बरस बाद भी नेताओं का रौब-दाब बनी घूमती है। आम आदमी के लिए भले ही खादी का गमच्छा खरीदना भी वश में नहीं रहा हो।

अब तो गिरगिट भी शर्माने लगे

▪ खादी यानी सफेद झक्क कपड़े। जरा सी धूल-मिट्टी भी सफेद कपड़े की शान बिगाड़ देती है, लेकिन नेता हैं कि इनकी खादी किसी रंग से नहीं डरती। कारण कि ये भी खादी के पीछे अपने अपने सियासी रंग लेकर होली क्या 365 दिन घूमते हैं। इनकी खादी जितना जल्दी रंग बदलती है, उससे तो अब गिरगिट भी शर्माने लगे हैं। अब सफेद खादी पर दाग लगने का डर इसलिए भी नहीं रहा कि बताते हैं कोई गजब की जादूई वाशिंग मशीन आ गई है। इसमें जाते ही कपड़े ही नहीं, खुद नेताजी पाक-साफ होकर निकल आते हैं। किसी सीडी-वीडी का डर खत्म हो जाना तो बोनस में मिलता है इस मशीन में जाने के साथ।

▪ कुल मिलाकर हम नेताओं के होली स्नेह मिलन की बात कर रहे थे। इसमें उड़ने वाले रंग-गुलाल तो उन काले धब्बों के सामने कुछ नहीं है, जो सियासी जीवन में किसी न किसी पर तो लगते ही रहते हैं। हमारी भी जिज्ञासा हुई कि किसी राजनीतिक दल के होली स्नेह मिलन का साक्षी बना जाए तो पहुंच गए राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी में। इस शहर के नाम में भी रंग है तो समारोह की रंगबाजी भी गजब की ही होनी थी। हालांकि कलमगिरी के शुरुआती दिनों में ऐसे समारोहों की कवरेज का मौका मिला था एक जूनियर रिपोर्टर के नाते, लेकिन उस वक्त के रंगों में प्रेम घुला-मिला होता था। आपसी वैमनस्य नहीं था। मतभेद भले ही एक दूसरे से रहे हों, लेकिन मनभेद तो दिखता ही नहीं था। लेकिन इस बार जब हम कई बरसों बाद एक सियासी होली मिलन समारोह में पहुंचे तो दंग रह गए। वहां गुलाल कम, राजनीतिक गणित ज्यादा उड़ती नजर आई। सफेद झक्क खादी के कुर्ता-पायजामा पहने नेताओं की आंखों में सत्ता की चमक ऐसी थी कि रंगों का त्योंहार भी बैरंग दिखा।

यह समारोह चूंकि सत्ताधारी पार्टी का था तो सत्ता की चकाचौंध में होली के रंग तो वैसे ही दीवाली की जगमग जैसे हुए जा रहे थे। होली स्नेह मिलन की परम्परा जैसे एक राजनीतिक स्टेज बन चुकी थी। नेता आए... मुस्कराए... गले मिले... तस्वीरें खिंचवाई और तैयार हो गए इन तस्वीरों के जरिए संदेश देने के लिए। सभी की नजरें कुर्सी पर दो साल बीतने के बाद भी सत्ता का नया केंद्र ही बने हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा पर टिकी थी। कई लोगों ने उनके साथ कुछ प्रसाद मिलने की उम्मीद में तस्वीरें खिंचवाई तो कई नेताओं ने इस उम्मीद के साथ कि मोदी-शाह की नजरों में तो बने रहेंगे।

गलत फोटो व गलत फ्रेम का डर

▪ वैसे यह आयोजन भजनलाल की मेजबानी में हो रहा था तो जाहिर है यहां सफेदी कुछ ज्यादा ही चमक रही थी। आखिर उन्हें भी तो अपनी सरकार की शुद्धता सभी को दिखानी थी। इतने में वसुंधरा राजे की एंट्री होती है और दृश्य बदल जाता है। कोटा डोरिया की गुलाबी किनारी वाली साड़ी पहने मैडम के पहुंचते ही दो धड़े साफ नजर आने लगे। कई नेता जो भजनलाल के आस-पास घूम रहे थे, वे मुंह छिपाने के लिए स्टाल्स की ओर घूमकर गुजिया-समोसे का आनन्द लेने लग गए। कारण कि होली मिलन में असली डर गुलाल से नहीं, कैमरे से होता है। गलत फोटो, गलत फ्रेम, गलत एंगल से संदेश बदल जाता है।

▪ फिर यहां भी वसुंधरा की एंट्री ही साइलेंट स्टेटमेंट बन गई। जैसे वे कह रही हों कि "मैं यहां हूं, अभी भी हूं, और रहूंगी।" भजनलाल के साथ प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ भी कार्यकर्ताओं नेताओं से मिल रही वसु मैडम के साथ कदमताल कर पार्टी में एकजुटता का संदेश देने की कोशिश जरूर कर रहे थे, लेकिन यहां भी उत्साही कार्यकर्ताओं की टोली ने जब 'हमारा मुख्यमंत्री कैसा हो...' के नारे की गुलाल मल दी तो दोनों के चेहरे का रंग फीका पड़ता दिख ही गया।

हार के बाद चूर चूर हुए सपने

इस दौरान मुझे किसी ने अभी आलाकमान की नजरों में चढ़ रहे पूर्व प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया की ओर इशारा किया, जिन्होंने साल 2023 में पार्टी की राजस्थान में सरकार बनने से कोई नौ महीने पहले हुए एक ऐसे ही समारोह में कहा था कि 'बीजेपी की अगली होली सतरंगी होगी और कांग्रेस का होलिका दहन हो जाएगा।' उनकी यह भविष्यवाणी तो सही हो गई, लेकिन आमेर में हार के साथ ही उनका सत्ता सुख भी हाथ से जैसे फिसल गया। आज के कार्यक्रम में भी वे भले ही किसी को लगाने के लिए गुलाल मल रहे थे, लेकिन लग रहा था कि अब भी खाली हाथ ही मल रहे हैं। पूनिया की तरह ही हार के कारण सपने चूर चूर करवा चुके राजेंद्र राठौड़ पर भी नजर गई तो उनकी आंखों में वसुंधरा के भय के साथ एक पश्चाताप भी दिखा कि क्यों उनकी जुबान फिसली और क्यों उन्हें न खुदा (सत्ता) मिला, न विसाले सनम (आका)।

समीकरणों में छुपा असली रंग

खैर, हम लगातर ऑब्जर्व करते रहे कि हो क्या रहा है? किस नेता के कंधे पर कौन बड़ा नेता हाथ रख रहा है... कौन किससे दूर खड़ा है... किसकी कुर्सी आगे है... किसे योगी आदित्यनाथ की तरह दूसरी कुर्सी पर धकेल दिया गया है? कारण की असल में यही तो होली मिलन का रंग कोड जो है। ऐसा नहीं है कि समारोह में रंग-गुलाल नहीं उड़ रहे थे। बाकायदा गुलाल गोटों से लेकर नेता अपने अपने इलाके से पुड़ियां बांध कर लाई हुई अबीर-गुलाल उड़ा रहे थे... लेकिन हमने महसूस किया कि ये गुलाल तो सिर्फ कैमरे के लिए है... असली रंग तो राजनीतिक समीकरणों का है। चंग की थाप और होरियों की स्वर लहरियां तो वैसे भी नेताओं की महत्वाकांक्षाओं के शोर में दब ही चुकी थी।

चूंकि राजस्थान में कुछ दिनों बाद पंचायत व निकाय चुनाव होने है, ऐसे में यह समारोह भविष्य की टिकट राजनीति का ट्रेलर भी नजर आया। नेता जैसे भावी प्रत्याशियों को अपनी पारखी आंखों से स्कैन कर रहे हों कि यह किस खेमे का है... किसका आदमी है... यह किसकी ओर झुकेगा।

इधर भी नजर नहीं आई सितारों में चमक

भाजपा के स्नेह मिलन से निकल कर हम पहुंच गए एक सितारा होटल में। यहां कांग्रेस की ओर से होली मिलन समारोह का आयोजन था। यहां अशोक गहलोत भी अपनी जादुई मुस्कान लिए पहुंचे थे। सचिन पायलट, प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा और टीकाराम जूली तो थे ही। कई हारे-जीते नेताओं के रूप में सितारे तो मौजूद थे, लेकिन चमक नहीं थी। कहते हैं ना कि सत्ता ही चेहरे का रंग चमकाती है और यहां तो सत्ता हाथ से फिसलने के बाद भी कई छत्तीस के आंकड़े नजर आते हैं। फिर भी धड़ों में बंटी हुई कांग्रेस की तरह यहां भी अलग अलग टोलियां अबीर-गुलाल उड़ा रही थी। इसी दौरान पायलट गहलोत को गुलाल लगाने पास गए तो गहलोत ने अपने अस्थमा का हवाला देते हुए इनकार कर दिया और पायलट की गुलाल ही उनके चेहरे पर मल दी। यह देख डोटासरा अपना गमछा घुमाना नहीं भूले तो जूली ने व्यंग्य का गुबारा डोटासरा पर फोड़ दिया कि अब तो इन्होंने रूस के राष्ट्रपति पुतिन की तरह अपना भी हूबहू डुप्लीकेट ढूंढ लिया है... ऐसी कोई नौबत आई तो डर जैसी बात नहीं। उनके इतना कहते ही हंसी फूट पड़ी, लेकिन गहलोत के माथे पर फिक्र की लकीर उभर आई, जैसे उन्हें कोई पुराना सिक्योरिटी गार्ड नजर आ गया हो। मगरमच्छ पकड़ने की बातें तो वैसे भी विधानसभा व विधानसभा के बाहर तक छाई हुई है।

खैर, कांग्रेस के नेता सतर्क भी रहते हैं कि किसी कैमरे की नजर न पड़ जाए। इसलिए नेताओं ने एक दूसरे का हाथ पकड़ कर पोज दिया। इसी दौरान बात राज्यसभा चुनाव की शुरू हुई तो गहलोत बोल पड़े, आइए चाय पीते हैं... और अचानक सभी कदम चाय की केतली की ओर मुड़ गए। कई नेताओं के गुलाली गुबार मन में ही रह गए।

हमने लौटते वक्त यही सोचा कि राजनीति में आज होली मिलन समारोह एक राजनीतिक रंगमंच है, जहां मंच पर भाईचारा है... बैकस्टेज पर रणनीति... फ्रेम में मुस्कान... और फाइलों में समीकरण। यहां कोई राधा-कृष्ण की होली नहीं होती, यहां कुर्सी की होली होती है। सफेद कपड़े पहनकर नेता एक-दूसरे पर गुलाल नहीं एक-दूसरे पर संकेत फेंकते हैं। और जनता? जनता तालियां बजाती है, फोटो देखती है, वीडियो शेयर करती है और सोचती है कि यह सब त्योहार की राजनीति है, जबकि सच यह है कि यह त्योहार का राजनीतिकरण है।

रंगों का त्योहार एक दिन, राजनीति का हुड़दंग साल भर

राजनीति, होली और हुड़दंग

होली के रंगों से आगे बढ़ चुकी राजनीति अब आरोप, कीचड़ और छवि युद्ध का अखाड़ा बन गई है। दल, आईटी सेल और ट्रोल संस्कृति ने लोकतांत्रिक संवाद को व्यंग्यात्मक रंगोत्सव में बदल दिया है।

ज्ञान चंद पाटनी, वरिष्ठ पत्रकार

रंग-बिरंगी होली का सभी को इंतजार रहता है। समस्या यह है कि हुड़दंगियों ने होली जैसे रंगीले त्योहार का चेहरा भी विद्रूप कर दिया है। राहत की बात यह है कि ऐसा साल में एक दिन ही होता है, लेकिन राजनीति में तो ये हुड़दंग 365 दिन चलता रहता है। असल में नेता नामक जीव को हुड़दंग बहुत पसंद है। इसके लिए वह फागुन का इंतजार नहीं कर सकता। इसलिए भारतीय राजनीति के अखाड़े में होली का हुड़दंग बिना नागा चलता रहता है। नेता हमेशा एक दूसरे का मुंह काला करने की फिराक में रहते हैं। जिस नेता का मुंह काला होता है, वह भी पूरे मनोयोग से दूसरे नेताओं के चेहरों पर कालिख मलने का कोई अवसर नहीं छोड़ता।

कीचड़ जीवी नेताओं का हुड़दंग प्रेम

राजनीति में चौबीसों घंटे कीचड़ की होली की धूम रहती है। एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप रूपी कीचड़ फेंकने का सिलसिला कभी नहीं थमता। यह अलग बात है कि कई बार दूसरे पर फेंका कीचड़ खुद पर ही गिर जाता है और जग—हंसाई का कारण बनता है, लेकिन वह हार नहीं मानता। 'करत-करत अभ्यास ते, जड़मति होत सुजान। रसरी आवत-जात ते, सिल पर परत निसान॥' जैसे दोहे ऐसे नेताओं का हौसला बढ़ाते रहते हैं। वे एक दिन इस काम में इतने कुशल हो जाते हैं कि उन्हें कीचड़ के बिना जीवन नीरस लगता है। कीचड़ जीवी इन नेताओं को हुड़दंग से इतना प्रेम हो गया है कि सोशल मीडिया पर भी फेक न्यूज और डीपफेक वीडियो के गुब्बारे फोड़ने की प्रतियोगिता निरंतर चलती रहती है। ये नेता एक दूसरे को रंगने के लिए पुराने रंगों का भी खूब इस्तेमाल करते हैं। देश का विभाजन, चीन, पाकिस्तान, आपातकाल, सांप्रदायिकता, जातीय भेदभाव, आरक्षण, किसान, धार्मिक विवाद जैसे रंग तो कभी पुराने ही नहीं होते। महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी, डॉ. भीमराव अंबेडकर, सावरकर के नामों का भी खूब इस्तेमाल होता है। एक दल सांप्रदायिकता के रंग से भरी पिचकारी चलाता है, तो दूसरा दल जातिवादी रंग उड़ेल कर उसका चेहरा बिगाड़ने लगता है।

असली पर भारी नकली

घाघ नेता हुड़दंग के लिए नए—नए रंगों की तलाश में रहते हैं। कई बार तो बहुत आसानी से रंग हाथ में आ जाते हैं। जैसे कथित वोट चोरी को लेकर सत्ता पक्ष की घेरेबंदी चल ही रही थी कि विपक्ष के हाथ दो नए रंग लग गए- एपस्टीन फाइल्स और पूर्व आर्मी चीफ जनरल मनोज मुकुंद नरवणे की किताब। इनके सहारे सत्ता पक्ष का चेहरा बिगाड़ने की मुहिम जोरों पर है। इस बीच पार्टियों के आईटी सेल एआई के जरिए जादूगरी में जुटे हुए हैं। माउस पर क्लिक करके विपक्षी नेता का चेहरा एपस्टीन के साथ लगा दिया जाता है। जवाब में एआई के जरिए सत्ता पक्ष के नेताओं के फोटो भी एपस्टीन के साथ तैयार करके वायरल कर दिए जाते हैं। वाट्सएप ग्रुप में नरवणे की किताब के कट-पेस्ट अंश घूमते नजर आ रहे हैं। ट्रोल आर्मी सक्रिय हो गई है। टीवी चैनलों पर घमासान जारी है। एंकर चीखते हैं, जानिए फाइल में क्या लिखा है? ऐसे मौकों पर पैनलिस्ट भी आपस में कीचड़ उछालते नजर आते हैं। एक कहता है- फाइल में तुम्हारे नेता का नाम आया है, दूसरा कहता है- तुम्हारी फाइल ही झूठी है। एक कहता है- नरवणे की किताब पर जवाब दो, दूसरा कहता है- तुम्हारी किताब फोटोशॉप का कमाल है। बहस के बीच फंसा बेचारा दर्शक तय ही नहीं कर पाता कि असली रंग कौन सा है और नकली रंग कौनसा। राजनीति में नकली रंगों का बाजार इतना गर्म है कि कई बार असली रंग नकली नजर आते हैं। दिलचस्प बात यह है कि नकली रंग असली रंग से ज्यादा घातक साबित हो रहे हैं। असली रंग का प्रभाव भले ही खत्म हो जाए, लेकिन नकली रंग से चेहरा ऐसा बिगड़ता है कि साफ करते—करते जिंदगी निकल जाती है। यहां यह बात एकदम फिट बैठती है कि जब तक 'सत्य' घर से बाहर निकलता है, तब तक 'झूठ' आधी दुनिया घूम लेता है। सोशल मीडिया ने राजनीति की इस होली को वर्चुअल कीचड़ महासंग्राम में भी बदल दिया है। राजनीति के आईटी सेल वाले रंगों के जादूगर बन बैठे हैं। ट्रोल आर्मी की होली विकराल रूप लेती जा रही है।

मजबूत हो रही चेहरा काला करने की परंपरा

परंपराओं के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले वर्ग के लिए यह वाकई गर्व की बात है कि देश की राजनीति में प्रतिद्वंद्वी का चेहरा काला करने की परंपरा लगातार मजबूत हो रही है। अब तो सीबीआई, ईडी, आईटी जैसे विभागों के जरिए ऐसा रंग लगाया जाता है कि विपक्षी नेता चौकड़ी भूल जाते हैं। गेहूं के साथ घुन भी पिसता है। इसी तरह नेताओं के चक्कर में दूसरे लोग भी इसकी चपेट में आ जाते हैं और अपना बदसूरत चेहरा छिपाए घूमते रहते हैं। जादूगरी यह है कि बेनूर हुए नेता जब सत्ता से जुड़ते हैं, तो उनके चेहरे फिर से चमकने लगते हैं। असल में पार्टी बदलने पर चेहरा उजला करने की कला ने नया रूप ले लिया है। ऐसी वाशिंग मशीन ईजाद कर ली गई है कि दागदार नेता मिनटों में बेदाग हो जाते हैं। कल के घोटालेबाज सत्ता की गोद में बैठकर पवन—पावन मान लिए जाते हैं। विपक्ष चिल्लाता है- वाशिंग मशीन चल रही है। सत्ता से जुड़े नेता ठहाका लगाते हैं, यह सब देशहित में हो रहा है। दलबदलू नेताओं के लिए पुराने भाषण जरूर मुसीबत बन जाते हैं, लेकिन वे पहुंचे हुए महात्मा की तरह कभी विचलित नहीं होते। कल तक जिस दल पर कीचड़ उछाल रहे थे, आज वे ही उस दल में आकर अपना अहो भाग्य मान रहे हैं। वे अब बेशर्मी से कह रहे हैं- पहले भ्रम में था, अब आंखें खुल गई हैं। राजनीति में तरक्की का रास्ता यही है। यानी दिल खोल कर काला रंग या कीचड़ उछालना सीखो। जरूरत पड़े तो जिस पर कीचड़ उछाला है, उसे साफ करने से भी मत झिझको। वैसे भी राजनीति में सफल नेता वही माना जाता है जो सिद्धांत बदलने में माहिर हो। ये दलबदलू चेहरे मौका पड़ने पर अपने पुराने साथियों पर ऐसा रंग लगाते हैं कि लोग दंग रह जाते हैं। सदनों में भी आजकल लठमार होली को मात देता हुड़दंग नजर आता है। हाल ही ऐसा हुआ कि हुड़दंगियों के डर से प्रधानजी सदन में ही नहीं गए। होली पर डर के मारे हम भी घर पर ही दुबके रहते हैं, लेकिन समस्या यह है कि राजनीति में 365 दिन चलने वाली होली के दौरान कोई कब तक छिपकर बैठ सकता है।

प्रतिभाओं के लिए अवसर

चुनावी मौसम में यह हुड़दंग चरम पर होता है। विपक्ष घोटालों के वीडियो उछालता है। नेता बेशर्म मुस्कान बिखेरते हुए कहते हैं- फंसाया गया था, अब सच्चाई सामने आ गई। रैलियों में खूब कीचड़ उछलता है। विपक्ष चीखता है- देश को बेच दिया, सत्ता से जुड़े नेता कहते हैं- देशद्रोहियों से सावधान रहो। जो सबसे ज्यादा कीचड़ उछालता है, उसे चुनाव में आगे माना जाता है। इसलिए आजकल कीचड़ उछालने के लिए करोड़ों रुपए खर्च करके एजेंसियों की मदद भी ली जाती है। ये एजेसियां बाकायदा रिसर्च करके प्रतिद्वंद्वियों का चेहरा बिगाड़ने के लिए कई तरह के कीचड़ तैयार करती हैं। कीचड़ से चांदी कूटने की यह कला प्रतिभाओं को खूब आकर्षित कर रही है। देश के लिए यह वाकई गर्व की बात है कि अब तो आईआईटी से निकले युवा भी कीचड़ तैयार करने के इस महान काम में लगे हुए हैं और अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं।

राजनीति की होली के आगे असली होली का रोमांच फीका पड़ रहा है। इसके बावजूद परंपरागत होली के हुड़दंगियों को निराश नहीं होना चाहिए, उनके लिए राजनीति में असीमित अवसर बन रहे हैं। ऐसी प्रतिभा के धनी लोगों को एक बार राजनीति में अपना भाग्य जरूर आजमाना चाहिए। उनके लिए हर दल के द्वार खुले हुए हैं। संकोच छोड़िए और राजनीति के हुड़दंग में अपनी प्रतिभा का कमाल दिखाइए।लेकिन, गंभीर प्रश्न तब खड़े होते हैं जब इस आवश्यक प्रक्रिया को लागू करने में भारी विसंगतियां और जल्दबाजी दिखाई देती है। चुनाव आयोग ने बिहार विधानसभा चुनाव से ठीक पहले एसआईआर कराया था, उसमें कई गड़बड़ियां देखने को मिली थीं। बिहार में जिस समय एसआईआर कराया जा रहा था, उस समय आधे से ज्यादा बिहार बाढ़ से बेहाल था। बीएलओ मतदाताओं तक नहीं पहुंच पाए थे। इससे करीब 69 लाख मतदाताओं का नाम कट गया था। कई जगहों से वर्षों पूर्व मृत लोगों के नाम भी मतदाता सूची में दर्ज थे, उन्हें हटाया नहीं जा सका है। बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की छप्परफाड़ जीत में अन्य कारणों के अलावा एसआईआर को भी बड़ी वजह माना जा रहा है। अब 12 राज्यों में हो रहे एसआईआर में भी वही जल्दबाजी दिखाई जा रही है। आयोग की मसौदा (प्रारंभिक) सूची में करीब 6.50 करोड़ मतदाताओं का नाम नहीं है। यही नहीं, काम के दबाव में 77 से अधिक बीएलओ ने आत्महत्या कर ली है। कई बीमार हैं तो कइयों की शादी टूट गई।

ABOUT GALTER

GALTER is a unique dedicated Research Oriented Educational Academy with Global Foot Prints & focus on interface of emerging highly disruptive technologies, deep tech ecosystem and promoting their effective ethico-legal framework policy & governance model.

The GALTER is an experienced pool of 200+ experts from Education, Law, Science & Technology, Management, judiciary & other inter-ralated sectors

VISION

Recreating innovative global tools and techniques towards harmonization of emerging technologies and their best application through robust ethico-legal framework.

MISSION

To promote world class research & educational services for better understanding and application of the emerging technologies and their regulation.

CONTACT US
ATLEG
GALTER MEGA GLOBAL SUMMIT ATLEG-2026
Advance Technologies, Laws,
Ethics and Governance

ATLEG-2026 Directorate

SUMMIT DIRECTOR
PROF. Dr. M.K. BHANDARI
Tulip - 37, L&T Serene County, Gachibowli,
Hyderabad- 500032, Telangana - India
profmkbhandari@galter.in
profmkb.law@gmail.com
+91 9167724112, +91 8879986206
www.galterprofmkb.org.

Advocate
VIPIN RAJ
Hyderabad
+91 8885321555

MS Priyanka Vaidhyanath
Bengaluru

Dr. Anil Singh
Hyderabad
+91 8885581060

Dr. JOSINA RODRIQUES
USA

LIMITED SEATS... HURRY UP FOR REGISTRATION

International Knowledge Associates

PARTNERS & ASSOCIATE
Knowledge Partners- Indian

नोटों की पिचकारी

फागुन में लोग गुलाल से सराबोर होते हैं, पर बीकानेर में एक जनाब ऐसे निकले जिन्होंने नोटों से ही होली खेल डाली। तनख्वाह थी कनिष्ठ सहायक की, मगर कमाई ऐसी कि आंकड़े भी रंग बदल लें! गांव में भाई पसीना बहाएं, और इधर तिजोरी ऐसे फूले जैसे भांग चढ़ी हो। कहते हैं होली पर बुराई का दहन होता है, पर यहां तो लगता है ईमान ही होलिका में आहुति बन गया। सोना-चांदी, मकान,प्लॉट, गाड़ियां। मानो फागुन ने सीधे खजाना बरसा दिया हो। अबीर कम उड़ रहा है, कारस्तानियों की धूल ज्यादा। होली के रंग दो दिन में उतर जाते हैं, मगर ऐसे रंग साबुन से नहीं छूटते। फर्क बस इतना है आम आदमी की पिचकारी में पानी होता है, और कुछ खास लोगों की पिचकारी में प्रगति की मोटी धार। फागुन का यह रंग थोड़ा ज्यादा ही चटख निकला!

पेंशन के रंग की प्रतीक्षा

होली की आहट है, लेकिन जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के सेवानिवृत शिक्षक और कर्मचारी इस बार रंगों से ज्यादा बैंक संदेश का इंतज़ार कर रहे हैं। जिन हाथों ने दशकों तक ब्लैकबोर्ड पर भविष्य लिखा, वे आज पासबुक के पन्नों में वर्तमान तलाश रहे हैं। गुरुजन मज़ाक में कहते हैं इस बार गुलाल कम, धैर्य ज़्यादा उड़ाएंगे और गुझिया की जगह आश्वासन परोसेंगे। मोहल्ले में लोग पूछते हैं, होली की तैयारी कैसी है? वे मुस्कुरा कर कहते हैं, बस पेंशन का रंग चढ़ जाए तो सब तैयारी पूरी समझो। विडंबना देखिए, जिन्होंने विद्यार्थियों को समय की पाबंदी और जीवन के मूल्य सिखाए, वे स्वयं समय पर भुगतान की प्रतीक्षा में हैं। दवाइयों की पर्चियां भी अब त्योहारी सूची का हिस्सा बन गई हैं, और घर के बजट में रंगों की जगह गणित का कठिन सवाल खड़ा है। फिर भी आशा जीवित है। शायद इस होली सूखे खातों में भी रंग उतर आएं और सेवानिवृत शिक्षक-कर्मचारी सचमुच कह सकें, अबकी होली सच में रंगों वाली है।

राख में भीगता फागुन

होली के माहौल में रंग, गुलाल और हंसी की बातें होनी चाहिए, पर भिवाड़ी की उस अवैध पटाखा फैक्ट्री ने फागुन को भी स्याह कर दिया। यहां रंग नहीं, बारूद पिसता था; अबीर नहीं, राख उड़ती थी। गेट पर ताला ऐसे जड़ा रहता जैसे सच पर पहरा हो। भीतर मजदूर जिन्हें 20-30 हजार की रंगीन उम्मीद दिखाकर बुलाया गया। बारूद के ढेर पर अपना आज लिख रहे थे, कल किसी ने नहीं सोचा। कहा जाता है कि कच्चा माल दूर देश से आता था, पर संवेदना का माल शायद कहीं अटक गया। फैक्ट्री में ही खाना-सोना मानो इंसान नहीं, पटाखों की तरह पैक कर दिए गए हों। धमाका हुआ तो सिर्फ दीवारें नहीं टूटीं, कई घरों की होली भी बुझ गई। पास-पास दो गोदाम और जैसे लालच ने अपने रंगों के लिए अलग-अलग पिचकारियां रख छोड़ी हों। फागुन की हवा पूछ रही है। क्या हमारी खुशियों की चिंगारी किसी और की चिता से आती है? इस बार होली पर रंग लगाते समय याद रहे, असली उत्सव तभी है जब हर घर सुरक्षित हो, हर मजदूर जिंदा हो।

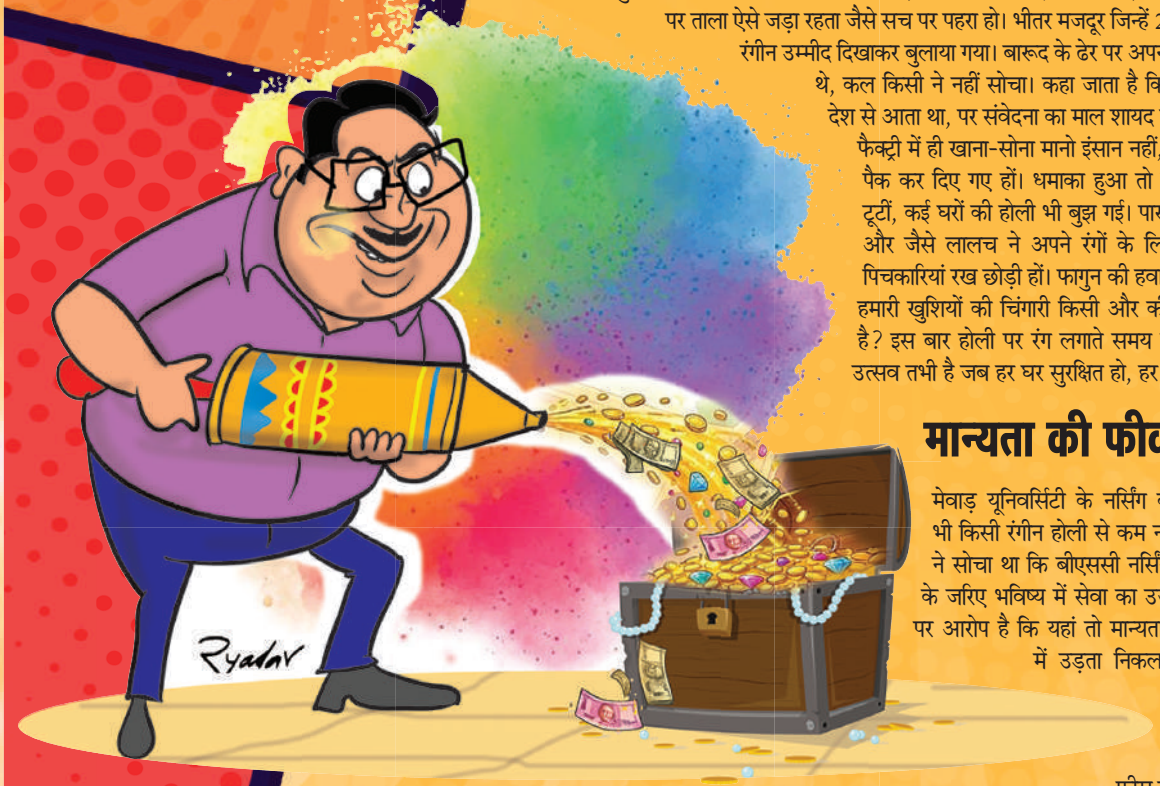

मान्यता की फीकी होली

मेवाड़ यूनिवर्सिटी के नर्सिंग कोर्स की कहानी भी किसी रंगीन होली से कम नहीं लगती। छात्रों ने सोचा था कि बीएससी नर्सिंग और जीएनएम के जरिए भविष्य में सेवा का उजला रंग मिलेगा, पर आरोप है कि यहां तो मान्यता का रंग ही हवा में उड़ता निकला। विज्ञापन ऐसे चमके जैसे होली की पिचकारी, और छात्रों ने फीस का गुलाल खुशी-खुशी उड़ा दिया। अब जब रंग उतरने लगा तो पता चला कि मान्यता का रंग कुछ फीका है। छात्र थाने की चौखट पर पहुंचे, मानो होली की हुड़दंग के बाद सफाई अभियान शुरू हो गया हो। जिम्मेदार पदाधिकारी भी शायद सोच रहे होंगे कि यह कैसी होली है जिसमें रंग से ज्यादा सवाल चिपक गए। फागुन सिखाता है कि रंग खेलो, पर असली रंग भरोसे का होता है और जब भरोसा फीका पड़ जाए, तो कोई भी पिचकारी उसे दोबारा गहरा नहीं कर पाती।

▪ बलवंतराज मेहता, वरिष्ठ व्यंग्यकार

रंग, अबीर और तंज

हरीश मलिक, लेखक और वरिष्ठ व्यंग्यकार

फागुन की फिजाओं में होली की मस्ती बिखरी है। इसमें रंगों की महक है तो गुझिया की खुश्बू समाई है। उल्लास, संस्कृति और परंपरा में पगे राधा-घनश्याम हैं तो मर्यादा के रंगों में रंगे सिया-राम भी हैं। यह रंगीला महापर्व दुश्मन को भी गले मिलकर दोस्त बनने के लिए प्रेरित करता है। खूब हंसी-ठिठौली होती है, कोई बुरा नहीं मानता। इसी महा-मस्ती के बीच कलम ने भी भांग के दो गिलास चढ़ा लिए हैं और मदमस्त होकर ना जाने किस-किस पर कैसे बोल-बचन लिख रही है। हमें भी कहना ही पड़ेगा- बुरा ना मानो होली है!

पाक और टीम

होली आई, रंग उड़े, क्रिक्रेट मैदान भी था तैयार,
पर पड़ोसी की किस्मत निकली फिर से लाचार।
कहते थे 'बॉयकॉट' बेहतर, बचेगी इज्जत सारी,
हार की गुलाल उड़ी, खाली रह गई पिचकारी।
'बंद मुट्ठी लाख की' ये कहावत याद ना आई,
खुलते ही स्कोरबोर्ड ने सारी औकात बताई।
आईसीसी की खैरात का सपना भी धुल गया,
मैदान में खेल कम, बहानों का रंग घुल गया।
सूर्या की सेना ने ऐसा रंग लगाया इस बार,
हरी जर्सी पर चढ़ा, मेन इन ब्लू का बुखार।

राहुल

हर चुनाव के बाद युवराज का मूड बदल जाता है,
हार की चुभन में लोकतंत्र साजिश नजर आता है।
एसआईआर से लेकर अप्रकाशित किताब तक,
सेना, संसद, संविधान सब पराया नजर आता है।
जनता क्यों उनके उम्मीदवारों को सदाएं देती है।
मेरी मां से पूछो, वो अब तक मेरी बलाएं लेती है।
जमीनी रणनीति गायब है, ट्विटर पर गर्मी सुपरहिट,
कहते हैं ये जनता ही समझ नहीं पाई मेरी स्क्रिप्ट!
राहुल पिचकारी लेकर बोले, मोहब्बत की होली खेलेंगे,
कार्यकर्ता पूछ बैठे, हम जीत की होली कब खेलेंगे?

प्रियंका वाड्रा

गाल पर गुलाल लगा आईने में देख इतराई,
मैं तो इंदिराजी से कोई कम तो नहीं भाई!
फिर अबीर नहीं, जमकर बयान उछाले
गुलाल नहीं, सरकार पर कीचड़ मारे।
पति पर आरोपों की पिचकारी चले,
डियर ब्रदर पर हार की बौछार पड़े,
पर दीदी कहें दोनों मासूम हैं, भोले हैं,
जनता क्यों हार के तराजू पर तोले है।
वो दिन दूर नहीं जब मेरा भाई छाएगा
जनता पूछे तुम्हारा नेतृत्व कब आएगा?

मोदी : सिंदूर

होली आई, गुलाल उड़ा, संदेश गया सरहद पार,
मोदी बोले, अब रंग नहीं, जवाब होगा हर बार।
ऑपरेशन सिंदूर चला तो बदला मौसम का मिजाज,
उधर खोखली बयानबाजी, इधर सटीक था अंदाज।
मैदान में करारी हार मिली, सरहद पर भी फटकार,
आतंक के घर में घुसकर गूंजी मोदी की ललकार।
यहां ढोल आत्मविश्वास के, वहां बहानों की बहार,
हुंकार का रंग गहरा था, फीकी पड़ी हर तकरार।
अब अबीर-गुलाल नहीं, ललकार में खून बहता है,
ये नया भारत रंग और रण दोनों खूब खेलता है।

भजनलाल

होली आई, भजन गाए, "रंग जमाएंगे हर बार",
विपक्षी बोले "अरे ये तो है पर्ची वाली सरकार"
दिल्ली दरबार से आई थी जैसे रंगों की पोटली,
राजस्थान में खुली तो भरी सियासत की झोली।
कुर्सी नई, जोश नया, और अंदाज भी सधा-सधा,
रंग कम, काम ज्यादा, यही है उनका व्रत बड़ा।
कहते हैं अब "डबल इंजन" से दौड़ेगा पूरा प्रदेश,
रंगदार चौतरफा विकास से मिटेगा हर क्लेश।
इधर नौकरी की पिचकारी, उधर किताब की बात
भजन अबीर लगा बोले, "हम काम से देंगे जवाब।"

ममता बनर्जी

रंगीली होली आई, दीदी लाई रंगों की पूरी थाली,
पर चुनावी हवा चली तो उड़ गई सियासी लाली।
बीजेपी का नाम सुनते ही फीका पड़ जाए गुलाल,
बोलीं डर कैसा?, पर बढ़ गई दर्दे-दिल की चाल।
घुसपैठ की पिचकारी से वोटों का जोड़-घटाना,
तुष्टिकरण की बाल्टी में घुसपैठियों का ठिकाना!"
हर रैली में रंग बदलें, जैसे मौसम का मिजाज,
कभी मां-माटी पिचकारी, कभी मानुष का राज।
दीदी की होली में हर रंग का है अलग हिसाब,
जनता बोली, अब रंग नहीं, चाहिए साफ जवाब!"

होली आई तो बोले गहलोत "मैं हूं खांटी रंगदार!",
चुनावी नतीजों ने कर दिया सारा भेद तार-तार।
जादूगरजी के रंगों में अनुभव की है गहरी छाया,
हर चाल में राजनीति, हर दांव में नित-नई माया।

गहलोत

कुर्सी की पिचकारी थामी, रंगते रहे दरबार,
पर जनता ने इस बार धो डाली पूरी सरकार।

पायलट संग होली हर साल थोड़ी तकरार वाली,
गुलाल कभी बयानबाजी की पिचकारी खाली।
हाईकमान की थाली में रखते रहे रंगों का हिसाब,
दिल्ली की ओर देख-देख कर बदलते रहे जवाब।

जय भाजपा, विजय भाजपा सबका साथ, सबका विकास

केबिनेट मंत्री श्री अविनाश गहलोत का साथ, जैतारण में विकास ही विकास

विकास के पथ पर वार्ड संख्या- 18

- **जैतारण नगर पालिका क्षेत्र के वार्ड संख्या 18 में विकास कार्यों की जड़ी**
- **पार्षद का गजेन्द्र गहलोत के विकास कार्य छाए**
- **पार्षद गजेंद्र गहलोत ने सफलतम कार्यकाल के लिए मंत्री अविनाश जी गहलोत व जनता का जताया आभार... पार्षद गजेंद्र गहलोत के प्रयास लाए रंग**

श्री अविनाश गहलोत,
कैबिनेट मंत्री, राजस्थान सरकार

जैतारण (ब्यावर)। राजस्थान सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के केबिनेट मंत्री व जैतारण विधानसभा के लोकप्रिय विधायक श्री अविनाश जी गहलोत की अनुशंसा पर ब्यावर जिले के जैतारण नगर पालिका के वार्ड संख्या 18 की पार्षद गजेन्द्र गहलोत के अथक प्रयासों से वार्ड संख्या 18 में विकास कार्यों की भरमार रही। करोड़ों रुपए के विकास कार्य करवाकर वार्डवासियों को राहत पहुंचाई।

पार्षद गजेंद्र गहलोत की लोकप्रियता व विकास कार्य की लगन को देखते हुए हर कोई उनकी सराहना कर रहा है। वार्ड संख्या 18 में सीसी ब्लॉक निर्माण, सीसी सड़क निर्माण सहित कई विकास कार्य करवाए गए। जैतारण नगर पालिका के वार्ड संख्या 18 के पार्षद गजेन्द्र गहलोत का 5 वर्षीय सफलतम कार्यकाल विकासमय रहा। गजेंद्र गहलोत उभरते हुए युवा नेता व समाजसेवी है। जैतारण में समाज सेवा में भी वे आगे रहते हैं। जैतारण विधायक व कैबिनेट मंत्री अविनाश जी गहलोत की अनुशंसा व प्रयासों से लगातार जैतारण नगर पालिका क्षेत्र में विकास कार्यों की जड़ी लगी है। अपने 5 साल के सफलतम कार्यकाल पर पार्षद गजेंद्र गहलोत ने मंत्री श्री अविनाश गहलोत व जनता का आभार व्यक्त किया है।

वार्ड संख्या- 18 में विकास कार्यों की भरमार

- विद्यायक कोष से मुख्य सड़क पर 5 लाख रुपए लागत की पाईप लाईन स्वीकृत
- वार्ड संख्या 18 में दाल मिल से राजू-जी के मकान तक सीसी सड़क निर्माण कार्य- 36.28 लाख रुपए
- जगदम्बा किराना स्टोर से हाइवे तक सीसी सड़क- 22.38 लाख रुपए
- राजू जी प्रजापत के मकान से गणपत जी जांगिड़ मकान तक सीसी सड़क- 9. 99 लाख रुपए
- दुर्गा राम जी सीरवी के मकान से हाइवे तक सीसी सड़क का निर्माण का निर्माण- 18 लाख रुपए
- भैरुजी मंदिर से राजू जी के मकान तक नाला निर्माण का नवीनीकरण- 22 लाख रुपए
- अनिल जी जांगिड़ के मकान से लक्ष्मीनारायण जी के मकान तक सीसी सड़क का निर्माण - 22 लाख रुपए
- महेन्द्र जी जांगिड़ के मकान से प्रकाश जी तंवर के मकान तक सीसी सड़क का निर्माण- 22 लाख रुपए
- पुरुषोत्तम जी वैष्णव के मकान से रामलाल जी तंवर के मकान तक सीसी सड़क- 13.57 लाख रुपए
- प्रज्ञा नगर कॉलोनी में संपूर्ण सड़क निर्माण- 40 लाख रुपए
- गायत्री मंदिर में सीसी ब्लॉक लगवाई- 10 लाख रुपए
- ओम जी चौहान के मकान से सोहन लाल जी के मकान तक सीसी सडक निर्माण - 8.50 लाख रूपए
- वार्ड संख्या 18 में विभिन्न स्थानों पर सीसी सड़क निर्माण कार्य -10 लाख रुपए
- अग्रवाल एजेंसी के मकान से भगवान सिंह जी के मकान तक सीसी सड़क निर्माण कार्य- 19 लाख रुपए
- दिनेश जी के मकान से जंवरीलाल जी भाटी के मकान तक सीसी सड़क निर्माण कार्य- 10 लाख रुपए
- राजू जी सोलंकी के मकान से हनुमान जी के मकान तक सीसी ब्लॉक निर्माण कार्य- 12.70 लाख रुपए
- ढगल जी कुमावत के मकान से मोहनलाल टांक और मंगल सैन के मकान तक सीसी सड़क निर्माण कार्य - 10.82 लाख रुपए
- कालू जी बागड़ी निमाज रोड पर सीसी ब्लॉक लगवाएं - 4.98 लाख रुपए
- घेवर जी मिस्त्री के मकान से हरजी जांगिड़ के मकान तक सीसी सड़क निर्माण कार्य- 10 लाख रुपए
- धनश्याम जी पहाड़िया (जीम सेन्टर वाली गली निमाज रोड पर विकास कार्य- 8.9 लाख रुपए
- मोहन लाल जाट के मकान से गायत्री मंन्दिर के मेन रोड़ तक सीसी सड़क- 6.57 लाख रूपए

आंगनबाड़ी स्वीकृत, पुरानी बिजली लाइनों को नए ट्रांसफार्मर से जोड़ा

वार्ड संख्या 18 में विधायक अविनाश जी गहलोत की अनुशंसा व पार्षद गजेंद्र गहलोत के प्रयासों से राज्य सरकार ने आंगनबाड़ी स्वीकृत की है। साथ ही वार्ड संख्या 18 में पुरानी बिजली लाइनों को नए बिजली ट्रांसफार्मर से जोड़ा गया है। गायत्री मंदिर में भी नया ट्रांसफार्मर लगाया गया है। इससे वार्ड वासियों को बिजली की कम वोल्टेज की समस्या से राहत मिलेगी।

ठहाकों की ओवर डोज़

डॉ कीर्ति काले, वरिष्ठ साहित्यकार

जैसे जैसे ठहाकों के धंधे ने उछाल दिखाया है वैसे-वैसे आत्महत्या करने वालों की संख्या में बूम आया है।

आप पूछेंगे कैसे?

मैं बताती हूं ऐसे।

एक आदमी आत्महत्या करके मरा। मरकर सीधे स्वर्ग में गिरा। वैसे एनटाइटिल वो नरक के लिए ही था, लेकिन आतंकवाद के चलते नरक हाउस फुल चल रहा था। वहां मूढ़ा डालकर बैठने तक की जगह नहीं थी। एक टांग पर भी नहीं हुआ जा सकता था खड़ा। इसलिए यमराज को मजबूरन उसका टिकिट अपग्रेड करना पड़ा।

स्वर्ग के काउंटर पर रखे रजिस्टर में नवागंतुक को अपना विवरण भरना था। नाम, उम्र आदि के साथ आत्महत्या करके मरने का कारण विस्तारपूर्वक लिखना था। एक मिनिट के लिए उसने सोचा, सिर खुजाया और मरने का कारण लिया खोज। रजिस्टर में लिख दिया आत्महत्या करके मरने का कारण 'ठहाकों की ओवरडोज़'।

काउंटर पर खड़ी टकाटक अप्सरा ने आदमी की मंशा नजरों के स्कैनर से तौली फिर मुस्कुराते हुए बोली-

पहली बार सुनी है यह बात।

ठहाकों की ओवर डोज़ से मरने की करामात?

आदमी ने बताई अपनी कथा। उस कथा में छिपी थी प्रत्येक संवेदनशील, कला प्रेमी व्यक्ति की व्यथा।

उसने अपने जीवन की रील को खोला और लम्बी सांस लेते हुए बोला-

आजकल धरती पर ठहाकों का कारोबार जोरों पर है। जिस तरफ़ आंखें जाती हैं उस तरफ हंसा- हंसाकर लोटपोट कर देने की गारंटी देने को आतुर हास्यावतारों की बेढंगी सूरतें नजर आती हैं। समझ में नहीं आता कि ये हंसाना चाहते हैं या फंसाना चाहते हैं। हंसाते- हंसाते फंसाने और फंसाते- फंसाते हंसाने में फर्क किंचित है।

हंसाने की गारंटी पक्की हो न हो पर फंसाने की गारंटी निश्चित है।

हुआ यूं..

मैं जिन्दगी में उदास था। उदासी को दूर करने के लिए टीवी किया ऑन। अट्टहास करते हुए प्रकट हो गया कॉमेडी का डॉन। घिसे घिसाए चुटकुलों पर सैक्स के तड़के। लड़कियों के वेश में दाढ़ी- मूंछों वाले लड़के। शो पूरी तरह था आत्मनिर्भर। ठहाके बेचे जा रहे थे शेंपू और तेल के विज्ञापनों की शीशियों में भर-भरकर।

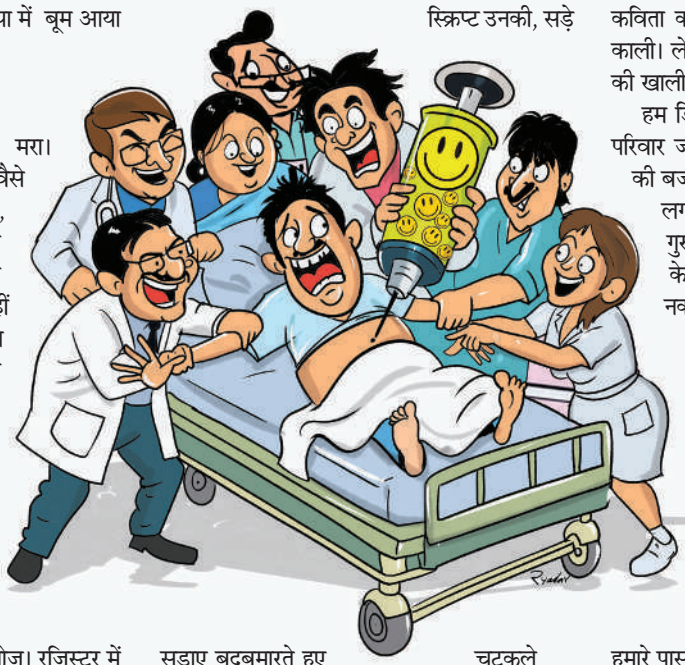

स्क्रिप्ट उनकी, सड़े चुटकुले सड़ाए बदबूमारते हुए उनके, कलाकार उनके और तो और बुक्का फाड़कर ठहाके लगाने वाले भी उनके। नकली ठहाकों के बॉम्बारमेंट से घायल होकर मेरा मन अधिक उदासी की ओर चल दिया। घबराकर मैंने चैनल बदल दिया।

न्यूज़ चैनलों का तो और भी बुरा था हाल। बदली-बदली थी हर एक की चाल- ढ़ाल। सारे चैनल दस दिनों से एक ही न्यूज़ को एक्सक्लूजिव कहकर बता रहे थे। यहां भी कुछ हास्य कलाकार समाचारों में ठहाकों का बेस्वाद तड़का लगा रहे थे। झुंझलाकर हमने टीवी कर दिया बन्द। सोचा पार्क में जाकर खुली हवा का लेते हैं आनन्द।

लेकिन पार्क की हवा में भी मार्केटिंग का प्रदूषण घुला था। हरी घास पर ठहाकों का पूरा बाजार खुला था। अनुलोम-विलोम के साथ आकर्षक पेकिंग और पेकेजिंग में कृत्रिम ठहाकों के इंजेक्शन लगाए जा रहे थे। हम जैसे नए मुर्गे फंसाए जा रहे थे। तभी हमने देखा बेहतरीन शिकार जानकर उनके कुछ डीलर हमारी ओर भी आ रहे थे। दिल जोर- जोर से धड़कने लगा। उदासी का काला बादल हमारे पूरे वजूद को ढ़कने लगा।

तभी मन में आशा की किरण जगी। कविता ही डूबते को तिनके का सहारा लगी। पूरी तरह उदासी में नहाए, हम कवि सम्मेलन सुनने आए। सोचा था हृदय की बन्द कली खिलेगी। कविताएं सुनकर जीने की प्रेरणा मिलेगी। लेकिन ऐसा लग रहा था यहां सभी भंग खाए हुए हैं। कवि सम्मेलनों के मंचों पर कवियों के स्थान पर कॉमेडी शो के जोकर बुलाए गए हैं। कविता की एक पंक्ति की चाह में पूरी रात कर दी काली। लेकिन मुझ कविता प्रेमी की झोली रही खाली की खाली।

हम डिप्रेशन की अंधी गुफा में समाते जा रहे थे। परिवार जन हमारे पास बैठकर हमसे दो बातें करने की बजाए हमें हंसाने के लिए तरह- तरह की जुगत लगा रहे थे। मोटिवेशनल स्पीकरों, आध्यात्मिक गुरुओं और संगीत के कार्यक्रमों में हमें सुकून के लिए जबरन धकेला गया। प्रत्येक जगह नकली ठहाकों का दंश मिला नया।

जीवन में एक ऐसा क्षण आया कि आयातित ठहाकों के आतंक से आतंकित होकर हमने सोचने समझने की शक्ति गंवा दी। भड़भड़ाहट में दसवें माले से छलांग लगा दी।

हमारी क्षत- विक्षत मृत देह जमीन पर पड़ी थी। परिजनों, रिश्तेदारों के साथ- साथ अड़ौसियों पड़ौसियों की भीड़ हमें घेरे खड़ी थी। हम सोच रहे थे कि यदि जीते जी ये हमारे पास होते तो हम असमय अपने प्राण क्यों खोते। हमें आवश्यकता थी अपनों के साथ की,पीठ पर रखे तसल्ली भरे हाथ की। दो घड़ी बतियाने की। मन की पीड़ा सुनने सुनाने की। उदासी के भंवर में फंसे हुए हम रोने के लिए एक अदद विश्वसनीय कन्धा ढूंढ़ रहे थे और ठहाकों के व्यापारी हमारी बेबसी में भी धन्धा ढूंढ़ रहे थे।

वो दिन कब लौटेंगे जब होगी कवि सम्मेलनों में काव्य की महक, संगीत में सुरों की चहक, कथावाचकों में आध्यात्म की गमक, मोटिवेशनल्स में प्रेरणा की धमक।

जब कृत्रिम ठहाकों की दुकानों पर ताला लगेगा तभी नैसर्गिक हंसी का सुवासित पुष्प खिलेगा।

जब तक ऐसा नहीं होता तब तक आत्महत्या करने वालों की संख्या बढ़ेगी रोज़

कोई जान भी नहीं पाएगा कि मरने का कारण है ठहाकों की ओवर डोज़।

सभी प्रदेशवासियों को

होली

की हार्दिक शुभकामनाएँ

स्वर्गीय कमला बुआ

स्वर्गीय मीना बुआ

गादीपति सरोज मासी

किन्नर गादीपति सरोज मासी की ओर से

समस्त प्रदेशवासियों को रंगों के पावन पर्व होली की हार्दिक शुभकामनाएं।

रंगों का यह उत्सव आपके जीवन में सुख, समृद्धि, सौहार्द और उल्लास के नए रंग भर दे।

होली के पावन अवसर पर आपसी प्रेम, भाईचारा और सामाजिक सद्भाव और भी प्रगाढ़ हो।

इसी मंगलकामना के साथ।

आप सभी को होली की ढेरों बधाइयाँ एवं शुभेच्छाएँ।

गादीपति सरोज मासी मो. 9636273043

घंटाघर सकड़ी गली, हिजड़ों की हवेली,

जोधपुर 342001

होली पर बेरंगा व्यंग्य। आओ जन्नत के वजीर के एक्स जीजू से मिलें।

जब भाषण लिखने वाले को पड़े कोड़े

अमित शर्मा, ✍ लेखक

चैट जीपीटी, जैमिनी और ग्रोक... जैसे तमाम ओपन एआई टूल में अपनी आसान जिंदगी तालाश करने वाले अभागों, कुछ देर तुम्हें व्यंग्य की सैर कराएं। कसम तुम्हें अपने पहले प्यार की.. दूर रख दो थोड़ी देर अपना ओवरस्मार्ट फोन।

इस बार की होली, क्या होली है। एकदम प्रसन्नचित्त कर देने वाली। होली से पहले होली की तैयारी देखने गुलाबी राजधानी की सैर करने निकला। कितने जिम्मेदार नागरिक हैं, इस शहर के! पुराना शहर सरकार ने गुलाबी कर रखा है, बाकि जयपुर को लोगों ने। किसी दीवार का कोना न छोड़ा, चलती सड़क पर भी मुओं ने भर भर के मुंह खोला... सच में रियल पीक सिटी...।

सचिवालय में गजब हाल। एसआईआर के पन्नों में चुनाव आयोग के बाबू दबे पड़े हैं। दिल बचाने को खून पतला करने की गोली खा खा कर वोटर लिस्ट फाइनल होनी है..। क्लास फोर्थ से प्रमुख सचिव के दफ्तर तक में पंचायती चल रही है, निकाय की। पर वन नेशन वन इलेक्शन फार्मूले की तर्ज पर सन्नाटा...। अब राजधानी के नेताओं के गलियारे की और बढ़ते हैं..। गुलाबी नगर की द्रव्यवति नदी में स्नान और आचमन के बाद देखें, इनके तेवर कैसे हैं...।

सीएमओ की ओर बढ़े तो भाषण लिखने वाले को कोड़ों से पीटा जा रहा था। चार अफसर लगे थे खाकी से दंड बरसाने..। कोई एक दिन तो ऐसा भाषण लिख कि फंबल न हो। गलती यह नामुराद करता है, रील साहब पर बन जाती है। दूदू वाले डिप्टी साहब के दफ्तर की तरफ बढ़े तो उनकी कुर्सी पर उनके सुपुत्र विराजे। पता चला पापा रशिया न चले जाएं, इस खातिर माताजी रोज लाडले को साथ कर देती हैं। उफ... दूसरी डिप्टी के कमरे की तरफ बढ़े तो एडीसियों की फौज में सचिवालय कैद। हुकुम तक पहुंचें तो कैसे, चलो टूरिज्म के किसी कार्यक्रम में मिल लेंगे, वैसे भी दर्शक वहां आते नहीं, मुलाकात आसान रहेगी।

उद्योग मंत्री कम खेल मंत्रीजी के कैबिन में झांका तो वो शीशे के सामने रिहर्सल करते दिखे। कह रहे थे- चैलेंज देता हूं.. एक भी पेपर लीक नही हुआ..। हमने पूछा अजी अपने महकमे की कहो, जितने निवेश कहे थे उतने हुए क्या..? फिर वही राग.. 'चैलेंज देता हूं.., एक भी निवेश हुआ क्या.. ओह सॉरी.. एक भी पेपर लीक हुआ क्या..?'

हमें लगा शूटर आदमी है, बंदूक उठा ले, उससे पहले निकल लो..। फिर हम बढ़े हेल्थ वाली मिनिस्ट्री की ओर.. मूंछों पर ताव के चक्कर में दद्दा अस्पताल जाना भूल गए.. जिसके लिए ताव दिए वही कमीशन के स्टिंग में खेल गए। बढ़े हम जल मंत्री की ओर तो। बस बालाजी की धुनी चल रही।

आरती हो रही.. कि इस बार भी बालाजी बारिश करा दें.. तो नल में पानी आता रहे..। अरे थांके नाम की भी आराधना कर लो.. फाग रो मौसम है.. फाग गाओ.. कानूड़ा ने रिझाओ...।

सचिवालय से बाहर आए तो पहली बार एमएलए बने बाबा ठेले वालों को धमकाते रील बनाते दिखे..। हमने नाम पूछा तो कहे- बवाल। आगे बढ़े तो तेज धूप में शेरवानी पहने एक बुजुर्ग बढ़ते दिखे। हमें लगा चच्चा की शादी है.. तभी बालों में खिजाब लगवाएं हैं। चेहरा दिखा तो ये तो पत्रकार कोटे वाले हमारे महानगरीय विधायक हैं। लगता है गिफ्ट में इतने शेरवानी के थान मिले, कि बस अब वही पहनते हैं।

होली के रंग ढूंढने निकले थे.. उबिया गए.. सत्ता से तो..। विपक्ष के कार्यालय की ओर बढ़े.. कुछ कौव्वे दिखे। अब भला विपक्ष के दफ्तर में क्या रौनक। वैसे भी नया दफ्तर बन रहा है.. जब बन जाएगा.. तभी रौनक लौटे.. अध्यक्ष जी गमझे को दुलार रहे थे। बोले- हम से ज्यादा ये चर्चा में हैं। वैसे भी उनके डुप्लिकेटों के भी गमझे मिलियन व्यूज ला रहे हैं। शाम होने लगी तो हम एंटरटेमेंट पैराडाइज की ओर बढ़ गए। वहां नेता प्रतिपक्ष के फैमेली फंक्शन की रौनक थी..। सत्ता वाले मंत्री भी गा रहे थे- जूली जूली जूली.. वहां हमें पिछली सरकार में निकम्मा और नालायक जैसे नए संसदीय शब्दों के सर्जक भी मिले। हमने कहा हे मारवाड़ के गांधी, विधानसभा से लेकर नरेगा विरोध धरनों में आप दिखते नहीं। वो मुस्कुराए, बोले- अबे होली के भाड़ू, अभी तो तीन साल बाकी हैं..। जब चुनाव आएंगे, तब हम नजर आएंगे। हमने साथी पत्रकारों के सामने झेंप मिटाई.. ये जो कहते हैं हमें तो समझ ही नहीं आता। इन्हें शहद और काली मिर्च खानी चाहिए।

पीछे से कश्मीर के वजीर के एक्स जीजू बाहर जाते दिखे। हमने दौड़कर बात करनी चाही, पर वो नाराज, बोले- तुम पत्रकार उन्हें ही घेरे रहते हो, हमारा नंबर कब आएगा। हमने कही- ये हम से ना, दिल्ली वाले तुम्हारे बुजुर्ग बैचलर से पूछो। वो और नाराज होकर चल दिए, फिर हमें याद आया वो भी तो इसी कतार में हैं कि मेरा नंबर कब आएगा।

खैर.., हम गए तो थे सबसे होली की रामा श्याम करने.. पर बात बिगड़ गई...। सचिवालय से दिल्ली तक सबको नाराज कर दिया.., पर दिक्कत की कोई बात नहीं..। हम कह कुछ भी आए हों, पूछ कुछ भी आए हों.. लिख कुछ भी दें. छपेगा वही, जो 'वो' चाहते हैं। यही रीत है। हमारा तो कहना है कि अब अखबारों, मैग्जीन पर साल में एक दिन नहीं, रोज लिखाना चाहिए..

बुरा न मानो होली है..!!

जहां रंग सीमाएं पिघलाते हैं और दिलों को जोड़ते हैं

रंगों का वैश्विक स्पर्श

हरीश मलिक, लेखक और स्तंभकार

होली का उत्सव केवल रंगों का खेल नहीं है। यह विविध संस्कृतियों को जोड़ने वाला मानवीय सेतु है। जहां रंग सीमाएं मिटाते हैं और हृदयों में अपनत्व तथा वैश्विक आत्मीयता का भाव जगाते हैं।

ब्रज की गलियों में जन्मी होली आज केवल भारत की सांस्कृतिक पहचान नहीं रही, बल्कि यह एक वैश्विक उत्सव बन चुकी है। प्रेम, समरसता और रंगों का यह पर्व अब महाद्वीपों की सीमाएं पार कर अमेरिका की सड़कों, यूरोप के चौकों, ऑस्ट्रेलिया के समुद्र तटों और अफ्रीका की बस्तियों तक अपनी रंगारंग खुशबू बिखेर रहा है। जहां कभी होली केवल भारतवासियों का पर्व माना जाता था, आज वही दुनिया के अनेक देशों में स्थानीय संस्कृति से घुल-मिलकर नए रंगों में खिल रही है। इन देशों ने होली को अपने अंदाज में अपनाया है। कहीं यह आध्यात्मिक उत्सव है, तो कहीं म्यूजिक कार्निवल और कहीं प्रवासी स्मृतियों का खुशनुमा पुनर्मिलन भी है। रंगों की यह वैश्विक यात्रा बताती है कि भारत केवल भाव-भूमि की धरती नहीं, बल्कि भावनाओं का विस्तार भी है। और होली उस विस्तार की सबसे रंगीन और खुशनुमा अभिव्यक्ति है।

भारत की होली केवल एक पर्व नहीं, भावनाओं का विस्फोट है। प्रेम का आलिंगन, वैर का विसर्जन और जीवन के रंगों का उत्सव। लेकिन यह जानकर आश्चर्य होता है कि दुनिया के कई देशों में भी होली जैसी परंपराएं हैं, जहां लोग रंग, पानी, फूल, फल या मुस्कान के जरिए जीवन के इस रंगायन का स्वागत करते हैं। हर सभ्यता ने अपने ढंग से बसंत का अभिनंदन किया है। कहीं पानी से, कहीं फूलों से, कहीं टमाटरों से तो कहीं संतरे बरसाकर। विदेशों में होली केवल रंगों का खेल नहीं, बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक सॉफ्ट पावर का जीवंत उदाहरण भी है। इसमें अब केवल भारतीय ही नहीं, बल्कि हर रंग, हर नस्ल और हर धर्म के लोग शामिल हो रहे हैं। बसंत के इर्द-गिर्द आने वाला मिलन का यह पर्व बता रहा है कि उत्सव की भाषा सार्वभौमिक होती है।

आज ब्रज की होली दुनिया को यह सिखा रही है कि जीवन रंगों से ही सुंदर है। जब गुलाल उड़ता है, तो सीमाएं धुंधली पड़ जाती हैं। जब ढोलक पर थाप बजती है, तो दिलों की दूरियां मिटने लगती हैं। शायद यही होली का सबसे बड़ा संदेश है- हम सब एक हैं। यह पर्व अब महासागरों को पार कर दुनिया के कई कोनों में प्रेम, सौहार्द और सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बन चुका है। आइए, जानते हैं कि ब्रज के ये रंग विदेशों की किन फिजाओं में घुल-मिल रहे हैं...

अमेरिका : न्यूयॉर्क से कैलिफोर्निया तक 'फेस्टिवल ऑफ कलर्स'

अमेरिका में होली खासतौर पर न्यूयॉर्क, सैन फ्रांसिस्को, लॉस एंजेलिस, मैनहट्टन, टेक्सास के ऑस्टिन और न्यू जर्सी में बड़े स्तर पर खेली जाती है। प्रोवो(यूटा) में आयोजित 'फेस्टिवल ऑफ कलर्स' सबसे प्रसिद्ध है, जहां हजारों लोग सफेद कपड़ों में रंग उड़ाते हैं। भारतीय प्रवासी समुदाय के साथ-साथ अमेरिकी भी टाइम्स स्क्वायर की होली में शामिल होते हैं। मंदिर परिसरों, विश्वविद्यालयों और खुले पार्कों में 'फेस्टिवल ऑफ कलर्स' के नाम से आयोजित होली कार्यक्रमों में योग, भजन, भारतीय भोजन और रंगों की बारिश इसे मल्टीकल्चरल कार्निवल बनाती है।

नेपाल : रंगों में घुलता भारतीय अध्यात्म

नेपाल में विशेष रूप से काठमांडू घाटी, भक्तपुर और पोखरा में भव्य रूप से रंगों की बौछार होती है। बसंतपुर दरबार स्क्वायर रंगों से भर जाता है। यहां होली केवल हिंदू पर्व नहीं, बल्कि सामाजिक मेल-जोल का उत्सव बन चुकी है। नेपाल में होली पर युवा वाटर गन और गुलाल लेकर सड़कों पर निकलते हैं और फागुन की मस्ती में सराबोर होते हैं। होली सिर्फ हिंदुओं तक सीमित नहीं, बल्कि अब बौद्ध और ईसाई समुदाय भी इसमें शामिल हैं।

ब्रिटेन : लंदन और लीसेस्टर में गुलाल की गूंज

लंदन, लीसेस्टर और बर्मिंघम में होली भारतीय संस्कृति का जीवंत प्रतीक बन चुकी है। यहां के प्रसिद्ध ट्राफलगर स्क्वायर और पार्कों में हजारों लोग रंगों के साथ झूमते नजर आते हैं। यहां भारतीय, पाकिस्तानी, नेपाली और ब्रिटिश नागरिक मिलकर रंग खेलते हैं। 'लंदन होली फेस्टिवल' में डीजे म्यूजिक, कथकली प्रस्तुति और देसी खाने के स्टॉल लगते हैं। यह पर्व ब्रिटेन में भारत की पहचान का खास उत्सव बन चुका है।

ऑस्ट्रेलिया : समुद्र तटों पर होली की उमंग

सिडनी और मेलबर्न में होली अब बीच फेस्टिवल का रूप ले चुकी है। सिडनी के पररामट्टा पार्क और मेलबर्न के फेडरेशन स्क्वायर में होली समुद्र तटीय उत्सव बन गई है। यहां रंगों के साथ लाइव कॉन्सर्ट और डांस पार्टियां आयोजित होती हैं। ऑस्ट्रेलियाई युवा इसे "इंडियन कलर पार्टी" कहते हैं, जिसमें बॉलीवुड बीट्स पर हजारों लोग झूमते हैं।

कनाडा : बहुसांस्कृतिक समाज में भारतीय रंग

टोरंटो के जेरार्ड स्ट्रीट और वैंकूवर के सरी इलाके और अन्य शहरों में होली प्रवासी भारतीयों के साथ अन्य समुदायों को भी जोड़ रही है। संगीत, बॉलीवुड नृत्य, भंगड़ा और रंगों के साथ यहां होली सामूहिक सौहार्द का संदेश देती है। यहां पंजाब मूल के लोग होली-दीवाली को अद्भुत अंदाज में मनाते हैं। बच्चों के लिए अलग रंग जोन, बुजुर्गों के लिए भजन मंडली और युवाओं के लिए डांस फ्लोर, यहां हर वर्ग होली पर्व को उल्लासित मन से मनाता है।

मॉरीशस : जहां होली है राष्ट्रीय उत्सव

मॉरीशस में होली राष्ट्रीय त्योहार जैसा मनाया जाता है। मॉरीशस में होली पोर्ट लुई, फ्लैक और त्रियोलेट में पारंपरिक पूजा के साथ मनाई जाती है। यहां सड़कों पर रंगों की बहार दिखाई देती है। भोजपुरी गीतों और पारंपरिक नृत्य के साथ होली आत्मीयता का प्रतीक बन चुकी है। कई स्कूलों में छुट्टी रहती है।

फिजी और सूरीनाम : विरासत की जीवंत स्मृति

फिजी और सूरीनाम में बसे भारतीय मूल के लोग होली को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़कर रखते हैं। यहां होली पारंपरिक पूजा, भजन और सामूहिक भोज के साथ खेली जाती है। यहां पर यह पर्व प्रवासी इतिहास की भावनात्मक याद और जीवंत स्मृति है। भारतीय मूल के लोग पारंपरिक ढोलक और चौताल के साथ होली मनाते हैं। यहां होली प्रवासी इतिहास की जीवंत स्मृति है।

जर्मनी और फ्रांस : यूरोप में रंगों का कार्निवल

बर्लिन, हैम्बर्ग और फ्रैंकफर्ट में होली डीजे फेस्टिवल का रूप ले चुकी है। 'Holi Open Air' जैसे आयोजनों ने यूरोप को भारतीय रंगों से परिचित कराया है। हजारों युवा डीजे म्यूजिक के साथ गुलाल उड़ाते हैं। यहां होली आधुनिक संगीत और भारतीय परंपरा का अनोखा संगम बन गई है। पेरिस के Parc de Sceaux सार्वजनिक पार्क में होली भारतीय दूतावास और सांस्कृतिक संगठनों द्वारा आयोजित होती है।

दक्षिण अफ्रीका : विविधता और समरसता का पर्व

डरबन और जोहान्सबर्ग में होली भारतीय समुदाय के साथ अफ्रीकी नागरिकों को भी जोड़ती है। यहां यह पर्व नस्लीय भेदभाव से ऊपर उठकर समानता का संदेश भी देता है। यहां होली नस्लीय सीमाओं को मिटाती है।

स्पेन : ला टोमाटीना

टमाटरों की प्रसिद्ध होली (ला टोमाटीना) मुख्य रूप से स्पेन के वेलेंशियाई शहर बुनोल में मनाई जाती है, जो अगस्त माह में होती है। स्पेन में यह त्योहार 1945 से मनाया जा रहा है, जहां लोग एक-दूसरे पर टमाटर फेंकते हैं। टमाटर को फेंकने से पहले मसलना जरूरी होता है, ताकि किसी को चोट न लगे। यह एक अंतरराष्ट्रीय त्योहार है। कोलंबिया के सुतामारचन में भी यह उत्सव मनाया जाता है। इसके अलावा, भारत में राजस्थान के डूंगरपुर के सागवाड़ा और डेंडोरवाड़ा में 100 साल से अधिक पुरानी टमाटर होली की परंपरा है।

इन देशों में भी खूब होती है रंगारंग होली की धूम

ब्राजील के रियो डी जेनेरो का कार्निवल नृत्य, रंग और संगीत का महासागर है। यहां शरीर नहीं, आत्मा नाचती है। मलेशियाई हिंदू अपने देश में इसे पारंपरिक रूप से मनाते हैं। सिंगापुर में हिंदू धर्म के अनुयायी होली के रंग खेलते हैं। पाकिस्तान के कुछ हिस्सों में जैसे सिंध और बलूचिस्तान में हिंदू समुदाय द्वारा होली को पारंपरिक रूप से मनाया जाता है। इंडोनेशिया में बड़ी मुस्लिम आबादी है, लेकिन यहां बाली जैसे हिंदू बहुल इलाकों में होली का उत्सव धूम-धाम से मनाया जाता है। यूएई और सउदी अरब में विविधता का सम्मान किया जाता है और यहां भारतीय हिंदू समुदाय के लोग होली खेलते हैं।

इन देशों में होली जैसा त्योहार मनाने की भी परंपरा

होली सिखाती है कि नफरत पर प्रेम, दूरी पर अपनापन और विभाजन पर उत्सव भारी है। शायद इसी वजह से, जब दुनिया थक जाती है संघर्षों से, तब भारत के रंग उसे फिर मुस्कराना सिखा देते हैं। यही होली की असली जीत है। यही भारत के सांस्कृतिक पर्व की शक्ति। कई देशों में होली जैसा त्योहार मनाने की भी परंपरा है। यहां विविध रूपों में अलग-अलग तरीकों से उत्सव मनाते हैं। इन देशों में होली जैसा त्योहार मनाने की परंपरा है।

कंबोडिया : चोल च्नाम थ्मे

कंबोडिया में होली जैसा त्योहार चोल च्नाम थ्मे (Chol Chnam Thmey) मनाया जाता है। इस मौके पर लोग पारंपरिक पोशाक पहनकर एक-दूसरे पर पानी डालते हैं, मंदिरों में प्रार्थना करते हैं और लोकनृत्य करते हैं। यह पर्व पुराने दुखों को धोकर नई शुरुआत का प्रतीक है। ठीक वैसे ही जैसे होली दिलों की सफाई करती है। यहां यह अप्रैल के मध्य में मनाया जाता है।

फिलीपींस : मास्कारा फेस्टिवल

मास्कारा (Masskara) त्योहार फिलीपींस के बैकोलोड शहर में हर साल अक्टूबर में होता है। इस त्योहार को "मुस्कान का त्योहार" भी कहा जाता है। यहां रंग चेहरे पर नहीं, बल्कि मुखौटों और पोशाकों में खिलते हैं। यह फिलीपींस के बड़े त्योहारों में से एक है। इसमें लोग रंगीन मुखौटे पहनकर सड़कों पर उतरते हैं और नृत्य, परेड और पार्टियां आदि करते हैं।

इटली : द ऑरेंज बैटल

इटली में भी भारत जैसा होली पर्व होता है, जिसे ऑरेंज बैटल (Battle of Oranges) कहा जाता है। फरवरी-मार्च के महीने में मनाए जाने वाले इस त्योहार में लोग आपस में रंग ही नहीं लगाते, बल्कि एक-दूसरे पर संतरे भी फेंकते हैं। यह होली की तरह सामूहिक उल्लास का प्रतीक है। कार्निवल ऑफ वेनिस भी वेनिस में आयोजित होने वाला एक अनोखा वार्षिक उत्सव है, जो अपनी रंग-बिरंगी वेशभूषा, राजसी परिधानों और मुखौटों के लिए दुनियाभर में प्रसिद्ध है। फरवरी-मार्च में आयोजित यह उत्सव कल्पना और रंगों की दुनिया रच देता है।

थाईलैंड : सोंगक्रान

अप्रैल में मनाया जाने वाला सोंगक्रान नववर्ष का प्रतीक है। लोग सड़कों पर पानी फेंकते हैं। यह आत्मशुद्धि और सौभाग्य का संकेत माना जाता है।

जापान : हनामी

टोक्यो में होली सीमित लेकिन बेहद सुसंस्कृत ढंग से मनाई जाती है। बसंत ऋतु में जापान सुंदर गुलाबी रंग के चेरी ब्लॉसम फूलों से ढक जाता है। इन दिनों प्राकृतिक खूबसूरती का जश्न मनाने के लिए ही यह त्योहार है। इसे चेरी ब्लॉसम फेस्टिवल भी कहा जाता है। जापानी में हनामी का मतलब होता है- फूल देखना। योग और ध्यान के साथ होली यहां आध्यात्मिक अनुभव बन जाती है।

भारत की होली और वैश्विक रंगोत्सव... हर सभ्यता ने अपने ढंग से बसंत का अभिनंदन किया है, कहीं पानी से, कहीं फूलों से, कहीं टमाटरों से तो कहीं संतरे बरसाकर। दुनिया के किसी भी कोने में जब लोग हंसते हुए रंग उछालते हैं, तब सीमाएं मिट जाती हैं। तब केवल मनुष्य बचता है। उल्लास से भरा हुआ, प्रेम से पगा हुआ। शायद यही कारण है कि ब्रज की होली आज वैश्विक उत्सव बन चुकी है। यह सिखाती है कि रंग अलग हो सकते हैं, पर खुशियां एक जैसी होती हैं। यही होली की शक्ति है और यही भारत की सांस्कृतिक सौगात।

रंग जो मर्यादा में खिले और संबंधों को गहरा करें।

राजसी होली का अनुशासित उल्लास

बलवंत राज मेहता, वरिष्ठ पत्रकार

राजस्थान के राजमहलों में होली केवल रंगों का उत्सव नहीं थी। यह अनुशासन और अपनत्व का अद्भुत संगम था। मेहरानगढ़ किला से सिटी पैलेस जयपुर और जूनागढ़ किला बीकानेर तक राजसी होली ने ठहाकों और परंपराओं के माध्यम से सामाजिक आत्मीयता को जीवित रखा। लघुचित्रों और फाग परंपरा में सजी यह विरासत आज भी रंग और राग के माध्यम से इतिहास को वर्तमान से जोड़ती है।

राजस्थान की राजसी होली केवल गरिमा और विधि-विधान का आयोजन भर नहीं थी, बल्कि उसमें रंग, राग और मजाक-मसखरी का भी खुला अवकाश रहता था। दरबार की मर्यादा के भीतर हंसी की ऐसी फुहार उड़ती कि किले की दीवारें भी जैसे मुस्कुरा उठें। बुजुर्गों की जुबान पर आज भी एक कहावत सुनाई देती है- 'होळी आवे, रंक-रावळा सब एक रंग पावे।' यानी होली के दिन ऊंच-नीच की दूरी भी रंग में घुल जाती है।

मेहरानगढ़ : फाग, ठहाके और होली चौक

जोधपुर के मेहरानगढ़ किले में होली चौक का दृश्य कुछ ऐसा होता कि गंभीर से गंभीर दरबारी भी मुस्कान रोक न पाते। 15वीं सदी में राव जोधा द्वारा स्थापित इस गढ़ में होली राजकीय उपस्थिति के साथ मनाई जाती थी। किले के भीतर निर्धारित होली चौक में दरबार सजता, और रंगोत्सव विधिवत प्रारंभ होता। परंपरा रही कि फाग गायकों विशेषकर लंगा और मंगणियार समुदाय को उस दिन खुलकर हंसी-ठिठोली करने की छूट मिलती। वे तत्काल रचे गए दोहों में दरबारियों के नाम जोड़ देते। कभी किसी की लंबी मूंछ पर चुटकी, तो कभी किसी की नई पगड़ी पर व्यंग्य। कहा जाता है कि यदि किसी ने रंग से बचने की कोशिश की, तो चंग की थाप के साथ गायक गा उठते- 'भागे रंग सूं जे, वो भागे भाग्य सूं भी।' और फिर पूरा चौक ठहाकों से गूंज उठता।

जनाना महल के झरोखों से रानियां यह दृश्य निहारतीं। भीतर से स्त्रियों का फाग गूंजता श्रृंगार और हास्य का सम्मिश्रण। यह केवल मनोरंजन नहीं था, वरन यह अपनत्व का संकेत था। होली के दिन यदि किसी दरबारी को रंग न लगाया जाए, तो उसे उपेक्षा समझा जाता। इसलिए लोग स्वयं आगे बढ़कर कहते, 'म्हांने भी रंग दो सा, आज तो होळी है!'

जयपुर : औपचारिकता में विनोद

सिटी पैलेस जयपुर में होली का स्वरूप औपचारिक था, पर उसमें भी विनोद का रंग कम न था। 18वीं सदी में महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा बसाए गए इस नगर में त्योहारों को राजकीय अनुशासन मिला। सिटी पैलेस के प्रांगण में होलिका-दहन के बाद रंगोत्सव होता।

दरबार में रंग-परिहास की एक रस्म निभाई जाती। प्रतीकात्मक रूप से महाराजा पर भी गुलाल लगाया जाता। यह संकेत था कि रंग सबको समान रूप से छूता है। लोक में कहा जाता- 'पाग रहे ऊंची, पर रंग सबने छूंची।'

जयपुर की लघुचित्र शैली में हाथियों पर सवार राजपरिवार के दृश्य मिलते हैं, जहां पिचकारियों से रंग की धार बहती है। कवियों और चारणों को छूट रहती कि वे हल्की-फुल्की चुटकी लें। किसी मंत्री के देर से आने पर दोहा बन जाता, किसी की नई पोशाक पर व्यंग्य। यह परिहास अपमान नहीं, बल्कि दरबार की आत्मीयता का प्रमाण था।

बीकानेर : शौर्य और हास्य का संगम

बीकानेर के जूनागढ़ किले में होली की मसखरी कुछ अलग रंग लिए होती। 16वीं सदी में राजा राय सिंह द्वारा निर्मित इस किले के अनूप महल में रंगोत्सव के दौरान वीर-रस और हास्य-रस साथ-साथ खिलते। लोकगायक फाग में शौर्य के साथ चुटीली पंक्तियां जोड़ देते। किसी की नई तलवार पर, तो किसी की सजधज पर। ढप और चंग की थाप पर सैनिक भी मुस्कान छिपा न पाते। यहां कहावत प्रचलित रही- 'बीकाणा री होळी, हंसी बिना अधूरी।'

मरुस्थल की पृष्ठभूमि में उड़ता केसरिया गुलाल, सजे-धजे हाथी और घोड़े। यह दृश्य केवल उत्सव नहीं, रियासत की जीवंतता का प्रमाण था।

रंग छुपाकर डालना : राजसी शरारत

राजसी होली में एक और रोचक परंपरा थी— रंग छुपाकर डालना। दरबारियों के बीच यह अनौपचारिक प्रतियोगिता रहती कि कौन पहले किसे रंग लगाए? कोई इत्र में भीगा गुलाल लेकर आता, तो कोई चांदी की पिचकारी में रंगीन जल। लेकिन सब कुछ मर्यादा की सीमा में। लोककंठ में गूंजता- 'होळी रो रंग, मन रो संग।' यानी रंग केवल देह पर नहीं, मन के संग लगे।

चित्रों में अमर शाही होली

रियासतकाल में होली के दृश्यों को लघुचित्रों में अत्यंत भव्यता से चित्रित किया गया। मेवाड़ और कोटा शैली के चित्रों में महाराणा हाथी पर सवार होकर रंग बरसाते दिखाई देते हैं। रनिवास की महिलाएं पीछे से पिचकारियां चलातीं। केसरिया और गुलाबी रंग की धाराएं चित्रों में स्थिर होकर भी गतिमान लगती हैं।

नाथद्वारा की पिछवाई चित्रशैली में श्रीनाथजी को राधा-कृष्ण के साथ फूलों की होली खेलते दर्शाया गया है। गुलाल के साथ पुष्पवृष्टि गुलाब, कचनार और केसर की पंखुड़ियां उत्सव को आध्यात्मिक आयाम देती हैं। मुगल लघुचित्रों में भी होली का उल्लेख मिलता है। अकबर और जहांगीर के रंग-अभिसार के दृश्य यह संकेत देते हैं कि रंग का उत्सव सांस्कृतिक समन्वय का भी प्रतीक रहा।

फाग : दरबार का लोकतंत्र

फाग गायकी में हास्य की विशेष भूमिका थी। गायक तत्काल रचे गए छंदों में दरबार के प्रसंग जोड़ देते। यह एक तरह का सांस्कृतिक लोकतंत्र था जहां राजा भी हंसी का पात्र बन सकता था। परिहास को अपमान नहीं, अपनत्व माना जाता। होली के दिन यदि किसी को रंग न लगाया जाए, तो उसे अलगाव समझा जाता। इसलिए लोग स्वयं आग्रह करते। यही कारण है कि राजसी होली में आनंद और अनुशासन का संतुलन बना रहता।

आज की स्मृति

- स्वतंत्रता के बाद शाही व्यवस्थाएं बदलीं, पर इन किलों में आयोजित प्रतीकात्मक होली आज भी उसी स्मृति को संजोए है। पर्यटक जब मेहरानगढ़, जयपुर या बीकानेर के आंगनों में रंगोत्सव देखते हैं, तो उन्हें केवल दृश्य नहीं, एक जीवित परंपरा की झलक मिलती है जहां गरिमा और गंवई हंसी साथ-साथ चलती थीं।
- राजसी होली का संदेश स्पष्ट था रंग केवल बाहरी नहीं, संबंधों का भी होता है। उस दिन दरबार में ऊंच-नीच का भेद कुछ पल को धुंधला पड़ जाता। लोककंठ में गूंजता रंग लागे राज में, तो राग जागे समाज में। आज भी यदि ध्यान से सुना जाए, तो इन किलों की हवाओं में चंग की थाप के साथ एक पुराना ठहाका सुनाई देता है। वह बताता है कि राजसी होली में रंग जितना गाढ़ा था, उतनी ही गहरी थी उसकी मुस्कान और उतना ही व्यापक था उसका अपनत्व।

डॉ. शोभा भंडारी कवि, लेखक

व्यवस्थापन गुरु है गृहस्वामिनी

आओ कोई अनुबंध नहीं किया, कोई प्रबंधन नहीं सीखा,
किसी भी व्यावसायिक संस्थान या प्रतिष्ठान से।
जो कुछ सीखा अपने अनुभवों से सीखा,
सीखा अपनी अनवरत लगन, परिश्रम और प्रतिबद्धता से।
सही अर्थों में व्यवस्थापन गुरु है गृहस्वामिनी,
निर्माता, निदेशक और नियंत्रक भी है,
संसाधनों की प्रभावी नियोजक भी है, और कार्य को
सफलतापूर्वक संपन्न करने वाली अभियांत्रिकी भी वो है।

भौतिकता और धनोपार्जन की दौड़ में हम,
गृहस्वामिनी का अमूल्य योगदान भूलते जा रहे हैं,
उसके अनूठे किरदार को नज़र अंदाज़ कर रहे हैं,
उसकी मेहनत और मशक्कत पर तंज कसने लगे हैं।
घर की समुचित व्यवस्था करने वाली,
हर छोटे-बड़े का ख़याल रखने वाली,
हर तकनीक और विज्ञान को समझने वाली,
गृहिणी की भूमिका का तिरस्कार करने लगे हैं।।

हकीकत तो ये है कि व्यवस्थापन के,
ऐसे अद्भुत संयोजन की शुरुआत,
गृहस्वामिनी के सुंदर घर की निर्मिति से होकर,
परिवार के समस्त सदस्यों की सफलता की,
पराकाष्ठा में परिलक्षित होती है,
उसके त्याग और समर्पण के परिदृश्य में झलकती है ।।।

वतन से दूर भी फीका नहीं पड़ता संस्कृति का रंग

सात समंदर पार खिलता फागुन

विदेशों में बसे भारतीयों के लिए होली केवल उत्सव नहीं, बल्कि अपनी पहचान और जड़ों से जुड़ाव का अवसर है। वतन से दूरी के बावजूद सामूहिक उत्सव अपनत्व को जीवित रखता है। समुदाय के साथ मनाई गई होली प्रवासियों के लिए स्मृति भी है और सांस्कृतिक निरंतरता का प्रमाण भी। फागुन के रंग सरहदों से परे भारतीयता की अनुभूति कराते हैं।

मधुलिका सिंह ✍ वरिष्ठ पत्रकार

भारत में होली केवल एक त्योहार नहीं, एक धड़कन है। फागुन की हवा में घुला गुलाल, गलियों में गूंजती हंसी- ठिठोली, ढोल की थाप पर थिरकते कदम, बच्चों से बुजुर्ग तक हर चेहरा रंगों में भीगा दिखाई देता है। इस दिन मान-मनुहार पिघल जाती है, दूरी मिट जाती है और रिश्ते फिर से खिल उठते हैं। लेकिन जो लोग सरहदों के पार, अपने वतन से दूर हैं, उनके लिए होली यादों की दस्तक लेकर आती है। आंगन की रौनक, मां के हाथों की गुझिया की मिठास, दोस्तों की शरारतें- सबकुछ जैसे आंखों के सामने तैर जाता है। फिर भी अपने देश और अपनों से दूरी के बावजूद त्योहार की गर्माहट कम नहीं होती। विदेशों में बसे भारतीय छोटे-छोटे समूहों में इकट्ठा होकर उसी अपनत्व, उसी उल्लास और उसी रंगत के साथ होली खेलते हैं, ताकि मिट्टी की खुशबू जिंदा रहे।

माल्टा (यूरोप) में होली के रंग।

महज त्योहार नहीं है होली

दुनिया के हर कोने में भारतीय समुदाय मौजूद है। काम, शिक्षा और बेहतर अवसरों की तलाश में गए ये लोग अपने साथ केवल सामान नहीं, अपनी संस्कृति भी लेकर गए। विदेशों में होली का स्वरूप भले थोड़ा बदला हो, लेकिन उसका मूल भाव वही है- मिलना, हंसना, रंगना और रंग जाना। वहां गली- मोहल्लों की जगह सोसायटी पार्क या कम्युनिटी हॉल होते हैं। पानी की होली सीमित होती है, लेकिन गुलाल का रंग उतना ही गाढ़ा होता है। सभी प्रवासी भारतीय अपनों और विदेशी दोस्तों के साथ होली के रंगों में सराबोर होते हैं। यह सिर्फ एक आयोजन नहीं, बल्कि पहचान का उत्सव बन जाता है।

देश बदला है संस्कृति और पहचान नहीं

यूरोप के छोटे से देश माल्टा में बसे भारतीयों के लिए होली अब एक बड़ा सामूहिक आयोजन बन चुकी है। यहां रहने वाले रजिस्टर्ड नर्स रोहित सिंह तंवर बताते हैं, 'मुझे होली खेलना बहुत पसंद है और खासतौर पर तब जब मैं भारत में अपने घर पर होता हूं। यार-दोस्तों के साथ बाहर होली खेलने जाना, जमकर रंग लगाना और डीजे की धुन पर थिरकना, ये कभी नहीं भूल सकता। माल्टा में भी रंगों का त्यौहार धूमधाम से मनाया जाता है। जहां हम प्रवासी भारतीय जमकर होली का आनंद लेते हैं। इस मौके पर कभी ऐसा लगा ही नहीं कि मैं भारत से बाहर हूं। यहां सभी एकजुट होकर रंगों के त्यौहार का जमकर लुत्फ उठाते हैं और माहौल को खास बना देते हैं।'

माल्टा में ही रहने वाले मनजीत सिंह बताते हैं, 'यहां होली पर माहौल ऐसा हो जाता है कि हमें लगता ही नहीं कि हम भारत से बाहर हैं। यहां प्रवासी भारतीय एक साथ मिलकर होली का त्यौहार पूरे जोश एवं उमंग के साथ मनाते हैं। डीजे की धुन पर थिरकते हैं और एक साथ मिलकर पूरा एन्जॉय करते हैं। सभी भारतीय परिवार इस आयोजन में सम्मिलित होकर एक साथ खुशनुमा माहौल में रंगों का पर्व मनाते हैं। यह हमारे लिए बहुत ही गर्व की बात है कि हमारा पर्व विदेश में भी सिरमौर बना हुआ है।'

मनजीत सिंह

होली का अलग ही क्रेज

अरूण गौड़

यूरोप के माल्टा में रहने वाले अरूण गौड़ बताते हैं- 'दीपावली के बाद मुझे सबसे ज्यादा क्रेज होली का रहता है। भारत की होली की बात अलग है लेकिन यहां भी होली जरूर खेलते हैं। होली की तैयारियां हम पहले से ही करने लग जाते हैं। यहां पर एक साथ होली खेली जाती है, सभी एक-दूसरे के साथ पूरे सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में होली खेलते हैं और होने वाले सभी आयोजनों में भागीदारी निभाते हैं। छोटे बच्चे भी पीछे नहीं रहते। यहां की होली मेरे लिए विशेष रहती है। झूमते-नाचते-गाते होली का त्यौहार यहां का विशेष आकर्षण है।'

ललित कुमार नागदा

इसी तरह ललित कुमार नागदा कहते हैं, 'होली पर घर की याद तो आती है लेकिन यहां होने वाले खास आयोजन से हमारी कमी दूर हो जाती है। हमारे साथ यहां के लोग भी रंग में रंग जाते हैं और ये लोग भी जमकर होली खेलते हैं। वाकई में यहां की होली खास ही रहती है। सभी दोस्त एवं परिवारजन एक साथ होली खेलने का आनंद उठाते हैं।'

सिंगापुर में होली की धमाल

दिव्या सिंघल

सिंगापुर में कस्टमर सक्सेस मैनेजर दिव्या सिंघल कहती हैं, 'जब भी होली आती है तो हमें घर की याद जरूर आती है। वो म्यूजिक की मस्ती पर झूमना और एक-दूसरे को रंग लगाकर पानी की होली खेलना आज भी जेहन में बसा हुआ है। फिलहाल यहां चार साल से सिंगापुर में रहने के बाद जब भी होली आती है तो यहां की सोसायटी द्वारा होली का पर्व धूमधाम से मनाया जाता है। कई भारतीय परिवार एक साथ इकट्ठा होते हैं और एक-दूसरे को रंग लगाकर होली की बधाई देते हैं। बच्चे भी इस माहौल में पीछे नहीं रहते। हमारे साथ स्थानीय लोग भी होली का आनंद लेते हैं। सामूहिक रूप से होली का पर्व मनाने से यह हमारे लिए बहुत ही रोचक और विशेष पर्व बना हुआ है।'

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत में शामिल कराने के प्रयास

दीपावली के बाद अब रंगों के पर्व होली को भी यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) सूची में शामिल कराने की दिशा में प्रयास तेज हुए हैं। यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल होना किसी भी परंपरा के लिए वैश्विक मान्यता का प्रतीक माना जाता है। संस्कृति मंत्रालय द्वारा इसके लिए जरूरी दस्तावेज तैयार किए जा रहे हैं। इनमें होली के अवसर पर देश के विभिन्न हिस्सों में गाए जाने वाले फाग लोकगीत, पारंपरिक रीति-रिवाज और सामुदायिक सहभागिता को भी शामिल करने की योजना है। यदि यह प्रस्ताव स्वीकृत होता है, तो होली को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक धरोहर के रूप में नई पहचान मिलेगी।

अच्छी लड़कियां

▪ पद्मजा शर्मा, वरिष्ठ साहित्यकार

तब मना था लड़कियों का जोर से हंसना, मैं नहीं हंसी
पैर घसीट कर चलने वाली, खुलकर हंसने वाली
सीढ़ियों से धड़धड़ाते हुए उतरने वाली, बड़ों से सवाल करने वाली
नए खिलौनों- कपड़ों के लिए मचलने वाली लड़कियां
अच्छी नहीं कहलाती थीं उन दिनों
और मैं बनना चाहती थी अच्छी लड़की
मां बाप की निगाहों में प्यारी सच्ची बच्ची
इसलिए कभी नहीं खेली नए खिलौनों से
दिवाली पर नहीं छुड़ाए पटाखे, होली पर बनने वाली मिठाई
सबसे पहले कभी नहीं खाई, इस सब पर पहला हक रखता था भाई
भाई अक्सर तोड़ दिया करता था, मेरा बनाया मिट्टी का घर
मैं आज भी बना रही हूं घर, पर बनता नहीं
कोई अदृश्य भाई अड़ा देता है टांग
अच्छी लड़कियों के साथ, यही होता आया है अक्सर
जो लड़कियां बुरा बनने से नहीं घबराईं, वे निकल गई समय से आगे
और अच्छी लड़कियां पांवों में पहने पायल, आज भी वहीं हैं जहां थीं कल
और कल भी वहीं मिलेंगी खूंटे से बंधी गाय- सी सीधी
पिंजरे में बंद तोते- सी उदास
गले में जंजीर डाले पालतू कुत्ते- सी वफादार अच्छी लड़कियां
अच्छी लड़कियां कल की तरह आज भी आंखों में भरे आंसू
लकड़ियों वाले चूल्हों पर पका रही हैं रोटियां
जिनमें झुलस रहे हैं उनके मासूम सपने
अपने अधूरे सपनों की राख लिए अच्छी लड़कियां
खड़ी हैं घर की दहलीजों पर गोधूली बेला में यही सोचते हुए
कि बस अब और नहीं बनना अच्छी लड़कियां

ooo

आपने लड़की का नाम बदला, आपने लड़की का गांव बदला
आपने लड़की का रिश्ता बदला, आपने लड़की का काम बदला
क्यों हैरान हैं अब, जब लड़की बदल रही है

ooo

लहरों का किनारों से टकराना, टकराकर फिर लौट आना
लौट लौटकर फिर फिर टकराना, टकराकर फिर लहराना
यूं पड़ता है लड़की को अपना अस्तित्व बचाना

ooo

वो मुझे पंख देता है, पर उड़ने को होती हूं तो क़तर देता है
वो मुझे जबान देता है, पर बोलने को होती हूं तो काट देता है
वो मुझे पांव देता है, पर चलने को होती हूं तो रोक देता है
ऐसा ही होता है जब आपके निर्णय कोई और लेता है
मैंने तय कर लिया है, मैं दूसरे के पंखों से नहीं
अपने पंखों से उड़ान भरूंगी, अपने पांवों से आगे बढ़ूंगी
अपनी जबान से अपनी बात आप कहूंगी
क्या हुआ धीरे- धीरे रुक- रुक के कहूंगी
लेकिन अपने निर्णय आप लूंगी।

महिलाओं की होली जहां उत्सव स्त्री की अभिव्यक्ति बन जाता है

परंपरा, पंखुड़ियां और पहचान

राजस्थान की होली रंगों का उत्सव भर नहीं बल्कि लोकजीवन परंपरा और स्त्री अभिव्यक्ति का जीवंत रूप है। पारंपरिक उत्सवों से आधुनिक रूपों तक महिलाएं रचनात्मकता और सामाजिक जागरूकता से होली को नए अर्थ दे रही हैं।

राखी सोनी, पत्रकार

राजस्थान की होली केवल रंगों का उत्सव नहीं, बल्कि लोकजीवन, परंपरा, सामूहिकता और स्त्री-अभिव्यक्ति का जीवंत संगम है। सदियों पुरानी कोड़ामार, ढूंढ और मरु होली जैसी परंपराएं आज भी जीवित हैं, वहीं फूलों की होली, इको-फ्रेंडली रंग, ड्राई होली और डिजिटल उत्सव जैसे आधुनिक रूप भी तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। महिलाओं की रचनात्मक भागीदारी ने इस पर्व को नई पहचान दी है जहां संस्कृति, आत्मविश्वास और सामाजिक जागरूकता रंगों के साथ खिल उठती है। गुलाल और अबीर से आगे बढ़कर होली ने गीत, नृत्य, हास्य व्यंग्य, लोकरीतियों और सामाजिक संवाद के रूप में एक व्यापक सांस्कृतिक स्वरूप ग्रहण किया है। यही संगम राजस्थान की महिलाओं की होली को विशेष बनाता है।

साहस और उत्साह की प्रतीक कोड़ामार होली

भीलवाड़ा और शाहपुरा क्षेत्र में मनाई जाने वाली कोड़ामार होली एक अनोखी और रोचक लोक परंपरा है। इस उत्सव में महिलाएं कपड़े या रस्सी से बने प्रतीकात्मक 'कोड़े' लेकर पुरुषों को हल्के-फुल्के अंदाज में मारती हैं, जबकि पुरुष रंग लगाने का प्रयास करते हैं। यह पूरा आयोजन हंसी-मजाक, फाग गीतों और ढोलक की थाप के बीच संपन्न होता है। इस परंपरा का उद्देश्य किसी प्रकार की हिंसा नहीं, बल्कि सामाजिक संवाद और आनंद की अभिव्यक्ति है। ग्रामीण परिवेश में यह उत्सव महिलाओं को खुलकर भाग लेने और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का अवसर देता है। इसे नारी-साहस और आत्मविश्वास का प्रतीक माना जाता है।

लोकगीतों में सजी परंपरा फाग और ढूंढ

मारवाड़ क्षेत्र में फाग और ढूंढ की परंपरा विशेष महत्व रखती है। फाग के दौरान महिलाएं समूह में एकत्र होकर पारंपरिक लोकगीत गाती हैं। इन गीतों में हास्य, व्यंग्य, प्रेम और सामाजिक संदेशों का सुंदर समावेश होता है। ढोलक और मंजीरे की मधुर धुन पर गाए जाने वाले ये गीत वातावरण को उल्लासमय बना देते हैं। 'ढूंढ' की रस्म विशेष रूप से छोटे बच्चों के लिए की जाती है। इसमें मंगलगीत गाकर बच्चों की रक्षा का आशीर्वाद दिया जाता है। यह परंपरा मातृत्व, संरक्षण और सामूहिक जिम्मेदारी का प्रतीक है।

फाग और ढूंढ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता के प्रतीक हैं। इन आयोजनों में महिलाएं एक-दूसरे के साथ समय बिताती हैं, अनुभव साझा करती हैं और रिश्तों को मजबूत बनाती हैं।

उदयपुर की शाही होली परंपरा और गरिमा

उदयपुर में शाही होली राजसी परंपराओं से जुड़ी हुई है। विशेष रूप से सिटी पैलेस परिसर में होलिका दहन और अन्य अनुष्ठान बड़े धूमधाम से किए जाते हैं। महिलाएं पारंपरिक राजस्थानी परिधान पहनकर लोकगीत गाती हैं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेती हैं। यह उत्सव मेवाड़ की गौरवशाली परंपरा को दर्शाता है। शाही होली में अनुशासन, गरिमा और सांस्कृतिक समृद्धि का विशेष ध्यान रखा जाता है। यहां की होली केवल रंगों तक सीमित नहीं, बल्कि इतिहास और विरासत का प्रतीक है।

बदलते समय में महिलाओं की होली... समय के साथ समाज में अनेक परिवर्तन आए हैं। शिक्षा, शहरीकरण, तकनीकी विकास और महिलाओं की बढ़ती आत्मनिर्भरता ने उत्सव मनाने के तरीकों को भी प्रभावित किया है। आज की होली पारंपरिक आंगन तक सीमित नहीं रही, बल्कि नए आयामों के साथ विस्तृत हो गई है।

किटी पार्टी के जरिए फूलों की होली... आजकल महिलाएं छोटी-छोटी किटी पार्टियों के माध्यम से भी होली मना रही हैं। सोसाइटी, क्लब या घरों में 10–20 महिलाओं का समूह इकट्ठा होता है। यहां गुलाल की जगह फूलों की होली खेली जाती है। गुलाब, गेंदा और अन्य सुगंधित फूलों की पंखुड़ियां एक-दूसरे पर डालकर उत्सव मनाया जाता है। थीम आधारित सजावट, रंग-बिरंगे दुपट्टे और पारंपरिक परिधान इस आयोजन को विशेष बनाते हैं। साथ में खेल, नृत्य और होली के पारंपरिक व्यंजन जैसे गुजिया, दही बड़े और मालपुआ भी शामिल रहते हैं। महिलाएं अपनी पसंद से कार्यक्रम की रूपरेखा तय करती हैं और स्वतंत्र रूप से आनंद लेती हैं।

कार्यस्थल पर प्रोफेशनल होली... आज की कामकाजी महिलाएं दफ्तरों और कॉरपोरेट क्षेत्रों में भी सीमित और सादगीपूर्ण होली मनाती हैं। 'ड्राई होली' का प्रचलन यहां अधिक है। एथनिक डे और सांस्कृतिक प्रस्तुतियां आयोजित की जाती हैं। टीम-बिल्डिंग गतिविधियां और होली मिलन समारोह कार्यस्थल के वातावरण को सकारात्मक बनाते हैं। इससे सहकर्मियों के बीच आपसी संबंध मजबूत होते हैं।

डिजिटल होली और सोशल मीडिया... डिजिटल युग में होली मनाने के तरीके भी बदल गए हैं। महिलाएं सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी खुशियां साझा करती हैं। इंस्टाग्राम रील्स, लाइव वीडियो, फोटोशूट और ऑनलाइन शुभकामनाएं अब आम हो चुकी हैं। दूर रहने वाले परिवार और मित्रों के साथ वीडियो कॉल के जरिए होली मनाई जाती है। डिजिटल कार्ड और संदेशों के माध्यम से शुभकामनाएं भेजी जाती हैं।

गेर और रम्मत उत्सव में लोकनाट्य का रंग

बीकानेर की होली में गेर और रम्मत प्रमुख आकर्षण हैं, जो इस उत्सव को विशिष्ट पहचान देते हैं। गेर में पारंपरिक वेशभूषा पहने लोग ढोल-नगाड़ों की गूंज के साथ जुलूस निकालते हैं। रंग, उमंग और सामूहिक नृत्य का यह दृश्य पूरे शहर को उत्साह से भर देता है। वहीं रम्मत लोकनाट्य की जीवंत परंपरा है, जिसमें सामाजिक व्यंग्य, पौराणिक कथाएं और समसामयिक मुद्दों को हास्यपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया जाता है। महिलाएं लोकगीतों और नृत्य से कार्यक्रम को जीवंत बनाती हैं तथा मंचन में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। गेर और रम्मत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक जागरूकता का माध्यम भी हैं। ये परंपराएं राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को सहेजते हुए होली को सामूहिक उल्लास का उत्सव बना देती हैं। बीकानेर की डोलची मार होली 500 वर्ष पुरानी परंपरा है, जिसकी शुरुआत दो समुदायों के बीच पुरानी दुश्मनी समाप्त कर सौहार्द स्थापित करने के उद्देश्य से हुई थी।

इको-फ्रेंडली और ऑर्गेनिक होली... पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ने के साथ महिलाएं अब हर्बल और प्राकृतिक रंगों का उपयोग कर रही हैं। घर पर हल्दी, चुकंदर, पालक और सूखे फूलों से रंग तैयार किए जाते हैं। इससे त्वचा को नुकसान नहीं होता और पर्यावरण भी सुरक्षित रहता है। पानी की बचत के लिए कई स्थानों पर 'ड्राई होली' मनाने का चलन बढ़ रहा है।

फार्म IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विषयों से संबंधित विवरणों के बारे में घोषणा

1. **प्रकाशन स्थल** :	जोधपुर
2. **प्रकाशन अवधि** :	मासिक
3. **मुद्रक का नाम** :	पूनम अस्थाना
क्या भारतीय नागरिक है:	हाँ
पता :	डी 435, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर
4. **प्रकाशक का नाम** :	पूनम अस्थाना
क्या भारतीय नागरिक है :	हाँ
पता :	डी 435, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर
5. **सम्पादक का नाम** :	अजय अस्थाना
क्या भारतीय नागरिक है :	हाँ
पता :	डी 435, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर
6. उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचारपत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी का एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार या भागीदार हो।	मे. मारवाड़ मीडिया प्लस

मैं पूनम अस्थाना एतद् द्वारा घोषित करती हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण में सत्य है।

हस्ताक्षर
पूनम अस्थाना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

सिर्फ नाम का सवाल है बाबा!!

अतुल कनक, वरिष्ठ साहित्यकार

नेता जी चिंतित थे। उन्हें जनता की या लोकतंत्र की चिन्ता नहीं थी। अपनी चिन्ता थी। इतने सालों की आजादी ने जनता को इतना तो समझदार कर ही दिया है कि वो अपनी चिन्ता खुद कर सके। फिर नेताजी जनता की चिन्ता क्यों करें? जनता कौन सी उनकी चिन्ता करती है? जब चाहती है, उन्हें चुनाव में हरा देती है। फिर खाली जनता की चिन्ता करने से क्या हो जाएगा? आजकल तो आलाकमान का रवैया भी अजीब सा हो गया है। जब भी मन में किसी बड़ी कुर्सी की आशा जागती है, कोई नया चेहरा ढूंढ लाता है। अब नेताजी ने इतने सालों तक तालियां केवल इसलिए थोड़े ही बजाई हैं कि अंत में हाथ मलते रह जाएं।

उधर कुछ अजीब नाम वाली फाइलों की चर्चा है। कहते हैं कि दुनिया के बड़े बड़े नेताओं के नाम इस फाइल में हैं। लेकिन नेताजी के नाम का कोई जिक्र ही नहीं है। नेताजी ने ऐसे दिन पहले कभी नहीं देखे थे। जो समारोह कभी उनकी अध्यक्षता के बिना हो ही नहीं सकते थे, आजकल उन समारोहों का निमंत्रण-पत्र तक नेताजी के पास नहीं आता। ऐसी नेतागिरी से क्या फायदा? इन्हीं नेताजी ने राशन का सामान लेने वालों की सूची में अपने कई रिश्तेदारों का नाम जुड़वाया है, इलाके की वोटर लिस्ट में कई फर्जी नाम जुड़वाए हैं और सरकारी समारोहों में सम्मानित होने वाले लोगों की सूची में अपने माली के साले तक का नाम जुड़वाया है। आज हालत यह हो गई कि जिस फाइल में बड़े बड़े नेताओं के नामों और कारनामों का जिक्र है, उस फाइल में इनके नाम का उल्लेख तक नहीं।

नेताजी सोच रहे हैं कि क्या करें? क्या न करें? क्या आलाकमान से फोन करवाएं या अपने कुछ चमचों को खर्चा- पानी देकर इस बात पर एक आंदोलन छिड़वा दें कि फाइल में हमारे नेताजी का नाम भी शामिल होना चाहिए। माना कि फाइल में लोगों की काली करतूतें हैं, लेकिन उतने बड़े लोगों के साथ खड़े होने के लिए यदि एकाध काली करतूत से नाम जुड़ भी जाए तो क्या फर्क पड़ता है? कल ही उन्हें रमिया ने ताना मारा कि क्या नेताजी आप के बस में तो ऐसी करतूत करना भी संभव नहीं है कि आप बदनाम हो जाएं।

नेताजी मन मार कर रह गए। कहना तो चाहते थे कि इतने बरसों से तेरे साथ जो कर रहा हूं, वो काली करतूत नहीं है तो क्या है? लेकिन कुछ सोच कर चुप रह गए। वो रमिया की नाराजगी अफोर्ड नहीं कर सकते थे। रमिया ने उन्हें क्या क्या दिया है और क्या क्या दिलवाया है, यह बात सामने आ जाए तो लोग उस विदेशी फाइल को भूल जाएंगे, जिसकी चर्चा सारी दुनिया कर रही है। रमिया कौन है, आपके मन में यह सवाल उठा होगा। छोड़िये, आप इस बात को जानकर क्या करेंगे? रमिया वो छमिया है, जो नेताजी के लिए उर्वशी भी है और मेनका भी।

रमिया तो एक नाम भर है। नेताजी के जीवन में ऐसे कई चेहरे हैं। आखिर उन्होंने नेतागिरी की है, कोई भाड़ नहीं झौंकी। लेकिन अब उस विदेशी फाइल के चर्चे उनका मुंह चिढ़ा रहे हैं। वो सोच रहे हैं कि फाइल में नाम जुड़ाने के लिए क्या किया जाए? कुछ दिन पहले उन्होंने अपने प्रिय ज्योतिष से बात की थी। ज्योतिष ने बताया था कि अब सूर्य पर राहू की नज़र है और चंद्रमा अष्टम भाव में है। प्रतिष्ठा की हानि होगी और मन उदास होगा। क्या यही कारण है कि दुनिया के बड़े बड़े नेताओं के साथ एक फाइल में उनका नाम नहीं आया? तो क्या वो ग्रह शांति करवाएं? या कोई अनुष्ठान करवाएं? एक बड़ा सा अनुष्ठान करवा लेंगे तो लोगों से चंदा अगाने का बहाना भी मिलेगा। लेकिन चंदा देगा कौन? जब से उनकी कुर्सी गई है, लोग नमस्कार का जवाब देने तक में कतराने लगे हैं, चंदा देने कौन आएगा?

वो हैरान हैं। परेशान भी। एक बदनाम फाइल में उन्हें अपना नाम जुड़वाना है। वो दुनिया और रमिया, दोनों को दिखाना चाहते हैं कि वो भी बड़े नेता हैं। उन पर भी दुनिया भर के मीडिया की नज़रें टिकी रहती हैं। वो भी कुछ करते हैं तो चर्चा होता है। क्या नेताजी का नाम उस बदनाम फाइल में जुड़वाने के लिए आप कुछ मदद कर सकते हैं?

'आह! फागुन.. वाह! फागुन'

अरविंद तिवारी, वरिष्ठ साहित्यकार

यह फागुन का महीना बड़ा बड़ा निगोड़ा है। हर कामिनी, इस महीने में रूप का दंभ छोड़ देती है! आंखों की पिचकारियों से कई एपस्टीन फाइलें खुल जाती हैं। लोग ट्रंप को भूलकर वृंदावन चले जाते हैं। ब्रजवासियों का दावा है, एक बार फागुन में ट्रंप को वृंदावन बुला लो, सारा टैरिफ धरा का धरा रह जाएगा। होली के बाद उन्हें कच्छा बनियान में अमेरिका के लिए विदा करो। विश्व की यह धरा ट्रंप के आतंक से मुक्त हो जाएगी। होली पर हुरियार उन्हें ऐसा नोबल प्राइज देंगे कि वे सरप्राइज्ड हो जाएंगे! दरअसल एपस्टीन की फाइलें वृंदावन की होली के बिना रंगीन बन ही नहीं सकतीं। पक्ष और विपक्ष के नेताओं को वृंदावन लाकर होली खिलवा दें। संसद का सारा गतिरोध दूर हो जाएगा। जिनके घर होली खेलने के लिए जीवन साथी नहीं है, उन्हें बरसाने की लठ्ठमार होली में ले आओ, देश तरक्की करने करेगा।

सियासत में सारा लफड़ा होली खेलने वाली के न होने की वजह से है। संसद में बोलते समय यदि होली याद रहेगी, तो बहस शालीन हो जाएगी। किताब की सियासत को छोड़कर प्रेम की सियासत शुरू हो जाएगी। बस एक पंक्ति याद रहेगी, होली खेलन आयो श्याम, आजु जाहे रंग में बोरो री! जो नेता कुंआरे हैं या पत्नी होते हुए भी अकेले हुरियारे हैं, उन्हें बरसाने में गोपियों से पिटवा दो। यह बहुत जरूरी है, क्योंकि जीवन साथी विहीन नेताओं को होली में शामिल किए बिना देश आगे नहीं बढ़ सकता। शादीशुदा नेता घर में ही होली नहीं खेल पाता, बरसाने में कैसे खेल पाएगा। चाहे अमेरिका से समझौता कर लो, चाहे यूरोप से होली खेले बिना सब अधूरा है। कुछ लोग फागुन में हुए समझौतों को होली का हुड़दंग ही समझते हैं। सरकार के बयानों पर भरोसा नहीं कर पा रहे। उन्हें लगता है, सरकार के मंत्री प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिए मजाक रहे हैं!

फागुन क्या है, पूरे महीने का वेलेंटाइन ही तो है। रोज रंग खेलो और गालियां झेलो। जब कोई नेता कहता है, मुझे संसद में गलियां दी गईं तो पब्लिक सीरियस नहीं होती। यार! फागुन में आपको गालियां नहीं देंगे तो क्या नवरात्रे में देंगे? फागुन ऐसा रसभरा मेहमान है, जो एक माह तक दिल धड़काता रहता है और बड़ी शिद्दत से भारतवासियों के घर में डेरा डाले रहता है। एक सौ पचास करोड़ देशवासी जैसे तैसे गुजर बसर करते हैं, ऊपर से ये मुआ फागुन! इसकी खातिरदारी न करो तो लोग संस्कृति सभ्यता भूलने की तोहमत जड़ देते हैं। जब हम अमेरिका को साधने में घाटा उठा लेते हैं, तो फागुन तो आपका अपना है। सदियों से बिला नागा आता रहा है। तुम्हारे आम के बागों को बौर और टेसू को फूल देकर ही गया है। अगर पांच दस हजार इस महीने में ज्यादा खर्च हो जाएंगे तो आसमान नहीं टूट पड़ेगा। तुम होली के उल्लास को फिर साल भर याद रखोगे। माना हर साल तुम्हें ढोलक मजीरे और चंग की मरम्मत करवानी पड़ती है मगर यह भी सोचो, ये वाद्ययंत्र फागुन में तुम्हारे हुलसने से ही तो खराब हुए थे। ऐसी मस्ती देता है फागुन की ढोलक तक टूट जाती है। फिर भी फाग गाना नहीं छोड़ते लोग। फटी ढोलक पर फागुनी गीत गाना, उल्लसित हुए बिना संभव नहीं है। कड़की में फागुन कुछ ज्यादा ही मजा देता है।

यह सच है फागुन विरह भी लाता है। जिनके पिया परदेस में होते हैं वे आह! फागुन बोलती हैं। कई बार हाय! फागुन बोलती हैं। इधर के दिनों में पति से खपा पत्नी फागुन के दिनों में नीला ड्रम खरीद लेती है। बहाना रंग घोलने का होता है। पर वह इस ड्रम का उपयोग संगीन अपराध करने में नहीं करती, केवल पति को डराने के लिए खरीद लेती है। वह पति से चैट करते हुए लिखती है, फागुन में तुम नहीं आए तो मैं नीला ड्रम खरीद लूंगी। पति तुरंत घर लौट आता है।

बजट को लेकर अपने फागुन को खराब मत करो। बजट कितना भी भारी हो, फागुन तुम्हें हल्का ही रखेगा। इस बार तो सोना और चांदी तक ग्राहकों से होली खेल रहे हैं। फागुन में इनका उतार चढ़ाव इनके प्रति विरक्ति पैदा करता है। विरक्ति का रास्ता मुक्ति की ओर जाता है। फागुन सबको मुक्त करता है। कई बार तो उनको भी मुक्त कर देता है, जो अभी मुक्ति नहीं चाहते। वे फागुन के सौजन्य से उम्र भर रसिया रहना चाहते हैं। कितनी भी शालीनता आप रखें, फागुन आपको उच्छृंखल बना ही देगा।

ग्रहों की चाल

विपुल डोभाल, ज्योतिष, पीठाधीश्वर।
श्री शनिधाम आश्रम, विकासनगर देहरादून
ईमेल : vipravaani@gmail.com
मोबाइल : 9928424374

मेष

मेष राशि के जातक किसी भी प्रकार का रिस्क लेने से बचें। खासकर अपने मान सम्मान के प्रति थोड़ा सतर्क रहें। कोई भी विवाद कोर्ट कचहरी तक पहुंच सकता है। चर्म रोग और श्वास से संबंधित रोगों के प्रति सतर्क रहें। आकस्मिक खर्च आपको परेशान कर सकते हैं। आय के साधन भी बाधित होते दिखाई दे रहे हैं। प्रॉपर्टी या वाहन से संबंधित निर्णय लेना शुभ रहेगा।

वृषभ

वृषभ राशि के जातकों के लिए यह समय धन हानि का है। जमा पूंजी को सहेज कर रखें। कार्यस्थल पर व्यर्थ का तनाव हो सकता है। अधिकारियों और अधीनस्थों से व्यर्थ ना उलझें। यह महीना आय से अधिक व्यय करने वाला है। वाहन और प्रॉपर्टी की खरीद में बाधाएं रहेंगी। संतान के स्वास्थ्य को लेकर कुछ चिंता बनती दिखाई दे रही है। विदेश जाने की तैयारी कर रहे जातकों के लिए समय अनुकूल है।

मिथुन

दूरगामी यात्राओं के योग बन रहे हैं। मान सम्मान पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होती दिखाई दे रही है। हालांकि भाग्य का प्रतिशत बहुत ज्यादा साथ नहीं दे रहा है किंतु कठिन परिश्रम से आप अपने कार्यों को साधने में सक्षम रहेंगे। संक्रामक रोगों के प्रति सतर्कता आवश्यक है। चोट एक्सीडेंट या सर्जरी के योग बन सकते हैं, अतः सतर्कता बरतें।

कर्क

कर्क राशि के जातकों के लिए यह महीना भाग्य वृद्धि कारक दिखाई दे रहा है। अनेक रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। व्यापार से जुड़े लोगों को लाभ प्राप्त होगा, विशेष रूप से जो लोग कंस्ट्रक्शन मैटेरियल तथा पेय पदार्थ में व्यापार करते हैं। वाणी पर नियंत्रण रखें अन्यथा अपने बने बनाए काम बिगाड़ सकते हैं। विदेश यात्रा प्लान कर रहे हैं तो यह समय उत्तम है। स्वास्थ्य को लेकर सतर्कता आवश्यक है। वहां चला कर दूरगामी यात्राएं एवं रात्रि यात्राएं ना करें।

सिंह

दांपत्य जीवन में तनाव की स्थिति बनती दिखाई दे रही है। जल्दबाजी में लिए गए निर्णय नुकसानदायक साबित हो सकते हैं। आय के साधन प्रभावित होते दिखाई दे रहे हैं। प्रेम संबंधों के लिए यह समय बिल्कुल अनुकूल नहीं है। कमर और निचले हिस्सों में रोग चोट इत्यादि का भय है। संतान को लेकर कुछ शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। पानी जितना अधिक हो सके पीने की कोशिश करें, अन्यथा यूरिनल ट्रैक इन्फेक्शन या किडनी में पत्थर की समस्या हो सकती है।

कन्या

सभी कार्य बाधित दिखाई दे रहे हैं। धन के मामले में कोई बड़ा रिस्क ना लें। बिना सोचे किसी पर भी विश्वास करना आपके लिए घातक हो सकता है। कर्मचारियों के लिए यह समय गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहने का है। आय में बढ़ोतरी होती दिखाई दे रही है किंतु उस धन को व्यवस्थित रूप से संजोए रखने में आपको दिक्कत होगी। भाग्य साथ देता नहीं दिख रहा है। प्रॉपर्टी का लेनदेन इस महीने टाल दे तो अच्छा रहेगा।

तुला

संतान को लेकर चिंता बनती दिखाई दे रही है। स्वयं के स्वास्थ्य को लेकर भी आपको सतर्क रहना होगा। पेट नाभि के आसपास के हिस्सों में तकलीफ रह सकती है। भाग्य का प्रतिशत कम दिखाई पड़ रहा है लेकिन अपने परिश्रम से आप कार्यों को साधने में सफल हो सकते हैं। कार्य या व्यापार के सिलसिले में दूरगामी यात्राएं होती दिख रही हैं। खर्च इनकम से ज्यादा होते दिख रहे हैं।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि के जातकों को इस महीने प्रॉपर्टी की खरीद फरोख्त से बचना चाहिए। वाहन बहुत ध्यानपूर्वक चलाएं। छाती से संबंधित रोग परेशान कर सकते हैं। कोलेस्ट्रॉल की जांच करना अच्छा रहेगा। हृदय रोगियों को थोड़ी सतर्कता रखना की आवश्यकता रहेगी। यात्राएं हो सकती हैं। संतान को लेकर थोड़ी चिंता दिखाई दे रही है। महीने का उत्तरार्ध बेहतर होता दिखाई दे रहा है।

धनु

भाई बहनों के साथ संबंधों में कड़वाहट आ सकती है। हो सके तो किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति से बचना चाहिए। दाहिने कान में समस्या हो सकती है। पहले से रोग झेल रहे व्यक्तियों को इस माह तकलीफ बढ़ सकती है। थोड़ी भागदौड़ होती दिखाई दे रही है लेकिन उसका फल आपके लिए शुभ होता दिखाई दे रहा है। दंपति एक दूसरे के प्रति थोड़ा मृदु रहें तो भाग्य वृद्धि संभव है।

मकर

मकर राशि के जातकों के लिए यह महीना कुटुंबीय तनाव उत्पन्न करता दिखाई दे रहा है। खर्च अनियंत्रित होते दिखाई दे रहे हैं। सर के आसपास चोट लगने का भय है। वाहन चलाते समय सतर्कता बरतें। व्यर्थ के विवादों से बचाव रखें तो आने वाला समय लाभदायक रहेगा। पत्नी के लिए समय भाग्य वृद्धि कारक है और उनकी तरफ से कुछ शुभ समाचार प्राप्त होंगे। ननिहाल पक्ष से मिलना जुलना होगा और कुछ लाभ भी प्राप्त हो सकता है। नेत्र दोष के प्रति सतर्क रहें।

कुंभ

कुंभ राशि के जातकों के लिए यह समय मन को व्यथित रखने वाला है। अत्यधिक सोच विचार आपका तनाव बढ़ा सकता है। बच्चों को माथे पर या आंख के आसपास निशान देने वाली चोट लग सकती है अतः सतर्कता बरतें। व्यावसायिक कारणों से कुटुंब से बाहर जाना पड़ सकता है। संतान के अध्ययन को लेकर कुछ चिंता बनती दिखाई दे रही है। सर्दी जुकाम और फेफड़ों के रोगों से तकलीफ हो सकती है।

मीन

मीन राशि के जातकों के लिए समय अनुकूल दिखाई दे रहा है। नौकरी में उन्नति या धन लाभ प्राप्त होता दिख रहा है। संतान को लेकर शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। सबकुछ होते हुए भी मन उदास रह सकता है। शनि का गोचर शुभ कार्य में विलंब कर सकता है। किंतु अंततः कार्य बनते हुए दिखाई दे रहे हैं। सर दर्द या माइग्रेन के पीड़ितों को तकलीफ बढ़ सकती है। शत्रु परास्त होते दिखाई दे रहे हैं।

5 ग्रहों की युति... 5 ग्रहों की युति सभी राशियों पर भारी पड़ती दिखाई दे रही है। इसके अतिरिक्त विश्व में कूटनीतिक उठापटक बहुत तीव्र हो सकती है। आतंकी घटनाओं के साथ-साथ प्राकृतिक आपदाओं का भी संयोग बन रहा है। विभिन्न राष्ट्रों के मध्य तनाव अपने चरम पर पहुंच सकता है। सोने और हल्दी के भाव में उछाल रहने की संभावना रहेगी।

AYUSHI
BUILDCON PVT. LTD.

AYUSHI
BUILDERS & DEVELOPERS

221-222, Shyam Nagar, Pal Link Road, Jodhpur - 342 003 (Raj.)
Tel. : 0291-2710071 Mobile : 94141 27593, 93147 11416
E-mail : mdsharma74@live.in

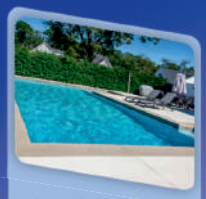

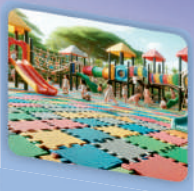

FILL THE NATURE, OPEN SPACE, AND LIVE IN LUXURIOUS LIFE
Promoted by
SRS Build Ventures LLP
SAI AASHIYANA
3 BHK DUPLEX PREMIUM VILLAS
RERA REGISTERED RAJ/P/2024/3127 rera.rajasthan.gov.in
JDA APPROVED
PRICE STARTING FROM 75* LACK
पांच लाख तक का फर्निचर फ्री*
SWIMMING POOL
SONA BATH
GYM
GRADEN AREA & JOGGING TRACK
CLUB HOUSE
TEMPLE
KIDS PLAY ZONE
Sai Aashiyana
NS Design
श्री नंदू शाह
डायरेक्टर- सांई आशियाना शिकारगढ़
मंत्री- जोधपुर माहेश्वरी समाज जोधपुर
श्रीमती सीमा पंवार
डायरेक्टर- सांई आशियाना शिकारगढ़
Terms & Conditions Apply*
Near by : Vidhya Aashram School | Delhi Public School | Jodhpur Airport | Mini Market Circle | Indana Hotel | Ratanada Circle
SRS Build Ventures LLP
A-101, Sanjivani Aananda, Manji Ka Hatha, Paota, Jodhpur (Raj.) Ph. +91 0291-4077312
Loan Available From All Leading Banks
72299 77443